सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 99, नई दिल्ली, बुधवार 18 जून 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अगर मेहनत को आदत बना लिया जाए तो कामयाबी मुकद्दर बन जाती है।

03 भाजपा सरकार ने 33 आयुष्मान आरोग्य मंदिरों को आरम्भ किया

06 भारत की महिला योद्धाओं की अनकही कहानी

08 भविष्य बताने वाले, वर्तमान से बेख़बर क्यों

परिवहन विशेष के मुख्य संपादक और टोलवा ट्रस्ट की महासचिव पहुंचे झारखंड

परिवहन विशेष के झारखंड कार्यालय व टोलवा ट्रस्ट द्वारा शुरू होने वाले नये हॉस्पिटल का लिया जायजा

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। परिवहन विशेष हिंदी दैनिक समाचार पत्र के मुख्य संपादक संजय बाटला ने झारखंड में नया कार्यालय खोलने को लेकर झारखण्ड में कार्यरत संवादाताओं से मुलाकात की और वहां के बारे मे जायजा लिया। साथ ही टोलवा ट्रस्ट द्वारा वहां आने वाले समय में शुरू किये जाने वाले हॉस्पिटल के प्रॉजेक्ट की जानकारी प्राप्त की। हॉस्पिटल से संबंधित सभी तथ्यों की जानकारी हेतु टोलवा ट्रस्ट की महासचिव पिंकी कुंडू भी दिल्ली से रांची पहुंची।

महासचिव ने बताया कि रांची से कुछ दुरी पर टेम्पल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट (टोलवा ट्रस्ट) 28 एकड़ में वहां की जनता को उच्च स्तरीय स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध कराने के उद्देश्यों से (आल इंडिया इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंस) के समान हॉस्पिटल खोलने की झारखंड सरकार से अनुमति प्राप्त कर के जल्दी ही श्रीगणेश करेगी। उनका कहना है की इस हॉस्पिटल के खुलने से ना सिर्फ झारखंड की जनता अपितु बिहार और बंगाल की जनता को भी फायदा पहुंचेगा और उच्च स्तरीय स्वास्थ्य सेवा फ्री प्राप्त होगी।

परिवहन विशेष के मुख्य संपादक संजय बाटला ने महासचिव पिंकी कुंडू के साथ उस जगह का दौरा भी किया, जहां हॉस्पिटल खुल रहा है।

संपादक द्वारा बताया गया कि टोलवा ट्रस्ट के इस कार्य को पूरा करने के लिए विशेष न्यूज ट्रांसपोर्ट लिमिटेड और परिवहन विशेष समाचार पत्र से जो भी मदद होगी वह करेंगे क्योंकि यह एक सामाजिक हित का अच्छा प्रोजेक्ट है।

2050 तक भारत में वाहनों की संख्या हो जाएगी दोगुनी, सबसे ज्यादा होंगे इस श्रेणी के वाहन

एक अध्ययन के अनुसार भारत में वाहनों की संख्या 2050 तक दोगुनी हो जाएगी जिसमें दोपहिया वाहनों का प्रभुत्व रहेगा। निजी कारों की संख्या में भी वृद्धि होगी। उत्तरी और पश्चिमी राज्यों में वाहनों की संख्या में अधिक वृद्धि होने की संभावना है खासकर उत्तर प्रदेश में। अध्ययन में हरित ईंधन और इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली : देशभर में वाहनों की संख्या 2050 तक दोगुने से अधिक हो जाएगी। 2023 में 22.6 करोड़ के मुकाबले ये संख्या बढ़कर 2050 तक करीब 50 करोड़ हो जाएगी।

यह जानकारी काउंसिल ऑन एनर्जी, एनवायरनमेंट एंड वाटर (सीईईडब्ल्यू) की ओर से जारी नए अध्ययनों की एक श्रृंखला से सामने आई है। इन अध्ययनों के अनुसार, दोपहिया वाहनों की संख्या सर्वाधिक रहेगी।

2050 तक अपेक्षित जीडीपी और जनसंख्या वृद्धि पर आधारित सामान्य परिस्थिति परिदृश्य के अनुसार, 2050 तक सभी वाहनों का लगभग 70 प्रतिशत यानी 35 करोड़ से अधिक दोपहिया होंगे।

निजी कारों की संख्या भी तीन गुना बढ़ने का अनुमान

निजी कारों की संख्या भी लगभग तीन गुना बढ़ने का अनुमान है, जो सदी के मध्य तक नौ करोड़ तक पहुंच जाएगी। सीईईडब्ल्यू के अध्ययन देश की वाहन संख्या, कुल स्वामित्व लागत और परिवहन ईंधन मांग के बारे में अपनी तरह का पहला जिला-स्तरीय अनुमान उपलब्ध कराते हैं।

देश की वाहन संख्या में अधिकांश वृद्धि उत्तरी और पश्चिमी राज्यों में केंद्रित रहेगी। अकेले उत्तर प्रदेश में नौ करोड़ से अधिक वाहन होंगे।

बिहार, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और गुजरात भी प्रमुख वृद्धि की स्थिति में हैं, जबकि दक्षिणी राज्यों में कम जनसंख्या स्तर के कारण एक ठहराव दिखाई देगा।

दिल्ली, बेंगलुरु, ठाणे, पुणे आदि में अधिक होंगे वाहन

दिल्ली, बेंगलुरु, ठाणे, पुणे और अहमदाबाद जैसे नगरीय और उपनगरीय क्षेत्र आगे रहेंगे, जहां 2050 में भारत की कुल अनुमानित वाहन संख्या के 10 प्रतिशत वाहन होंगे।

अध्ययनों के अनुसार, 2024 में मध्यम और भारी वाहनों के लिए इलेक्ट्रिक वाहन अभी भी डीजल, सीएनजी या एलएनजी से अधिक महंगे हैं।

ग्रीन फ्यूल में प्रगति नहीं हुई तो 2040 में अधिक होगी डीजल की मांग

उम्मीद है कि 2040 तक एलएनजी बसों और ट्रकों के लिए सबसे सस्ता ईंधन विकल्प बनी रहेगी। इसलिए भारी माल वाहन श्रेणियों में ईवी और ग्रीन हाइड्रोजन जैसे हरित ईंधनों को बड़े पैमाने पर उपयोग में लाने के लिए लक्षित रूप से शोध एवं विकास करने, सहायक बुनियादी ढांचा तैयार करने और लागत घटाने की जरूरत होगी।

इलेक्ट्रिफिकेशन, बुनियादी ढांचे और ग्रीन फ्यूल में तत्काल प्रगति नहीं होने पर डीजल 2040 के दशक तक भारत के सड़क परिवहन ईंधन की मांग में प्रमुख रहेगा।

उत्सर्जन घटाने और परिवर्तन को रफ्तार देने के लिए, भारत को बस और ट्रक श्रेणियों में इलेक्ट्रिक और एलएनजी वाहनों को तेजी से अपनाने को प्राथमिकता देनी चाहिए, जिनकी 2050 में परिवहन से जुड़े उत्सर्जन में लगभग 70 प्रतिशत हिस्सेदारी होगी।

बैटरी निर्माण के लिए शोध और निवेश पर देना होगा ध्यान

इसके साथ, लागत घटाने के लिए बैटरी निर्माण के लिए घरेलू शोध एवं विकास में निवेश करने पर भी ध्यान देना होगा।

सीईईडब्ल्यू के विशेषज्ञ हेमंत माल्या व डा हिमानी जैन अध्ययन के अनुसार स्वच्छ परिवहन की दिशा में बदलाव को तेज करने के लिए, भारत को अलग-अलग वाहनों से जुड़े आंकड़ों को विशेष रूप से वाहन पोर्टल के माध्यम से - मजबूत करना चाहिए और जिला-स्तरीय सूचना में कमी को दूर करना चाहिए।

सार्वजनिक बैंकों और एनबीएफसी के जरिए बैटरी वित्तपोषण माडल जैसे किराए पर या ईएमआई के साथ, ईवी को किफायती बनाना बहुत जरूरी है।

दिल्लीवालों के लिए गुड न्यूज, अगले एक साल में जमीन पर उतरेगी ये बड़ी परियोजनाएं

दिल्ली में भाजपा सरकार ने फ्लाईओवर और अंडरपास के निर्माण की दिशा में कदम बढ़ाया है। सरकार ने ITO चौक शादीपुर डिपो चौराहा सोनिया विहार और डीबी गुप्ता रोड पर फ्लाईओवर और अंडरपास बनाने के लिए व्यवहार्यता अध्ययन शुरू कर दिया है। इन परियोजनाओं से यातायात व्यवस्था सुधरेगी और जनता को जाम से मुक्ति मिलेगी।

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी की सरकार ढांचा के विकास के मामले में जिन परियोजनाओं को 10 साल में भी आगे बढ़ाने की हिम्मत नहीं जुटा पाई, यहां तक कि उनका व्यवहार्यता अध्ययन भी नहीं करा सकी, दिल्ली में सत्तासीन होने पर भाजपा कर रेखा गुप्ता सरकार ने तीन माह में ही इसे पूरा कर दिखाया है।

सरकार के निर्देश पर लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) ने तत्परता दिखाते हुए चार बड़ी परियोजनाओं पर काम शुरू करने के लिए व्यवहार्यता अध्ययन के लिए टेंडर जारी कर दिया है। इनमें पहाड़गंज क्षेत्र से गुजरने वाले देश बंधु गुप्ता रोड लालबती पर फ्लाईओवर का निर्माण, सोनिया विहार में छह किलोमीटर लंबे एलिवेटेड कॉरिडोर, शादीपुर में अंडरपास व आईटीओ चौक पर फ्लाईओवर के निर्माण की परियोजना शामिल है।सरकार की योजना एक साल के अंदर इन्हें जमीन पर उतार देने की है। व्यवहार्यता अध्ययन पूरा होने के बाद एक विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार किया जाएगा, जिसे मंजूरी के लिए सरकार के पास भेजा जाएगा। सलाहकार कंपनी योजना के क्रियान्वयन में आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक स्तर को ध्यान में रखते हुए योजना का लागत-लाभ विश्लेषण भी करेगी। अध्ययन में बिजली, पानी और दूरसंचार की भूमिगत और ऊपर से गुजर रहीं लाइनों, पेड़ों के स्थान और स्मारकों पार्कों और अन्य संवेदनशील क्षेत्रों के विवरण की पहचान की जाएगी। कंपनी किसी भी एक कार्य दिवस पर 14 घंटे के लिए सभी श्रेणियों के वाहनों के लिए वर्गीकृत यातायात संख्या गणना सर्वेक्षण करेगी, जिसमें चौराहों पर वाहनों के वर्गीकरण के साथ सड़क के सभी मोड़ की आवाजाही दिखाई जाएगी।

डीबी गुप्ता रोड पर बनेगा फ्लाईओवर

पहाड़गंज इलाके से गुजरने वाले देश बंधु (डीबी) गुप्ता रोड पर एक फ्लाईओवर का काम शुरू करने जा रहा है। अप्रैल में मुख्य सचिव ने इस भीड़भाड़ कम करने के प्रस्तावों पर चर्चा करने के लिए पीडब्ल्यूडी अधिकारियों के साथ बैठक की थी। डीबी गुप्ता रोड पर व्यस्त समय में अक्सर जाम रहता है, दिन के अन्य समय में भी धीमी गति से चलने वाले वाहनों के कारण भारी भीड़भाड़ रहती है। दरअसल यह सड़क पहाड़गंज, अजमेरी गेट, झंडेवालान और करोल बाग जैसे भारी यातायात वाले इलाकों से होकर गुजरती है।

इस परियोजना में सात किलोमीटर के मार्ग पर सात यातायात सिग्नल पर सड़क यातायात के वाहनों की संख्या का अध्ययन भी शामिल है। फैज रोड से मिलिट्री रोड से अजमेरी गेट चौक तक सड़क के हिस्से का भी सर्वेक्षण किया जाएगा, ताकि यह पता लगाया जा सके कि सड़क को चौड़ा करने के लिए क्या कदम उठाए जा सकते हैं।

सोनिया विहार में छह किलोमीटर लंबा एलिवेटेड कॉरिडोर

दिल्ली सरकार उत्तर-पूर्वी दिल्ली के सोनिया विहार में छह किलोमीटर लंबा एलिवेटेड कारिडोर बनाकर इस पूरे इलाके कर दशा बदलने जा रही है।सरकार के निर्देश पर तत्परता दिखाते हुए इस कारिडोर को बनाने के लिए व्यवहार्यता अध्ययन के लिए विभाग ने टेंडर जारी कर दिए हैं। यह ऐसी परियोजना है जिससे जितना दिल्ली के लोगों को लाभ होगा, उतना ही ट्रोनिया सिटी की तरफ के उत्तर प्रदेश के लोगों को भी लाभ मिल सकेगा। सोनिया विहार पुश्ता पर जाम की समस्या का निराकरण भी हो जाएगा। इसे नानकसर गुरुद्वारा टी-प्वाइंट से दिल्ली-उत्तर प्रदेश सीमा (ट्रानिका सिटी) तक बनाए जाने की योजना है व्यवहार्यता अध्ययन पर करीब डेढ़ करोड़ की राशि खर्च की जाएगी।

आईटीओ चौक पर बनेगा फ्लाईओवर

अगर सभी कुछ ठीक-ठाक रहा तो आने वाले समय में आइटीओ चौराहे पर लोगों को जाम से निजात मिल सकेगी।14 साल बाद ही सही दिल्ली की सता में आई भाजपा सरकार ने आईटीओ चौराहे को जाम मुक्त करने के लिए मन बना लिया है। सरकार के निर्देश पर लोक निर्माण विभाग ने तत्परता दिखाते हुए इस परियोजना के लिए व्यवहार्यता अध्ययन की प्रक्रिया शुरू करा दी है। जिसमें यह पता किया जा सकेगा कि यहां पर फ्लाईओवर किस तरह बनाया जा सकेगा।व्यवहार्यता अध्ययन पर करीब दो करोड़ की राशि खर्च की जाएगी।

शादीपुर डिपो चौराहे पर बनेगा अंडरपास

शादीपुर में यातायात की आवाजाही में सुधार के लिए शादीपुर डिपो चौराहे पर अंडरपास का निर्माण किया जाएगा। पश्चिमी दिल्ली के शादीपुर डिपो चौराहे पर भारी यातायात रहता है, जिसके कारण अक्सर जाम की स्थिति बनी रहती है। दिल्ली मेट्रो लाइन भी इस क्षेत्र से होकर गुजरती है। अध्ययन करने के लिए जिस एजेंसी को नियुक्त किया जाएगा, उसे एक साल के भीतर काम पूरा करना होगा और विस्तृत ग्राफिक्स और लेआउट प्लान के साथ अपनी रिपोर्ट देनी होगी।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

मौलिक अधिकारों के साथ नागरिकों के कर्तव्य: समाज की सुरक्षा और सुंदरता की ओर एक जिम्मेदार पहल

डॉ. अंकुर शरण

मौलिक अधिकारों की चर्चा करते समय अक्सर हम स्वतंत्रता, समानता और अभिव्यक्ति के अधिकारों पर जोर देते हैं, लेकिन शायद ही कभी हम यह सोचते हैं कि इन अधिकारों के साथ कुछ मूलभूत कर्तव्य भी जुड़े हैं। "पार्यावरण पाठशाला" के माध्यम से एक नई जनजागरूकता पहल शुरू की गई है, जिसमें नागरिकों को न केवल उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया जा रहा है, बल्कि समाज के प्रति उनके उत्तरदायित्वों की भी याद दिलाई जा रही है। यह अभियान समाज की सुरक्षा, स्वच्छता और सुंदरता के लिए सामूहिक चेतना जगाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

संविधान के अनुच्छेद 51(क) में वर्णित नागरिक कर्तव्यों को आज के संदर्भ में व्यावहारिक रूप से लागू करने की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक महसूस की जा रही है। प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा, सार्वजनिक संपत्तियों की देखभाल, सामाजिक समरसता बनाए रखना और प्रदूषण को रोकने में सहयोग देना — ये सभी ऐसे कदम हैं जो हर नागरिक को स्वयं से उठाने चाहिए। पार्यावरण पाठशाला के आयोजकों ने यह स्पष्ट किया कि जब तक नागरिक अपने दायित्वों के प्रति ईमानदार नहीं होंगे, तब तक अधिकारों की रक्षा अधूरी ही रहेगी।

समाज की सुरक्षा की दृष्टि से भी नागरिकों की भूमिका बेहद अहम है। ट्रैफिक नियमों का पालन, नाबालिगों को वाहन चलाने से रोकना, और किसी भी संदिग्ध गतिविधि की जानकारी प्रशासन को देना — ये ऐसे कर्तव्य हैं जो सीधे तौर पर जीवन की सुरक्षा से जुड़े हैं। इनकी उपेक्षा केवल कानून का उल्लंघन ही नहीं बल्कि समाज के प्रति हमारी लापरवाही को भी दर्शाती है।

वहीं समाज की सुंदरता बनाए रखने में भी हर व्यक्ति की सक्रिय भूमिका होनी चाहिए। अपने घर और मोहल्ले की स्वच्छता बनाए रखना, सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी न फैलाना, वृक्षारोपण करना, और दीवारों पर थूकने या पोस्टर चिपकाने से परहेज़ करना जैसे छोटे लेकिन महत्वपूर्ण प्रयास समाज की छवि को निखार सकते हैं। पर्यावरण की रक्षा केवल सरकारी योजनाओं का विषय नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक की व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी है।

पार्यावरण पाठशाला के इस जनजागरूकता अभियान का मूल संदेश यही है कि जहाँ अधिकार होते हैं, वहाँ कर्तव्य भी होने चाहिए। जहाँ स्वतंत्रता है, वहाँ ज़िम्मेदारी का निर्वहन आवश्यक है। एक आदर्श समाज का निर्माण तभी संभव है जब हर नागरिक न केवल अपने अधिकारों की रक्षा करे, बल्कि समाज और पर्यावरण के प्रति अपने कर्तव्यों को भी उतनी ही गंभीरता से निभाए। यह अभियान हर नागरिक को यह याद दिलाता है कि एक स्वच्छ, सुरक्षित और सुंदर समाज की नींव जिम्मेदार नागरिकता से ही रखी जा सकती है।

PHE एजुकेशन ट्रस्ट के तत्वावधान में, समाजसेवा के प्रेरणादायी कार्यों को मिलेगा सम्मान।

जो व्यक्ति या सामाजिक संगठन समाज के उत्थान हेतु सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं, उन्हें PHE एजुकेशन ट्रस्ट की ओर से सम्मानित किया जाएगा।

डॉ. अंकुर शरण, ट्रस्ट के सलाहकार एवं ग्लोबल कन्फेडरेशन ऑफ़ एनजीओज़ के सह-संस्थापक, इन प्रेरणादायी कहानियों को विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, मीडिया चैनलों व विशेष प्रोजेक्ट्स के माध्यम से प्रस्तुत करेंगे।

आइए, मिलकर सराहें और प्रेरणा बनें!

indiangreenbuddy@gmail.com

वैष्णों देवी मंदिर के तर्ज पर बना है दिल्ली का गुफा वाला मंदिर, आप भी कर आएं दर्शन

दिल्ली के प्रीत विहार स्थित गुफा वाला मंदिर है। जहां पर मां वैष्णों देवी गुफा की तर्ज पर मंदिर की गुफा बनाई गई है। इसकी लंबाई 140 फीट है। ऐसे में इस गुफा से होकर माता के पिंडी दर्शन करने वाले भक्तों को वैष्णों देवी की गुफा का अनुभव होता है।

दिल्ली में कई फेमस और प्राचीन मंदिर है। जिनको लेकर भक्तों में काफी आस्था और मान्यताएं हैं। दिल्ली में कालकाजी मंदिर और छतरपुर मंदिर के अलावा अन्य कई मंदिर हैं। दिल्ली के प्रीत विहार स्थित गुफा वाला मंदिर है। जहां पर मां वैष्णों देवी गुफा की तर्ज पर मंदिर की गुफा बनाई गई है। इसकी लंबाई 140 फीट है। ऐसे में इस गुफा से होकर माता के पिंडी दर्शन करने वाले भक्तों को वैष्णों देवी की गुफा का अनुभव होता है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको दिल्ली के प्रीत विहार स्थित गुफा वाले मंदिर के बारे में बताने जा रहे हैं।

प्रीत विहार गुफा मंदिर की खासियत

इस मंदिर का नाम गुफा मंदिर रखा गया है। क्योंकि इस मंदिर के रास्ते गुफानुमा है। इस गुफा की लंबाई 140 फीट है। इस मंदिर में आपको मां के दर्शन पिंडी रूप में होता है। इस मंदिर में आने के बाद आपको वैष्णों देवी मंदिर का एहसास होगा।

इस मंदिर में वैष्णों देवी मंदिर की तरह भैरव बाबा के भी दर्शन होंगे। इस मंदिर का निर्माण साल 1987 में हुआ था। आसपास के लोगों के आपसी सहयोग से यह मंदिर बनकर तैयार हुआ है।

प्रीत विहार गुफा मंदिर दिल्ली के प्रसिद्ध माता मंदिरों में से एक हैं। इस मंदिर में साल 1997 से लगातार अखंड ज्योति जल रही है। बताया जाता है कि इस मंदिर की जोत ज्वाला देवी मंदिर से लाई गई ज्योत से प्रज्वलित की गई थी। तब से अब तक यहां पर अखंड ज्योति जल रही है।

इस मंदिर में आप एक साथ 12 ज्योतिर्लिंगों के दर्शन कर सकेंगे। वहीं इस मंदिर में आपको 111 शिवलिंग के दर्शन-पूजन का सौभाग्य प्राप्त होगा।

मन्नत वाला पेड़

इस मंदिर में आपको एक मन्नत वाला पेड़ भी देखने को मिलेगा। जहां पर लोग मन्नत की चुनरी बांधते हैं और जब मनोकामना पूरी हो जाती है, तो इस चुनरी को खोल देते हैं। इस मंदिर में सुबह 5 बजे से मां का 16 फूलों का श्रृंगार किया जाता है।

कब खुलता है मंदिर

बता दें कि नवरात्रि के दौरान मंदिर सुबह 5 बजे से रात 12 बजे तक खुला रहता है। वहीं सामान्य दिनों में सुबह 5 बजे से दोपहर 12 बजे तक और फिर शाम 4 बजे से रात 9 बजे तक खुला रहता है।

26 जून से प्रारंभ होंगे आषाढ़ गुप्त नवरात्रि

ज्योतिषाचार्य डा. अनीष व्यास ने बताया कि नवरात्रि का पावन त्योहार आदिशक्ति मां दुर्गा को समर्पित माना गया है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, साल भर में कुल चार नवरात्रि आते हैं। जिसमें से दो चैत्र व शारदीय और दो गुप्त नवरात्रि होती हैं।

हिंदू पंचांग के अनुसार पहली गुप्त नवरात्रि आषाढ़ शुक्ल पक्ष प्रतिपदा से नवमी तिथि तक मनाई जाती है। इस वर्ष आषाढ़ गुप्त नवरात्रि 26 जून से प्रारंभ हो रही है। इस गुप्त नवरात्री के अवसर पर 10 महाविद्याओं की पूजा की जाती है। यह समय महाकाली एवं भगवान शिव यानी कि शाक्त और शैव की पूजा करने वालों के लिए विशेष माना जाता है। तंत्र साधक इस दौरान विशेष साधनाएं करते हैं। पाल बालाजी ज्योतिष संस्थान जयपुर जोधपुर के निदेशक ज्योतिषाचार्य डा. अनीष व्यास ने बताया कि इस वर्ष आषाढ़ गुप्त नवरात्रि इस साल 26 जून से आषाढ़ गुप्त नवरात्रि की शुरुआत हो रही है और 4 जुलाई को समापन होगा। इन नवरात्रों में 10 महाविद्याओं की पूजा करने का विशेष विधान शास्त्रों में बताया गया है। इस दौरान तंत्र विद्या का विशेष महत्व है। गुप्त नवरात्रि में दस महाविद्याओं की पूजा-अर्चना की जाती है। इसी कारण गुप्त नवरात्रि का पर्व हर कोई नहीं मनाता है। इस समय की गई साधना जन्मकुंडली के समस्त दोषों को दूर करने वाली तथा चारों पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और कोक्ष को देने वाली होती है। इसका सबसे महत्वपूर्ण समय मध्य रात्रि से सूर्योदय तक अधिक प्रभावशाली बताया गया है। आषाढ़ माह में पड़ने वाली नवरात्रि को भी गुप्त नवरात्रि कहा जाता है। इस दौरान प्रतिपदा से लेकर नवमी तक मां दुर्गा के नौ रूपों की पूजा-अर्चना की जाती है। गुप्त नवरात्रि में साधक महाविद्याओं के लिए खास साधना करते हैं।

ज्योतिषाचार्य डा. अनीष व्यास ने बताया कि नवरात्रि का पावन त्योहार आदिशक्ति मां दुर्गा को समर्पित माना गया है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, साल भर में कुल चार नवरात्रि आते हैं। जिसमें से दो चैत्र व शारदीय और दो गुप्त नवरात्रि होती हैं। आषाढ़ मास में पड़ने वाले नवरात्रि को आषाढ़ गुप्त नवरात्रि कहा जाता है। गुप्त नवरात्रि में 10 महाविद्याओं मां काली, तारा देवी, त्रिपुर सुंदरी, भुवनेश्वरी, माता छिन्नमस्ता, त्रिपुर भैरवी, मां धुम्रावती, मां बंगलामुखी, मातंगी और कमला देवी की पूजा की जाती है।

आषाढ़ गुप्त नवरात्रि तिथि

ज्योतिषाचार्य डा. अनीष व्यास ने बताया कि वैदिक पंचांग के अनुसार गुरुवार 25 जून को शाम 04 बजे से आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि शुरू होगी। सनातन धर्म में उदया तिथि मान है। इसके लिए 26 जून से गुप्त नवरात्र की शुरुआत होगी। वहीं, आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि का समापन 26 जून को दोपहर 01:24 मिनट पर होगा।

आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा तिथि प्रारंभः बुधवार, 25 जून 2025 को शाम 04:00 बजे

प्रतिपदा तिथि समापनः गुरुवार 26 जून 2025 को दोपहर 01:24 बजे

उदया तिथि में आषाढ़ गुप्त नवरात्रिः गुरुवार, 26 जून 2025

आषाढ़ नवरात्रि घट स्थापना

भविष्यवक्ता और कुण्डली विश्लेषक डा. अनीष व्यास ने बताया कि प्रतिपदा तिथि में घट स्थापना यानी मां के आवाहन से ही नवरात्रि का अनुष्ठान शुरू होता है। इस साल घट स्थापना का शुभ मुहूर्त द्वि स्वभाव वाले मिथुन लग्न के दौरान है।

मिथुन लग्न प्रारंभः 26 जून 2025 को सुबह 04:33 बजे

मिथुन लग्न समापनः 26 जून 2025 को सुबह 06:05 बजे तक

कलश स्थापना मुहूर्तः सुबह 4.33 बजे से 6.05 बजे तक (कुल 1 घंटा 32 मिनट की अवधि)

घटस्थापना अभिजित मुहूर्तः सुबह 10:58 बजे से 11:53 बजे तक

अवधिः 00 घण्टे 55 मिनट

शुभ योग

भविष्यवक्ता और कुण्डली विश्लेषक डा. अनीष व्यास ने बताया कि गुप्त नवरात्र के पहले दिन यानी घटस्थापना तिथि पर ध्रुव योग का संयोग बन रहा है। इसके साथ ही सर्वार्थ सिद्धि योग का भी संयोग है। इन योग में मां दुर्गा की पूजा करने से साधक की हर मनोकामना पूरी होगी। साथ ही जीवन में सुखों का आगमन होगा।

ध्रुव योगः रात 11:40 बजे तक

सर्वार्थ सिद्धि योगः सुबह 08:46 बजे से 27 जून को सुबह 05:35 बजे तक

10 महाविद्याओं की साधना

भविष्यवक्ता और कुण्डली विश्लेषक डा. अनीष व्यास ने बताया कि गुप्त नवरात्रि में मां दुर्गा के नौ स्वरूपों के साथ दस महाविद्या की भी पूजा की जाती है।

मां काली मां तारा मां त्रिपुर सुंदरी मां भुवनेश्वरी मां छिन्नमस्ता मां त्रिपुर भैरवी मां धूमावती मां बगलामुखी मां मातंगी मां कमला

गुप्त नवरात्रि की तिथियां

प्रतिपदा तिथि- घटस्थापना और मां शैलपुत्री की पूजा
द्वितीया तिथि - मां ब्रह्मचारिणी पूजा
तृतीया तिथि - मां चंद्रघंटा की पूजा
चतुर्थी तिथि - मां कूष्मांडा की पूजा
पंचमी तिथि - मां स्कंदमाता की पूजा
षष्ठी तिथि - मां कात्यायनी की पूजा
सप्तमी तिथि - मां कालरात्रि की पूजा
अष्टमी तिथि - मां महागौरी की पूजा
नवमी तिथि - मां सिद्धिदात्री की पूजा
दशमी- नवरात्रि का पारण

गुप्त नवरात्रि में करते हैं विशेष साधना

भविष्यवक्ता और कुण्डली विश्लेषक डा. अनीष व्यास ने बताया कि आषाढ़ की गुप्त नवरात्रि का तंत्र-मंत्र और सिद्धि-साधना के लिए विशेष महत्व होता है। ऐसी मान्यता है कि तंत्र मंत्र की सिद्धि के लिए इस समय की गई साधना शीघ्र फलदायी होती है। इस नवरात्रि में मां काली, तारा देवी, त्रिपुर सुंदरी, भुवनेश्वरी, माता छिन्नमस्ता, त्रिपुर भैरवी, माँ धूमावती, माँ बगलामुखी, मातंगी और कमला देवी की पूजा की जाती है।

निस्वार्थ प्रेम की कोशिश भी जा सकती है मगर वह केवल मानसिक/बौद्धिक ही रहेगी। मन तो केवल समस्या पर जोर देता है।

हम मन को समझने की जगह, मन द्वारा उत्पन्न की गयी समस्याओं में अपने को खपाते रहते हैं। क्या बिना हृदय की सहायता के कोई प्रेम पूर्ण हो सकता है? यदि वह होगा भी तो किसी एकाध व्यक्ति या दो चार 'विशिष्ट लोगों' से प्रेम करेगा। यह प्रेम है ही नहीं। मन एकाध से प्रेम कर सकता है, सबसे नहीं। हृदय ही सबसे प्रेम कर सकता है, परंतु हृदय प्रेम करता नहीं। हृदय पहले से ही और सदैव प्रेमस्वरूप ही है। कभी हमने सोचा कि सूर्य को कब प्रकाश देना या नहीं देना है? क्या वह मन-मस्तिष्क से निर्णय लेता है? पृथ्वी का जो हिस्सा सूर्य के सामने होता है वह प्रकाश से भर जाता है। सूर्य तो सदा सतत प्रकाशमान ही है। ऐसा ही हृदय के साथ है। केवल प्रेम ही सभी समस्याओं का सर्वसमर्थ समाधान है। मगर यह सामर्थ्य मन-बुद्धि से नहीं आ सकता। वह अपने हिसाब-किताब से चलते हैं। केवल हृदय ही हिसाब-किताब से पूर्णतः स्वतंत्र होता है, अनुभव उसका स्वरूप है। वह प्रेम-स्वरूप है, भाव-स्वरुप है। यदि हमें उसकी सहायता लेनी हो तो मन-बुद्धि के क्रियाकलाप को रोकना पड़ेगा। सात्विक बुद्धि से सहायता मिल सकती है। उससे यह सब बातें समझ में आती हैं। यदि अहं बुद्धि, राजसी- तामसी बुद्धि प्रबल रहेगी तो

समझना तो दूर, वह समझने की कोशिश ही नहीं करेगी। उसे ऐसी बातें सुनना/समझना पसंद नहीं होता। यहां ऐसे लोग भी मिल जायेंगे जो प्रेम शब्द सुनकर ही भड़क जायेंगें। क्रोध/घृणा/द्वेष से इतने भरे हुए लोग हिंसा से प्रेरित/हावी होकर प्रेम-रिक्त जीते हैं। उनकी हीनता फिर सदा युद्ध के रूप में प्रकट होती है। जिसमें दोषी तो क्या, निर्दोष भी मारे जातें हैं। ध्यान रहे कि प्रेम मन-बुद्धि का विषय ही नहीं है यद्यपि सात्विक बुद्धि, प्रेम के महत्व/आवश्यकता को समझा सकती है।

खर्राटों से मुक्ति पायें

कई लोगों को खर्राटे की समस्या रहती है।

यह समस्या स्ट्रेस, गलत डाइट प्लान, नशा और हॉर्मोनल में बदलाव आदि के कारण होती है।

खर्राटों से न सिर्फ खुद खर्राटे लेने वाला बल्कि उसके आसपास सोने वाले लोग भी परेशान रहते हैं।

खर्राटे सर्दी, खासी और बुखार का संकेत भी होते है।

यहाँ हम आपको बता रहे हैं खर्राटों की समस्या को दूर करने के आसान घरेलू उपाय।

- नमक मिले गुनगुने पानी से गरारे करें।

ऐसा करने पर गले की नसों में होने वाली सूजन ठीक होती है और खर्राटों में राहत मिलती है।

- सोने से पहले एक चम्मच शहद पीएं।

इससे गले की नशों को आराम मिलेगा और खर्राटों की समस्या भी खत्म होगी।

- एक गिलास पानी में पुदीने के तेल की 4-5 बूंदें डालकर इससे गरारे करें।

खर्राटों में तुरंत आराम मिलेगा।

- एक कप पानी में एक अदरक का छोटा टुकड़ा उबालकर 5 मिनट बाद में एक चम्मच शहद मिलाकर पीएं।

ऐसा दिन में 2-3 बार करें।

खर्राटों की समस्या खत्म होगी।

- रात को सोने से पहले एक चम्मच ऑलिव ऑयल गुनगुना करके पीएं।

ऐसा करने पर खर्राटों की समस्या दूसरी होगी।

- रोज रात को सोने से पहले एक गिलास गुनगुना पानी पीएं।

ऐसा करने पर सांस की नली खुलती और खर्राटों से राहत मिलती है।

- 2-4 लहसुन की कली को सरसों के तेल में डालकर गर्म करें और इस तेलसे सीने की मालिश करें। इससें सांस की रूकावट दूर होगी।

- घी को गर्म करें।

इसके बाद गुनगुना होने के बाद 2 या 3 बूंदे नाक में डालें।

रोज रात को सोने से पहले ऐसा करने पर खर्राटों में राहत मिलेगी।

- एक कप पानी में आधा-आधा चम्मच चायपत्ती, अदरक पाउडर, दो लौंग और नींबू के रस को उबालें।

इस काढ़े को रात में सोने से पहले पीएं।

- बॉडी में पानी की कमी से नाक और गले में कफ बढ़ जाता है जिससें सांस में रूकावट आती है।

दिन में 3 से 4 लीटर पानी पीएं।

प्रकृति, शांति और रोमांच का संगम है पार्वती घाटी में बसा कसोल

कसोल एक शांत और सुरम्य गाँव है, जो पार्वती नदी के किनारे स्थित है। यहाँ का वातावरण बेहद शांत, स्वच्छ और ठंडा होता है। ऊँचे पहाड़, घने देवदार के जंगल, कलकल बहती पार्वती नदी और रंग-बिरंगे कैफ़े इस स्थान को बेहद आकर्षक बनाते हैं।

हिमाचल प्रदेश की पार्वती घाटी में बसा कसोल एक छोटा लेकिन बेहद खूबसूरत पर्यटन स्थल है, जो खासकर युवाओं, ट्रेकिंग प्रेमियों और विदेशी पर्यटकों के बीच काफी लोकप्रिय है। समुद्र तल से लगभग 1,580 मीटर की ऊँचाई पर स्थित कसोल को "भारत का मिनी इज़राइल" भी कहा जाता है, क्योंकि यहाँ बड़ी संख्या में इज़राइली पर्यटक आते हैं और यहाँ की संस्कृति में उनका प्रभाव देखा जा सकता है।

कसोल की खासियत

कसोल एक शांत और सुरम्य गाँव है, जो पार्वती नदी के किनारे स्थित है। यहाँ का वातावरण बेहद शांत, स्वच्छ और ठंडा होता है। ऊँचे पहाड़, घने देवदार के जंगल, कलकल बहती पार्वती नदी और रंग-बिरंगे कैफ़े इस स्थान को बेहद आकर्षक बनाते हैं।

प्रमुख आकर्षण

1. पार्वती नदी

यह तेज बहाव वाली नदी कसोल की जान मानी जाती है। इसके किनारे टहलना, चट्टानों पर बैठकर मन को शांति देना और फोटोग्राफी करना पर्यटकों को बहुत पसंद आता है।

2. तोश और मणिकरण

कसोल से थोड़ी दूरी पर स्थित ये गाँव अपने प्राकृतिक सौंदर्य और धार्मिक महत्व के लिए प्रसिद्ध हैं। मणिकरण में गर्म पानी के झरने और गुरुद्वारा प्रमुख आकर्षण हैं, जबकि तोश ट्रेकिंग प्रेमियों का पसंदीदा गाँव है।

3. चालल गाँव

कसोल से लगभग 30 मिनट की पैदल दूरी पर स्थित यह छोटा गाँव ट्रेकिंग और कैम्पिंग के लिए आदर्श है। यहाँ आप स्थानीय संस्कृति को करीब से जान सकते हैं

4. इज़राइली कैफ़े और भोजन

कसोल में कई इज़राइली कैफ़े और रेस्तराँ हैं जहाँ आप फलाफल, शाकशूका, हुम्मस आदि विदेशी व्यंजनों का आनंद ले सकते हैं।

कसोल में करने योग्य गतिविधियाँ

ट्रेकिंग (खीरगंगा, तोश, चालल, ग्रहन)
कैम्पिंग और बोनफायर
रिवर साइड कैफ़े में समय बिताना
स्थानीय लोगों से मिलकर पहाड़ी संस्कृति को समझना
हर्बल चाय और हिमाचली हस्तशिल्प की खरीदारी

यात्रा का उत्तम समय

मार्च से जूनः गर्मियों में ठंडी जलवायु और ट्रेकिंग के लिए अनुकूल मौसम।

सितंबर से नवंबरः मानसून के बाद की हरियाली और साफ आसमान।

दिसंबर से फरवरीः बर्फबारी का आनंद लेने के लिए उत्तम।

कैसे पहुँचे कसोल?

हवाई मार्गः निकटतम हवाई अड्डा भुंतर (कुल्लू) है, जो कसोल से लगभग 31 किमी दूर है।

रेल मार्गः निकटतम रेलवे स्टेशन जोगिंदरनगर है, लेकिन सड़क मार्ग से पहुँचना अधिक सुविधाजनक है।

सड़क मार्गः दिल्ली, चंडीगढ़ और मनाली से कसोल तक नियमित बस और टैक्सी सेवाएं उपलब्ध हैं।

कसोल एक ऐसा गंतव्य है जहाँ आप भीड़भाड़ से दूर प्रकृति के साथ एक गहरा रिश्ता बना सकते हैं। यहाँ का शांत वातावरण, रोमांचक ट्रेक्स, विदेशी भोजन और पहाड़ी सौंदर्य, हर पर्यटक को मंत्रमुग्ध कर देता है। चाहे आप सोलो ट्रैवलर हों, कपल या दोस्तों के साथ – कसोल हर किसी के लिए एक यादगार अनुभव है।

भारत के प्रति अंतरराष्ट्रीय क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों का उदासीन रवैया

अंतरराष्ट्रीय क्रेडिट रेटिंग एजेंसियां जैसे एसएंडपी, मूडीज और फिच भारत की आर्थिक ताकत को कम आंकती हैं और भारत सरकार के सॉवरेन डेट पेपर्स को निम्न निवेश की रेटिंग देती हैं, जो वास्तविकता से परे है। ये एजेंसियां भारत की अर्थव्यवस्था की आंतरिक मजबूती को नजरअंदाज करती हैं। भारत आज दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था भी है। पिछले कुछ वर्षों में भारत ने अर्थव्यवस्था के आकार के मामले में 12वें से 5वें स्थान पर छलांग लगाई है, फिर भी इन एजेंसियों ने भारत के सॉवरेन डेट को सबसे निचले निवेश ग्रेड या Junk रेटिंग दी है।

यह तथ्य उल्लेखनीय है कि भारत ने कभी भी अपने कर्ज दायित्वों में चूक नहीं की, फिर भी उसे हमेशा निम्न रेटिंग ही मिलती है। भारत का राजकोषीय घाटा भी संतोषजनक स्थिति में है। केंद्र सरकार का सकल राजकोषीय घाटा जीडीपी का 4.8% है, जबकि सभी राज्य सरकारों का घाटा 3.2% है, जो कई अन्य विकासशील अर्थव्यवस्थाओं से बेहतर है। वित्तीय वर्ष 2024-25 में भारतीय अर्थव्यवस्था 6.5% की दर से बढ़ी, जो वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में सराहनीय है। हालांकि निजी क्षेत्र पूंजीगत व्यय में पीछे है, लेकिन सरकार ने इस कमी को पूरा किया है और सकल पूंजी निर्माण 31% है, जो एक बड़ी उपलब्धि है।

कुल कर्ज/जीडीपी अनुपात की बात करें तो जापान का 251%, अमेरिका का 123%, और चीन का लगभग 300% है, जबकि भारत का केवल 81% है। इस मोर्चे पर भी भारत की स्थिति मजबूत है। साथ ही, भारत की अर्थव्यवस्था में कर संग्रह में उछाल देखने को मिल रहा है। इसके बावजूद, अमेरिका जैसे उच्च राजकोषीय घाटे और भारी कर्ज वाली अर्थव्यवस्था को दूसरी सबसे ऊंची निवेश ग्रेड रेटिंग मिलती है।

भारत को इन क्रेडिट रेटिंग एजेंसियों के साथ सक्रिय रूप से अपनी आर्थिक स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए। यदि भारत को बेहतर निवेश ग्रेड रेटिंग मिलती है, तो यह इक्विटी और डेट दोनों में विदेशी निवेश आकर्षित करने में मदद करेगा, जो भारत की विकास यात्रा के लिए अत्यंत आवश्यक है।

ट्रम्प से इतना भय क्यों खा रहे हो, क्या डर है जो छुपा रहे हो ?

बादल सरोज

बहुतई विचित्र समय है। उधर माय डिअर फ्रेंड ऐसा पिलकर पीछे पड़ा हुआ है कि चुप्प होने का नाम ही नहीं ले रहा और इधर उनके प्यारे मित्र मोदी ऐसी चुप्प साधे हैं कि बोल ही नहीं फूट रहा ; न हाँ कहते बन रहा है, न ना कहने की हिम्मत जुटा पा रहे हैं। भारत-पाकिस्तान के बीच हुई लड़ाई — जिसमें अमरीकी राष्ट्रपति को परमाणु युद्ध तक की आशंका दिखाई दे गयी थी — में बीच-बचाव करके, उन्हें डांट-डपट कर, व्यापार के लॉलीपॉप दिखाकर, घुड़की देकर युद्धविराम करवा देने की खुद की उपलब्धि का बखान ट्रम्प बार-बार लगातार कर रहे हैं।

इसकी आवृति और बारम्बारता इतनी है कि अब तो गिनती करना तक कठिन होता जा रहा है। 10 मई के बाद के 11 दिन में ट्रम्प ने 8 बार, हर बार कुछ नया मिर्च-मसाला जोड़कर युद्धविराम करवाने का दावा दोहराया। एक देश नहीं, सऊदी अरब और क़तर सहित तीन-तीन देशों के सार्वजनिक कार्यक्रमों में यही बात बोल-बोलकर सार्वजनिक रूप से भारत को उसकी हैसियत दिखाई है।

23 मई को न्यूयॉर्क स्थित अमरीका की अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से जुड़े मामलों की संघीय अदालत में तो बाकायदा शपथपत्र दाखिल करके लिखा-पढ़ी में इसे उदाहरण के रूप में पेश किया है। टैरिफ बढ़ाने-घटाने के राष्ट्रपति के निरंकुश अधिकार को चुनौती देने वाली याचिका के जवाब में ट्रम्प प्रशासन के प्रतिनिधि ल्यूटनिक ने तीन न्यायाधीशों की पीठ के सामने शपथ पत्र देकर टैरिफ नीति की कारगरता बताई। उसने उदाहरण देते हुए कहा कि "भारत और पाकिस्तान - दो परमाणु शक्ति संपन्न देश जो सिर्फ़ 13 दिन पहले युद्ध अभियानों में लगे हुए थे - 10 मई, 2025 को एक अनिश्चित युद्ध विराम पर पहुँचे। यह युद्ध विराम केवल राष्ट्रपति ट्रम्प के हस्तक्षेप के बाद ही हासिल किया गया था और दोनों देशों को पूरी तरह युद्ध को रोकने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ व्यापार करने की पेशकश की थी। इस मामले में राष्ट्रपति की शक्ति को बाधित करने वाला कोई भी प्रतिकूल निर्णय भारत और पाकिस्तान को राष्ट्रपति ट्रम्प की पेशकश की वैधता पर सवाल उठाने के लिए प्रेरित कर सकता है, जिससे पूरे क्षेत्र की सुरक्षा और लाखों लोगों की जान को खतरा हो सकता है।"

इस तरह अब भारत को समर्पण कराना भी एक नजीर की तरह पेश किये जाने की नौबत आ गयी है। याद रहे कि भारत या पाकिस्तान में से किसी के भी युद्ध विराम का एलान करने के पहले — सबसे पहले —जानकारी ट्रम्प ने ट्विटर एक्स पर दी थी। इन पंक्तियों के लिखे जाने तक ट्रम्प के मुंह से कोई दर्जन भर बार यह दावा दोहराया जा चुका है - इनमें उपराष्ट्रपति वेंस और विदेश मंत्री मार्को रुबियो द्वारा किये गए ऐसे दावों का शुमार नहीं है।

इस बीच एक नया ब्यौरा रूस के राष्ट्रपति पुतिन के विशेष सलाहकार यूरी उशाकोव ने जोड़ दिया है, जो ट्रम्प के सीजफायर दावे को प्रामाणिकता देता है। एक इंटरव्यू में उशाकोव ने कहा कि "ट्रम्प और पुतिन के बीच करीब 75 मिनट की बातचीत हुई, जिसमें परमाणु शक्ति सम्पन्न भारत और पाकिस्तान के बीच जंग एक अहम मुद्दा थी। इसमें ट्रम्प ने बताया कि किस तरह वह इन दोनों देशों के बीच युद्ध विराम करवा रहे हैं।"

भले मोदी, उनके विदेश मंत्री और उनके सरसंघचालक से लेकर शाखा प्रमुख तक इतना सब होने पर भी मुसक्का बाँध कर बैठे हों, किन्तु विदेश विभाग के प्रवक्ता रंधीर जायसवाल एक पत्रकार वार्ता में इसे अपरोक्ष रूप से स्वीकार कर चुके हैं। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने माना कि "हाँ, युद्ध के दौरान अमरीकी उपराष्ट्रपति वेंस और प्रधानमंत्री मोदी तथा अमरीकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो और विदेश मंत्री एस जयशंकर के बीच बातचीत हुई थी, मगर इसमें व्यापार की कोई बात नहीं थी।" इन पंक्तियों के बीच वह स्वीकारोक्ति छुपी है, जिसका खंडन करने को हिम्मत नहीं हो रही, क्योंकि यह बातचीत मौसम का हाल जानने के लिए नहीं थी - युद्ध रोकने की ही थी!!

किसी संप्रभु देश, उसमें भी भारत जैसे बड़ी अर्थव्यवस्था और सबसे अधिक आबादी वाले देश के साथ इस तरह का बर्ताव, तीसरे देशों में जाकर उसका बार-बार दोहराया जाना सिर्फ कूटनीतिक मर्यादाओं का उल्लंघन ही नहीं है, सरेआम लज्जित और अपमानित करने वाला भी है। सवाल यह है कि दशकों से आमतौर से आत्मसम्मान की विदेश नीति पर चलने वाले और उसके चलते दुनिया भर में अपनी सम्मानजनक हैसियत बनाने वाले देश के साथ ऐसी नौबत क्यों, कैसे और किनके कारण आई है ? यह सवाल इसलिए अहम है, क्योंकि यह सिर्फ एक घटना नहीं है — यह एक ऐसी फिसलन है, जो यदि अभी नहीं रोकी गयी, तो बहुत तेजी से रसातल में पहुंचा देगी।

जी-7 की बैठक में 'टू बी ऑर नॉट टू बी' वाला 'कभी ख़ुशी कभी ग़म' एपिसोड ट्रम्पियापे पर हुए मोदियापे के नए सीजन का ही हिस्सा है। बाकी देशों को डेढ़-डेढ़ महीने पहले बुलावा भेजना, भारत को न्यौता देने में इतनी देर करना, महज सप्ताह भर पहले भेजे आमंत्रण में भी रूखी-सूखी भाषा का इस्तेमाल करना अभद्रता तो है ही, भारत की अभी हाल तक की अंतर्राष्ट्रीय हैसियत के मुताबिक़ भी नहीं है। जैसे देर से न्यौतना ही काफी नहीं था, सो यह भी बता दिया गया कि यह न्यौता भी सशर्त है। मेजबान देश कनाडा के प्रधानमंत्री कार्नी ने पत्रकार वार्ता में यह जानकारी देते हुए कहा कि "हम अब, महत्वपूर्ण रूप से, कानून प्रवर्तन वार्ता जारी रखने के लिए सहमत हो गए हैं, इसलिए इस पर कुछ प्रगति हुई है, जो जवाबदेही के मुद्दों को पहचानती है।" उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि मोदी को निमंत्रण देने में यह एक कारक था। एक सूत्र ने टोरंटो स्टार को बताया कि यह मोदी को निमंत्रण देने के लिए "शर्तों" में से एक था।

कनाडा दुनिया के उन कुछ देशों में से एक है, जहां भारतीय मूल के नागरिकों की भरी-पूरी आबादी है और उसकी काफी हद तक निर्णायक भूमिका भी है। कार्नी यहीं तक नहीं रुके, उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि 15-17 जून को कनानसकीस, अल्बर्टा में होने वाला जी-7 शिखर सम्मेलन "शांति और सुरक्षा को मजबूत करने, विदेशी हस्तक्षेप के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय अपराध का मुकाबला करने और जंगल की आग के लिए संयुक्त प्रतिक्रियाओं में सुधार" पर केंद्रित होगा। यह उन तीन प्राथमिकताओं में से पहली है, जिन्हें कार्नी ने शिखर सम्मेलन के लिए रेखांकित किया है। खालिस्तानी पृथकतावादी निज्जर की हत्या के बाद कनाडा द्वारा भारत सरकार पर लगाए गए आरोपों के मद्देनजर यह मोदी सरकार के बारे में कनाडा द्वारा व्यक्त की गई चिंताओं को साफ़-साफ़ दर्ज करता है। उस शर्त की तरफ भी इंगित करता है, जो आख़िरी समय पर दिये गये बुलावे के साथ जुड़ी बताई गयी हैं। मगर एक तो बात इतनी भर नहीं है और दूसरे ये कि न्यौते को लटकाकर रखने के पीछे सिर्फ कनाडा भर नहीं है — अंदरखाने बहुत कुछ हुआ है, डील और भी हैं। जी-7 के न्यौते के साथ ही भारत सरकार ने एलान किया है कि वह डालर की जगह किसी स्थानीय करेंसी के उपयोग के ब्रिक्स के प्रस्ताव के साथ नहीं जाएगी। यह मांग असल में अमरीकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने मोदी के सामने पत्रकार वार्ता में तब की थी, जब वे उन्हें चुने जाने की बधाई देने गए थे। ट्रम्प ने ब्रिक्स को बंद कर देने तक की हिदायत दी थी और मोदी दन्त-मुख व्यायाम करते रहे थे, जबकि दक्षिण अफ्रीका, यहाँ तक कि यूक्रेन जैसे देश भी ट्रम्प के बड़बोलेपन का जवाब उसके मुंह पर देकर आये थे।

ब्रिक्स अमरीकी वर्चस्व वाली एकध्रुवीयता के मुकाबले के लिए बना संगठन है। भारत इसके संस्थापक सदस्यों में से एक है। उसके अलावा ब्राजील, रूस, चीन और दक्षिण अफ्रीका इसमें हैं, कुछ और देश इसमें शामिल हुए हैं और अनेक अन्य देश इसकी सदस्यता की कतार में हैं। ब्रिक्स बड़ी अर्थव्यवस्थाओं वाले देशों का संगठन है, जिनका दुनिया की जीडीपी में 35% हिस्सा है, जबकि जी-7 का हिस्सा सिर्फ 30% है। ब्रिक्स गठबंधन के देश हर पैमाने से जी-7 देशों की तुलना में मजबूत हैं और लगातार आगे की ओर बढ़ रहे हैं, जबकि इससे उलट जी-7 देशों की अर्थव्यवस्थाएं गिरावट की ओर हैं। वर्ष 2000 में, दुनिया की कुल जीडीपी में जी-7 देशों की हिस्सेदारी 40% से अधिक थी, लेकिन 2024 तक यह 30% से नीचे गिर गई। यह गिरावट मुख्य रूप से चीन, भारत, ब्राजील के आर्थिक विकास के कारण है और मैन्युफैक्चरिंग से लेकर उपभोग तक चौतरफा है।

ब्रिक्स संगठन का एक बड़ा लक्ष्य अमेरिकी डॉलर पर निर्भरता को कम करना है। वैश्विक लेन-देन में डॉलर के प्रभुत्व से इन देशों की असहमति है। डॉलर पर टिकी प्रणाली बाकी देशों को पश्चिमी प्रतिबंधों के अधीन कर देती है। इसलिए ब्रिक्स ने शुरू से ही व्यापार में स्थानीय मुद्राओं के उपयोग को बढ़ावा देने और गैर-डॉलरीकरण की दिशा में कदम बढ़ाने का समर्थन किया है। ब्रिक्स देश एक दशक से भी अधिक समय से अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में अमेरिकी डॉलर की प्रधानता को कम करने की कोशिश कर रहे हैं। बात तो यूरोपियन यूनियन की यूरो जैसी ब्रिक्स की अपनी मुद्रा बनाने तक की हुई है।

डॉलर के स्थान पर किसी नई मुद्रा को अपनाने से सबसे अधिक फायदा ब्रिक्स देशों को हो सकता है। हाल के वर्षों में इन देशों ने अमेरिकी डॉलर पर निर्भरता घटाने की दिशा में कुछ, भले ही सीमित प्रयास किये हैं। खुद भारत अपनी मुद्रा की मांग बढ़ाने के प्रयत्न करता रहा है। बड़े तेल उत्पादकों के साथ गैर-डॉलर भुगतान आधारित तेल बिक्री पर बातचीत करने का प्रयास किया है। चीन ने सऊदी अरब से ऐसे करार किये, भारत ने रुपए में तेल की कीमत तय करने के लिए यूएई के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किये हैं। इसी वर्ष ब्रिक्स की बैठक होने वाली है, जिसका जिकरा जी-7 का न्यौता न मिलने पर खुद मोदी प्रचारकों ने बड़े जोर-शोर से किया था ; उन्होंने कहा था कि जी-7 में नहीं बुलाया तो क्या, ब्रिक्स में तो जाईबेई करेंगे। बात साफ़ है कि जी-सेवेनिये उजड़ते नवाबों के साथ दस्तरखान पर सिवैयां खाने से पहले ही उसकी कीमत चुकाई जा रही है ; हालांकि आशंका बनी हुई है कि जी-7 के पीरे मुगा ट्रम्प यहाँ कहीं इन्हीं के सामने तेरहवीं बार फिर से युद्धविराम कराने का जिक्र न छेड़ दें। अगर कहीं ऐसा हुआ, तो लिखकर रख लीजिये कि मोदी अत्यंत शिष्ट, मृदु और अल्पभाषी व्यक्ति होने का परिचय देंगे और उनके सामने कुछ नहीं बोलेंगे।

बकौल मोदी चौथी और यूं पांचवी अर्थव्यवस्था होने के बावजूद मोदी और उनकी सरकार इतने दबाब में क्यूँ हैं ? दक्षिण अफ्रीका में हवाई अड्डे पर रिसीव करने वहां के राष्ट्रपति के न आने, नेपाल के इनके कहने पर चलने से इंकार कर देने, श्रीलंका के अपना रास्ता खुद चुनने जैसी हर बात पर फूफागिरी दिखाने वाले मोदी ट्रम्प और जी-7 के सामने इतने सहमे-सहमे से क्यूँ हैं ? इसलिए कि उनकी विचारधारा ही साम्राज्यवाद की मातहती की विचारधारा है। संघ—जनसंघ से भाजपा तक साम्राज्यवादी अमरीका इनका आराध्य रहा है। उसके लघेन्टे बनना इनका सपना रहा है। ट्रम्प युग का अमरीका तो और भी सगा वाला नजर आता है। फिर इन दिनों अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय पूँजी का अपना ही अल्गोरिथम है। वह सत्ता के साथ अपनी रही-सही दिखावटी आड़ भी ख़त्म कर देने की हड़बड़ी में है। ट्रम्प और मस्क के बीच फूट रही फुलझड़ियाँ इसी की एक झलक हैं।

उस पर नकली सोने में फर्जी सुहागा यह है कि इधर वाले के अपने मस्क हैं, जिनका नाम अडानी और अम्बानी है। उन्हें भी अब बड़े अखाड़ों में खेलना है — उस एवज में भले ही देश को कितना ही घाटा या जोखिम क्यों न उठानी पड़े ; उनके राजनीतिक चाकरों को सौ प्याज के साथ सौ जूते ही क्यों न खाने पड़े। अम्बानी और मित्तल को कहार बनाकर स्टारलिंक को अपनी पालकी भारत में पधराने की अनुमति इसी श्रृंखला में देखी जानी चाहिए। इससे राष्ट्रीय सुरक्षा का क्या होगा, लोगों की निजता कितनी बचेगी, इन्टरनेट की उपलब्धता कितनी महंगी होगी, यह सब चिंताएं देसी और विदेशी कारपोरेट के मुनाफों के बोझ तले दम तोड़ देती हैं। यही है फासीवाद की वह नयी किस्म, जो पूँजी की जनरेशन एक्स के पालने में पलती है।

इस सरेंडर से ध्यान बंटाना है। जनता का जो हिस्सा — और यह बड़ा हिस्सा है — इस सबको गलत मानता है, उसे भुलावे में डालना है, तो नरेंदर सड़कों पर तफरीह करने निकलते हैं। लगभग सारे उद्योग-धंधे, व्यापार-व्यवसाय, बैंक-बीमा विदेशी पूँजी और उसके साथ जूनियर पार्टनरी करने वाले देसी धनपिशाचों के हवाले करने के बाद छोटी आँखों वाले गणेश न खरीदने, हर विदेशी माल का बहिष्कार करने का ऐसा नारा दे रहे हैं, जिसके बारे में उन्हें पता है कि इसे न लागू होना है, न इन्हें करवाना है। इनके मात-पिता संगठन को भी अपने उस स्वदेशी आन्दोलन की सुध आने लगती है, जिसे दशकों पहले स्वयं इन्हीं ने अपने कर कमलों से कब्र में सुलाकर गोभी उगाये थे।

यह विचित्र समय है, सचमुच का विचित्र समय!! मगर स्थायी नहीं है। इससे पहले भी ऐसे समय आये हैं, जनता उनसे बाहर निकली है, दुनिया को भी साबुत सलामत बाहर निकाला है। उसके पास कुंजी है — एकजुट, जुझारु और कारगर प्रतिरोध की कुंजी। दुनिया भर में इस तरह के उभार सामने आ रहे हैं, खुद अमरीका भी उबलने के बिंदु तक पहुँच रहा है। भारत के मेहनतकश खासतौर से पिछली 34 वर्षों के नवउदार युग के संघर्षों की भट्टी से गुजरते हुए सक्षम हो चुके हैं। यही रास्ता है — इसी तरह होना चाहिए — ऐसा ही होगा।

(लेखक लोकजतन के संपादक और अखिल भारतीय किसान सभा के संयुक्त सचिव हैं।

महाराष्ट्र ऊर्जा विकास एजेंसी (एमईडीए) से मिला 101 करोड़ रुपए का अब तक का सबसे बड़ा सौर पंप ऑर्डर

मुख्य संवाददाता

भारत के पंप उद्योग में एक विश्वसनीय नाम, क्रॉम्पटन ग्रीव्स कंज्यूमर इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड ने सौर वाटर पंप क्षेत्र में अपना सबसे बड़ा ऑर्डर हासिल करके ग्रीन एनर्जी की दिशा में एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है।

कंपनी ने महाराष्ट्र ऊर्जा विकास एजेंसी (एमईडीए) से प्रधानमंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाअभियान (पीएम-कुसुम) योजना के कंपोनेंट बी के तहत 101 करोड़ रुपए (जीएसटी के अलावा) का लेटर ऑफ अवार्ड (एलओए) हासिल किया है।

इसके तहत महाराष्ट्र में 4,500 ऑफ-ग्रिड सोलर फोटोवोल्टिक वॉटर पंपिंग सिस्टम्स (एसपीडब्लूपीएस) की डिजाइनिंग, निर्माण, सप्लाई, ट्रांसपोर्ट, इंस्टॉलेशन, टेस्टिंग और कमीशनिंग का काम शामिल है।

यह महत्वपूर्ण ऑर्डर क्रॉम्पटन की भारत भर में किसानों को सशक्त बनाने वाले टिकाऊ सिंचाई समाधानों को प्रदान करने की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाताता है।

इस पूरे प्रोजेक्ट के साथ 5 साल की मेंटेनेंस सर्विस (सीएमसी) का अनुबंध भी शामिल है ताकि स्थापित व प्रणालियां लंबे समय तक सही ढंग से काम कर सके।

क्रॉम्पटन के उन्नत सौर ऊर्जा चालित डीसी सबमर्सिबल पंपों को टिकाऊपन, उच्च प्रदर्शन और उपयोग में आसानी की खूबियों के साथ डिजाइन किया गया है, ताकि विशेष रूप से ऑफ-ग्रिड और ग्रामीण क्षेत्रों में पानी की उपलब्धता की की चुनौतियों का समाधान किया जा सके।

कंपनी अपने प्रशिक्षित फील्ड स्टाफ, स्थानीय जिला सहायता टीमों और मजबूत आफ्टर-सेल्स नेटवर्क के सहारे परियोजना का उत्कृष्ट परिचालन व बेहतर क्रियान्वयन सुनिश्चित करेगी।

यह पहल केंद्र सरकार के उस लक्ष्य से भी मेल खाती है, जिसमें किसानों को पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों से हटाकर सोलर एनर्जी की ओर ले जाने पर ज़ोर है। इससे किसानों को आर्थिक रूप से राहत मिलेगी और पर्यावरण को भी फायदा होगा।

यह ऑर्डर कृषि, ग्रामीण जल आपूर्ति और ऑफ-ग्रिड अनुप्रयोगों में बढ़ती मांग के चलते भारत के सबमर्सिबल वाटर पंप बाजार में तेजी से हो रही वृद्धि के बीच आया है।

सौर ऊर्जा चालित सबमर्सिबल पंप अब अनियमित वर्षा और सीमित बिजली वाले क्षेत्रों में महत्वपूर्ण होते जा रहे हैं, ताकि लगातार और टिकाऊ सिंचाई की जा सके।

क्रॉम्पटन के होम इलेक्ट्रिकल्स और पंप्स बिज़नेस हेड, रजत चोपड़ा ने कहा, "हमें पीएम-कुसुम योजना के अंतर्गत 4,500 सौर फोटोवोल्टिक वाटर पम्पिंग सिस्टम्स के लिए एमईडीए से लेटर ऑफ अवार्ड मिलने की बेहद खुशी है।

यह न सिर्फ हमारे लिए अब तक का सबसे बड़ा सौर पंप ऑर्डर है, बल्कि यह भारत भर के किसानों की जरूरतों के अनुरूप भरोसेमंद और उच्च प्रदर्शन वाले पंपिंग समाधान देने की हमारी निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

यह ऑर्डर क्रॉम्पटन के उत्पादों की बेहतरीन गुणवत्ता, दीर्घकालिक प्रदर्शन और मजबूत सेवा नेटवर्क में विश्वास को मजबूत करता है और सौर ऊर्जा आधारित सिंचाई के क्षेत्र में एक भरोसेमंद साझेदार के तौर पर और मज़बूती देता है।

क्रॉम्पटन में हमारा फोकस लगातार इस पर है कि किसानों को साफ और टिकाऊ ऊर्जा मिले, और साथ ही हर प्रोजेक्ट को बेहतरीन गुणवत्ता, इनोवेशन और मज़बूत आफ्टर-सेल्स सपोर्ट के साथ बिना किसी रुकावट के पूरा किया जा सके।"

क्रॉम्पटन ने इस टेंडर प्रक्रिया में हरियाणा, महाराष्ट्र, राजस्थान और मध्य प्रदेश जैसे चार अहम राज्यों में सक्रिय भागीदारी की।

इस योजना के शुरुआती चरण की निगरानी एसईसीआई और एमएनआरई ने की थी, लेकिन अब इसके अंतिम क्रियान्वयन के लिए हर राज्य की नोडल एजेंसियों – जैसे एचएआरईडीए, एमईडीए, एमएसईडीसीएल, एमपीयूवीएनएल और आरएचडीएस – को सौंप दिया गया है।

कंपनी हरियाणा, राजस्थान और महाराष्ट्र में पहले से सक्रिय है, वहीं जल्द ही मध्य प्रदेश में भी प्रोजेक्ट शुरू करने की तैयारी कर रही है और अब कंपनी अन्य भारतीय राज्यों में भी अपने विस्तार की तैयारी में है।

85 साल से भी ज़्यादा के अनुभव के साथ, क्रॉम्पटन लगातार इनोवेशन कर रहा है और ऊर्जा की बचत करने वाली, टिकाऊ और स्मार्ट पंपिंग तकनीकें विकसित कर रहा है, जो भारत के स्वच्छ ऊर्जा और जलापूर्त से जुड़े लक्ष्यों को पूरा करने में सहायक होती है।

निरंकारी कॉलोनी में ग्रीष्मकालीन शिविर का हुआ भव्य समापन

– शिविर समापन में विधायक राजकुमार भाटिया और निगम पार्षद नेहा अग्रवाल सहित कई क्षेत्रीय दिग्गज रहे मौजूद

नई दिल्ली: दिल्ली के निरंकारी कॉलोनी के गली नम्बर-3 के पार्क में समर्पण सेवा ट्रस्ट द्वारा एक माह तक चले ग्रीष्मकालीन शिविर का समापन बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में आदर्श नगर विधानसभा क्षेत्र के विधायक राजकुमार भाटिया, वार्ड नंबर-14 धीरपुर वार्ड की निगम पार्षद नेहा अग्रवाल एवं विशिष्ट अतिथि डॉक्टर प्रदीप अग्रवाल उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता फाउंडर ट्रस्टी कुलभूषण शर्मा ने की।

इस समापन समारोह का पूरा वित्तीय सहयोग ट्रस्टी सीमा शर्मा द्वारा वहन किया गया। एचकेएल स्पोर्ट्स फाउंडेशन के चेयरमैन देवांग शर्मा ने बच्चों को उपहार स्वरूप खेल की वस्तुएं भेंट की। शिविर में गंतव्य संस्थान के अध्यक्ष डॉक्टर अरविंद त्यागी का भरपूर मार्गदर्शन मिला। समर्पण सेवा ट्रस्ट के संरक्षक आचार्य चंद्र वल्लभ बुढ़ाकोटि ने समारोह का समापन किया। कार्यक्रम में फाउंडर ट्रस्टी कुलभूषण शर्मा, घनश्याम शर्मा, उमेश कुमार, यशोदा वरदान, आलोक दुबे, धर्मेंद्र अत्री, प्रवीण अरोड़ा भी मौजूद रहे।

इस दौरान बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम, डांस, गीत और नाट्य प्रस्तुत किया। फाउंडर ट्रस्टी कुलभूषण शर्मा ने अपने भाषण में वालंटियर्स निहारिका, एडवोकेट स्वाति गोहित, मनीष, महिपाल, शारदा शर्मा, लावण्या, मानवी त्यागी, ज्योति, इंदु सैनी एवं दिनेश त्यागी का विशेष धन्यवाद किया।

इस मौके पर विधायक राजकुमार भाटिया ने कहा कि सशक्त समाज की बच्चे नींव है। इसलिए इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित होते रहने चाहिए। उन्होंने वालंटियर्स को प्रशस्ति पत्र देकर उनका मनोबल भी बढ़ाया।

इस दौरान पार्षद नेहा अग्रवाल ने अपने स्नेह के साथ बच्चों को उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। पार्षद नेहा अग्रवाल ने वालंटियर्स और बच्चों को अपनी तरफ से उनका मनोबल ऊंचा करने के लिए पुरस्कार भी दिए। पैरामेडिकल बोर्ड के चेयरमैन डॉक्टर प्रदीप अग्रवाल ने बच्चों को उज्जवल भविष्य की कामना की और स्नेहिल आशीर्वाद दिया। इस मौके पर कई गणमान्य लोगों ने भी विचार रखें।

अखिल भारतीय ज्योतिष समागम में प्रमुख समाजसेवी एवं महामंडलेश्वर डॉ. रेखा बांकाजी एलटीए अवॉर्ड से सम्मानित

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। प्रख्यात ज्योतिषाचार्य सागर जी के सानिध्य एवं सौजन्य से देवभूमि उत्तराखंड के ऋषिकेश स्थित शिवांश रिजॉर्ट में चतुर्थ अखिल भारतीय ज्योतिष समागम का आयोजन किया गया। जिसमें देश के विभिन्न क्षेत्रों से प्रख्यात ज्योतिषाचार्यों ने भाग लिया। उपकार फाउंडेशन की नेशनल चेयरपर्सन एवं डायरेक्टर महामंडलेश्वर डॉक्टर रेखा बांका जी महाराज भी विशिष्ट अतिथि के रूप में इस ज्योतिष समागम में उपस्थित रही। 6 से 8 जून तक आयोजित इस ज्योतिष समागम में ज्योतिष विज्ञान के प्रचार प्रसार एवं अनुसंधान की अपनी उपलब्धियों के लिए महामंडलेश्वर डॉक्टर रेखा बांका जी महाराज को लाइफ़ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर मेरठ विश्वविद्यालय के कुलपति योगेश गुप्ता एवं फिल्म जगत की प्रख्यात हस्ती गुलशन पांडे मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। मशहूर अभिनेता गुलशन पांडे के कर कमल से महामंडलेश्वर डॉक्टर बांका जी को यह सम्मान प्रदान किया गया। इस अवसर पर महामंडलेश्वर

डॉक्टर बांका ने अपने व्याख्यान में कहा कि वैदिक काल से ही ज्योतिष एक प्रामाणिक विज्ञान के रूप में चर, अचर पर ग्रह नक्षत्र के पड़ने वाले प्रभावो का विश्लेषण एवं उसका समाधान करता आया है। आज भी ज्योतिष विज्ञान उतना ही प्रासंगिक है। ग्रह नक्षत्र का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का जन्म कुंडली के आधार पर विवेचना कर उसके समाधान के लिए ज्योतिषीय समाधान पूर्ण रूप से सत्य एवं प्रमाणिक हैं। भारत के ऋषि, महर्षियों द्वारा काफी शोध एवं गणना के बाद इस विज्ञान को स्थापित किया गया। आज ज्योतिष विज्ञान भारत ही नहीं विश्व में भी अपनी विश्वसनीयता एवं प्रमाणिकता स्थापित कर चुका है।

-"आप" ने विपक्ष की सकारात्मक भूमिका अदा कर सीएम रेखा गुप्ता और मेयर राजा इकबाल सिंह को नींद से जगाया- अंकुश नारंग

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। भाजपा की दिल्ली सरकार से दिल्ली नगर निगम को 820 रुपए दिलाने को लेकर आम आदमी पार्टी का संघर्ष सफल हो गया। ₹आप₹ द्वारा दिल्ली सरकार से फंड न मिलने की वजह से एमसीडी कर्मचारियों को सैलरी नहीं मिलने का मुद्दा जोरशोर से उठाया गया, जिसके बाद सीएम रेखा गुप्ता ने एमसीडी के खाते में 820 करोड़ रुपए भेज दिया है। हालांकि दस दिन पहले भाजपा ने दावा किया था कि उसकी दिल्ली सरकार ने पैसे जारी कर दिए हैं, लेकिन उस पैसे को 3 किलोमीटर की दूरी तय कर सिविक सेंटर तक पहुंचने में 11 दिन लग गए। जिसके बाद कर्मचारियों को उनकी रुकी सैलरी मिलने लगी है। यह जानकारी एमसीडी में ₹आप₹ के नेता प्रतिपक्ष अंकुश नारंग ने दी।

अंकुश नारंग ने सैलरी मिलने पर एमसीडी कर्मचारियों को बधाई देते हुए कहा कि सरकार को जगाने का काम विपक्ष का होता है और विपक्ष में आम आदमी पार्टी ने एमसीडी में सकारात्मक भूमिका अदा करते हुए सीएम रेखा गुप्ता और मेयर राजा इकबाल सिंह समेत पूरी भाजपा को नींद से जागने का काम किया। दिल्ली सरकार से मिले 820 करोड़ रुपए एमसीडी कर्मचारी के अधिकार के हैं। आम आदमी पार्टी ने कर्मचारियों की रुकी सैलरी को दिलाने का काम किया है। हमारा यह संघर्ष कामयाब हुआ। अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व में आम आदमी पार्टी आगे भी एमसीडी कर्मचारी और दिल्ली की जनता के हक की लड़ाई लड़ती रहेगी।

उन्होंने कहा कि पिछले कई दिनों से एमसीडी कर्मचारियों की सैलरी में देरी के खिलाफ आम आदमी पार्टी लगातार संघर्ष कर रही थी। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने हर अखबार में यह खबर छपवा दी थी कि उन्होंने 820 करोड़ रुपये जारी कर दिए हैं। लेकिन यह राशि दिल्ली सचिवालय से मात्र तीन किलोमीटर दूर सिविक सेंटर तक नहीं पहुंच पा रही थी। इस कारण ग्रुप ए, बी और सी के एमसीडी कर्मचारियों की सैलरी में देरी हो रही थी। "आप" ने इस मुद्दे पर लगातार संघर्ष किया और प्रेस कॉन्फ्रेंस के जरिए जनता को अवगत कराया।

अंकुश नारंग ने कहा कि जानकारी के अनुसार, आम आदमी पार्टी के इतने संघर्ष के बाद मंगलवार सुबह दिल्ली सरकार द्वारा भेजे गए 820 करोड़ रुपए एमसीडी के खाते में आ गए हैं। अब ग्रुप ए, बी और सी की सैलरी रिलीज हो जाएगी। सभी एमसीडी कर्मचारियों, विपक्षी नेताओं और साथी पार्षदों को इस जीत के लिए मुबारकबाद है। आम आदमी पार्टी इसी तरह सड़क से लेकर सदन तक संघर्ष करती रहेगी और सत्ता पक्ष को नींद से जगाने का काम करेगी। विपक्ष की सकारात्मक भूमिका यही होती है कि वह सरकार को जनहित के मुद्दों पर जवाबदेह बनाए।

उन्होंने कहा कि अरविंद केजरीवाल के मार्गदर्शन में आम आदमी पार्टी, एमसीडी में इसी तरह काम करती रहेगी। आम आदमी पार्टी सत्ता पक्ष की नींद हराम करती रहेगी और जनता के मुद्दों को उठाकर उन्हें नींद से जगाएगी। सूत्रों के अनुसार, 820 करोड़ रुपये की पहली किस्त एमसीडी को मिल गई है और जैसे ही सैलरी रिलीज होगी, कर्मचारियों को इसका लाभ मिलेगा।

अंकुश नारंग ने कहा कि यह जीत सकारात्मक विपक्ष की भूमिका का परिणाम है। "आप" ने सकारात्मक विपक्ष की भूमिका निभाते हुए इस मुद्दे को उठाया और 820 करोड़ रुपये की पहली किस्त एमसीडी को दिलवाई। सभी कर्मचारियों, जनता और विपक्ष के नेताओं को इस सफलता के लिए बधाई। "आप" भविष्य में भी जनहित के लिए संघर्ष करती रहेगी। यह एकजुटता और सकारात्मक विपक्ष की ताकत का परिणाम है।

दिल्ली की भाजपा सरकार ने 33 आयुष्मान आरोग्य मंदिरों को आरम्भ किया

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली: दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने दिल्ली सरकार द्वारा समयबद्ध तरीके से आयुष्मान आरोग्य मंदिर आरम्भ करने का स्वागत किया है और कहा है कि इसी के साथ भाजपा सरकार ने अपने चुनाव संकल्प पत्र का एक महत्वपूर्ण वादा पूरा करने के लिए एक बड़ा कदम उठाया है

उन्होंने कहा है कि उच्च गुणवंता के आयुष्मान अरयोग्य मंदिर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सबको अच्छी निशुल्क स्वास्थ सेवाएं देने की कल्पना को पूरा करेंगे।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है कि आज दिल्ली की भाजपा सरकार ने 33 आयुष्मान अरयोग्य मंदिर को आरम्भ कर दिल्ली वालों को विश्व स्तरीय प्राथमिक मैडिकल एड सेंटर उपलब्ध करने के लिए 1139 अरयोग्य मंदिर खोलने की 2400 करोड़ से अधिक की वृहद योजना का श्री गणेश किया है।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है कि आयुष्मान आरोग्य मंदिर से प्राप्त होने वाली चिकित्सक सेवा हो, जांच, टीकाकरण एवं मातृत्व केयर सुविधा हो सभी अंतराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप रहेंगे।

सरकारी परिसरों में खोले जा रहे आरोग्य मंदिरों पर किराया घोटाला रूपी भ्रष्टाचार के दाग भी नहीं लग सकते जैसे विगत अरविंद केजरीवाल सरकार द्वारा पार्टी कार्यकर्ताओं के भवनों में मोहल्ला क्लीनिक खोलने पर लगे थे।

विगत अरविंद केजरीवाल सरकार के मोहल्ला क्लीनिक केवल भ्रष्टाचार के केन्द्र थे और एक छोटे से हॉल से चलने वाले इन क्लीनिकों में इलाज कम हो पाता था संक्रमण अधिक फैलता था क्योंकि एक छोटे हॉल में विभिन्न तरह के मरीज़ बैठाये जाते थे और वहीं डाक्टर भी बैठते थे।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है कि आगामी एक डेढ़ वर्ष में यह आयुष्मान आरोग्य मंदिर श्रृंखला दिल्ली के हर कोने में समाज के हर वर्ग को स्वास्थ सेवाएं उपलब्ध करायेंगी।

समाजसेवी दिनेश चंद्र शर्मा की द्वितीय पुण्यतिथि पर एक शाम दिनेश चंद्र शर्मा के नाम काव्य संध्या का हुआ आयोजन

शायर अहमद अमज़दी बदायूनी एवं समाजसेवी तरुण शर्मा को समाजसेवी दिनेश चंद्र शर्मा स्मृति सम्मान 2025 से किया गया सम्मानित।

बदायूं। गौरव क्लब एवं बदायूं गौरव महोत्सव समिति द्वारा बदायूं गौरव क्लब के संरक्षक समाजसेवी दिनेश चंद्र शर्मा की द्वितीय पुण्यतिथि पर अमन हाउस मोहल्ला चौबे मे एक शाम समाजसेवी दिनेश चंद्र शर्मा के नाम काव्य संध्या एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया ।कार्यक्रम का शुभारम्भ कार्यक्रम के अध्यक्ष शायर अहमद अमज़दी बदायूंनी, मुख्य अथिति समाजसेवी गीता शर्मा एवं भाजपा नेता एवं बदायूं गौरव क्लब के मुख्य सचिव पं अमन मयंक शर्मा ने माँ सरस्वती एवं समाजसेवी दिनेश चंद्र शर्मा के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया ।इसके उपरांत समस्त कवियों ,शायरों एवं उपस्थित जनों ने समाजसेवी दिनेश चंद्र शर्मा के चित्र के समक्ष पुष्पांजलि अर्पित कर उनको नमन किया ।कार्यक्रम में सरस्वती वंदना का पाठ कवि राजवीर तरंग द्वारा किया गया ।इसके उपरांत कार्यक्रम के अध्यक्ष उस्ताद शायर अहमद अमज़दी बदायूंनी ने पड़ा-

काश ऐसा नसीब हो जाए।
वो हमारे क़रीब हो जाए।
प्यार उसका हमें मयस्सर हो।
वो अगर कुछ ग़रीब हो जाए।₹

भाजपा नेता एवं राष्ट्रीय कवि पं अमन मयंक शर्मा ने अपने पिता समाजसेवी दिनेश चंद्र शर्मा को नमन करते हुए पड़ा-₹ गम हो खुशी हो या कोई मौसम हो कष्ट का,मेरी हमेशा ढाल बना आशीर्वाद है ।जिस पथ पे मै चलूँ चले उस पथ पे ही सदा,मेरे पिताजी आप का आशीर्वाद है ।₹

उन्होंने पड़ा-₹चटक धूप सी जिंदगी, नहीं दूर तक छांव।।
बिना पिता जी आपके, जलते मेरे पांव।।₹

कवि सुनील शर्मा समर्थ ने पड़ा-₹
कर्म के आधार पर अधिकार होना चाहिए।
खोखली बातें हों तो प्रतिकार होना चाहिए।
गंध दे मन को सुगंधित पुष्प वह स्वीकार हो,
गर कषैला मन करे धिक्कार होना चाहिए।₹

मशहूर शायर सादिक अलापुरी ने पड़ा-₹
मैने चाहा तुझे उम्र भर जिंदगी
फिर भी चल दी नज़र फेरकर ज़िंदगी।
फिक्र करती है अपने तू आगाज़ पर
क्यूं है अंजाम से बेखबर ज़िंदगी।₹

कवि शैलेन्द्र मिश्रा देव ने पड़ा-₹सिसकियाँ आँसू उदासी में रखा क्या है ,
इश्क़ में पड़ कर किसी को यों मिला क्या है।
आजकल सब पूछते हैं पूछने भर को,
हाल से मेरे किसी को वासता क्या है।₹

शम्स मुजाहिद बदायूनी ने पड़ा-₹हम हिंद के वासी हैं समझते हमे क्या हो,
तफ़रीक करोगे तो कोई सर न बचेगा।₹

कवि राजवीर तरंग ने पड़ा-₹वीरान लग रहा है चमन आपके बिना,
गुलशन में कोई आप से बेहतर नहीं रहा।₹

कवि अचिन मासूम ने पड़ा-"
मेरा बीता हुआ कल है सुनहरा आज है पापा ।
मेरी हर एक कहानी का सुखद आगाज है पापा ।
तुम्हारे बिन अधूरा मैं है तुमसे पूर्णता मेरी ।
मेरे सपनों के पंखों की बड़ी परवाज़ है पापा ।।₹

कवि आकाश पाठक परौली ने समाजसेवी दिनेश चंद शर्मा को याद करते हुए पड़ा-₹ पिता को जान कर देखो, पिता भगवान होता है।
मां का हक देह पर होता, पिता तो प्राण होता है ।इसके अलावा शायर अच्छन मियाँ, कवि मुकेश तोमर ने भी काव्य पाठ किया ।भाजपा नेता एवं बदायूं गौरव क्लब के मुख्य सचिव अमन मयंक शर्मा,

बदायूं गौरव क्लब की महिला अध्यक्ष गीता शर्मा एवं सहसचिव गौरव पाठक ने समस्त कवियों एवं शायरों को
समाजसेवी दिनेश चंद्र शर्मा स्मृति साहित्य रत्न सम्मान से फूलमाला पहनाकर एवं प्रतीक चिन्ह देकर
सम्मानित किया ।भाजपा नेता पं अमन मयंक शर्मा ने समाजसेवी दिनेश चंद्र शर्मा स्मृति सम्मान 2025 की घोषणा करते हुए इस वर्ष का सम्मान साहित्य के क्षेत्र मे उस्ताद शायर अहमद अमज़दी

बदायूंनी एवं समाजसेवा के क्षेत्र में तरुण शर्मा को शाल उड़ाकर ,फूलमाला पहनाकर एवं प्रतीक चिन्ह देकर प्रदान किया एवं सम्मानित किया ।अंत मे

पं अमन मयंक शर्मा ने प्रतिज्ञा लेते हुए कहा कि वह बदायूं गौरव क्लब के संरक्षक समाजसेवी दिनेश चंद्र शर्मा की जयंती एवं पुण्यतिथि पर प्रतिवर्ष साहित्यिक,सामाजिक एवं सांस्कृतिक आयोजन करेंगे।

इस अवसर पर कार्यक्रम की संरक्षक गीता शर्मा,सहसचिव गौरव पाठक
अंजलि मिश्रा,चर्चा पाठक,प्रज्ञा अमन मयंक पाठक,
वैदिक पाठक,नियति मिश्रा,काव्या पाठक ,सुमित शंखधार,अजीत ,रमेश गुप्ता,राधा गुप्ता
सहित प्रबुद्ध जन उपस्थित रहे।
कार्यक्रम का संचालन कवि सुनील शर्मा समर्थ ने किया।

प्रसिद्ध पत्रकार मुहम्मद फारुक अब्दुल कादिर शाह बांदरी को डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया

मुख्य संवाददाता

नूरुल इस्लाम उर्दू हाई स्कूल और जूनियर कॉलेज, शिवाजी नगर गोंडवी, मुंबई में एक भव्य डॉक्टरेट सम्मान समारोह आयोजित किया गया।

हार्वेस्ट मिशन इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी ने अमरावती जिले के एक गतिशील और सक्रिय व्यक्तित्व, भारत के लिए जिम्मेदार और अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के विभिन्न शैक्षिक विभागों से जुड़े प्रोफेसर डॉ .अब्दुल अकील इब्न अब्दुल जब्बार के हाथों प्रसिद्ध पत्रकार मुहम्मद फारूक अब्दुल कादिर शाह बांदरी को डॉक्टरेट की मानद उपाधि प्रदान की।

पत्रकारिता एक महत्वपूर्ण पेशा है. उर्दू के प्रचार-प्रसार और पत्रकारों के कर्तव्यों एवं दायित्वों के निर्वहन में पत्रकारिता की सर्वोच्च सेवाओं से कोई इनकार नहीं कर सकता। हम फारूक साहब की सेवाओं और कर्तव्यों की पूर्ति को नकार नहीं सकते। हम यह भी मानत हे की बडी मुश्किल से होता है चमन में दीदार पैदा.....

विभिन्न मंडलों के शिक्षकों और अन्य कार्यकर्ताओं ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इस कार्यक्रम में साहित्यिक जगत की प्रमुख साहित्यकार शामिल हुए। विभिन्न साहित्यिक एवं शैक्षिक संगठनों ने मोहम्मद फारूक साहब को मानद डॉक्टरेट की उपाधि मिलने पर बधाई दी तथा भविष्य के लिए अपनी शुभकामनाएं एवं हार्दिक प्रार्थनाएं व्यक्त कीं। उनके मित्रों और सहकर्मियों के साथ-साथ देश के विभिन्न भागों के पत्रकारों ने भी उन्हें हार्दिक बधाई दी। यह आपके लिए खुशी और आनंद का विषय है कि आपको एक पत्रकार के रूप में मान्यता और सम्मान दिया गया है, तथा उर्दू भाषा के विकास, प्रचार, विस्तार और प्रकाशन के लिए आपकी सेवाओं को मान्यता दी गई है। हम उन्हे इस अवसर पर बधाई और शुभकामनाये देते है।

जाति आधारित जनगणना न्यायपूर्ण शासन और संसाधनों के उचित वितरण

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। जमीयत उलेमा-ए-हिंद के अध्यक्ष मौलाना महमूद असअद मदनी ने एक महत्वपूर्ण बयान जारी करते हुए देश में होने वाली जाति आधारित जनगणना का जोरदार समर्थन किया है। उन्होंने आशा व्यक्त की है कि यह प्रक्रिया न्यायपूर्ण शासन, सही नीति निर्माण और संसाधनों के समान वितरण को सुनिश्चित करेगी।

मौलाना मदनी ने कहा कि जाति आधारित जनगणना अब केवल एक सरकारी औपचारिकता नहीं रही, बल्कि यह एक सामाजिक और राजनीतिक आवश्यकता बन चुकी है। इससे मिलने वाले आंकड़े आरक्षण नीति, सामाजिक विकास योजनाओं और कल्याणकारी लाभों के निष्पक्ष वितरण पर सीधा प्रभाव डालेंगे।

इस संदर्भ में मौलाना मदनी ने देश के सभी मुसलमानों से अपील की है कि वे इस जनगणना प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लें। हर मुस्लिम परिवार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनकी प्रचलित जाति की पहचान सही तरीके से दर्ज हो। जमीयत उलेमा-ए-हिंद की स्थानीय इकाइयों, सभी मुस्लिम संगठनों, धार्मिक संस्थाओं और समुदाय के नेताओं से अनुरोध किया गया है कि वे आम लोगों का मार्गदर्शन करें और उन्हें इस प्रक्रिया के दीर्घकालिक प्रभावों से अवगत कराएं।

मौलाना मदनी ने यह भी स्पष्ट किया कि यह कदम इस्लामी बराबरी के सिद्धांतों के खिलाफ नहीं है, बल्कि यह एक व्यावहारिक आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि यद्यपि इस्लाम एक समानता-आधारित समाज का समर्थन करता है, लेकिन भारत में मुसलमानों का एक बड़ा हिस्सा सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़ा रह गया है।

अब समय आ गया है कि हम इसे एक नैतिक और संवैधानिक कर्तव्य समझकर, सबसे अधिक वंचित तबकों—विशेषकर पिछड़े और कमजोर मुसलमानों—को न्याय दिलाने का प्रयास करें।

हम भारत सरकार से मांग करते हैं कि जाति आधारित जनगणना में पारदर्शिता, निष्पक्षता और गंभीरता से कार्य किया जाए और किसी भी समुदाय के साथ भेदभाव न किया जाए।

नीज़ अहमद फारूकी
सचिव, जमीयत उलेमा-ए-हिंद

रंगदारी के लिए व्यवसायी पर हमला करने वाला शातिर गोविंद नगर पुलिस से मुठभेड़ में गिरफ्तार

सुनील बाजपेई

कानपुर। कानून और शांति व्यवस्था के पक्ष में अपराधियों के खिलाफ लगातार सफल मोर्चा खोले पुलिस कमिश्नर अखिल कुमार की अगुवाई वाली कमिश्नरेट पुलिस ने दक्षिणी क्षेत्र के गोविंद नगर में मुठभेड़ के दौरान शातिर अपराधी को पर में गोली लगने के बाद गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त कर ली। उसके पास से तमंचा कारतूस और मोटरसाइकिल भी बरामद की गई है। अब पुलिस मौके से फरार हुए उसके साथी की भी तलाश कर रही है।

अवगत कराते चलें कि बीती 8 जून को इसी शातिर अपराधी ने अपने साथी के साथ मिलकर बिल्हौर में आभूषणों की दुकान खोले थाना गोविंद नगर क्षेत्रान्तर्गत रहने वाले एक प्रतिष्ठित व्यापारी अनिल गुप्ता पर दुकान बंद कर कार से घर लौटते समय 50 लाख की रंगदारी की मांग को लेकर न केवल उनका पीछा किया था बल्कि एक दो बार कॉल करने के साथ ही गोलियां चलाकर जानलेवा हमला भी किया था।

इस गंभीर प्रकरण के दृष्टिगत थाना गोविंद नगर में सुसंगत धाराओं के तहत अभियोग पंजीकृत कर तत्काल प्रभाव से पुलिस आयुक्त अखिल कुमार के निर्देशन में गठन कर चार विशेष टीमों क्राइम ब्रांच मुख्यालय, दक्षिण जोन क्राइम ब्रांच, सर्विलांस तथा थाना गोविंद नगर पुलिस को लगाया गया था।

इस बीच गोविंद नगर के प्रभारी निरीक्षक इंस्पेक्टर प्रदीप कुमार सिंह की अगुवाई में ,अतिरिक्त इंस्पेक्टर अभय सिंह रतन लाल नगर चौकी प्रभारी मनीष चौहान, मिल्क बोर्ड प्रभारी मोहित राणा, रेलवे कॉलोनी प्रभारी धन सिंह ,गोविंद नगर चौकी प्रभारी शिवा सिंह, उप निरीक्षक रवीश सिंह, अजय कुमार, अमित फौजदार मनीष सिंह, गुरशरण दुबे कांस्टेबल गौरव और विष्णु कुमार की टीम सीसीटीवी कैमरों के साथ ही सर्विलांस के जरिए भी बदमाशों का लोकेशन पता लगाने में जुटी रही अंततः इस परिश्रम का परिणाम तब सामने आया जब बड़ी वारदात को अंजाम देने की सूचना पर रोकने के बावजूद भी मोटरसाइकिल से भागने के दौरान बचने के लिए इंस्पेक्टर प्रदीप कुमार सिंह की अगुवाई वाली टीम पर इस अपराधी और उसके साथी ने हत्या के इरादे से फायरिंग शुरू कर दी ,जिसके जवाब में पुलिस द्वारा चलाई गई गोली पैर में लगने से मोटरसाइकिल समेत गिरने पर दक्षिण क्राइम ब्रांच एवं गोविंद नगर पुलिस ने अनुज तिवारी पुत्र हरवंश तिवारी निवासी आनंद नगर, थाना रावतपुर को तमंचे और कारतूसों समेत गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त कर ली। अब पुलिस 50 लाख की रंगदारी के लिए व्यापारी पर गोली चलाने की घटना में संलिप्तता स्वीकार करने वाले मुठभेड़ में गिरफ्तार अपराधी अनुज तिवारी के फरार साथी छोटू की भी तलाश कर रही है।

मुठभेड़ की सूचना मिलने पर दक्षिण के अपराधियों पर शिकंजा करने में लगातार जुटे डीसीपी दीपेन्द्र नाथ चौधरी ने भी घटनास्थल का निरीक्षण करते हुए आरोपी को मुठभेड़ में गिरफ्तार करने वाले पुलिस कर्मियों का उत्साह वर्धन भी किया। माना जा रहा है कि इस साहसिक कार्रवाई से व्यापारिक समुदाय में व्याप्त भय एवं आक्रोश का वातावरण समाप्त होगा।

कुल मिलाकर सफल नेतृत्व कुशलता वाले तेजतर्रार और व्यवहार कुशल पुलिस कमिश्नर अखिल कुमार की अगुवाई वाली यह कार्यवाही कमिश्नरेट पुलिस की तत्परता, सजगता एवं दृढ़ संकल्प का भी विशुद्ध प्रगाढ़ परिचायक भी है। जिसके तहत स्पष्ट संदेश भी दिया गया है कि कानून व्यवस्था से खिलवाड़ करने वालों के विरुद्ध कठोरतम कार्रवाई की जाएगी।

इजरायल ईरान सैन्य टकराव खतरनाक मोड़ पर पहुंचा-दुनियाँ दो गुटों में बटनें की ओर बढ़ी- तीसरे विश्व युद्ध की आहट ?

इजरायल-ईरान युद्ध में परमाणु हथियारों की चर्चा पर दुनियाँ सहमीं
इजरायल-ईरान दोनों के पीछे खड़ी ताकतों द्वारा अंधा समर्थन बंद कर,समझौते से युद्ध विराम करना जरूरी, वरना यह आग़ मिडल ईस्ट से पूरी दुनियाँ में फैलेगी -एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर वर्तमान समय में दो दो देशों में बहुत लंबे समय से चल रहे युद्ध के पीछे चल रही ताकतों को सब जानते हैं, क्योंकि कोई भी देश क़े लिए सिर्फ अपने अकेले के बल पर इतनी ताकत से लंबी लड़ाई लड़ना संभव नहीं है, हालांकि सब जानते हैं कि इन युद्धों के पीछे कौन सी ताकत है खड़ी है ? मेरा मानना है कि इन ताकतों को अपने स्टेटस को छोड़कर, दो-दो कदम आगे पीछे होकर मामला उलझा कर युद्ध विराम को प्राथमिकता देना जरूरी है, वरना किसी भी देश ने परमाणु वेपंस के इस्तेमाल की शुरुआत की तो लपेटेमें पूरी दुनियाँ आ जाएगी, जिसका परिणाम हिरोशिमा नागासाकी से भी भयंकर आने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता ।इसलिए मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र से इस आर्टिकल के माध्यम से पर्दे के पीछे सभी देशों, गुटों से अनुरोध करना चाहूंगा कि वह अंध समर्थन बंद कर सुलह का रास्ता निकालकर इजरायल- ईरान- हमास, रूस-यूक्रेन सहित अनेकों देशों में आपसी टकराव को सुलझाने के लिए आगे आए ताकि पूरी दुनियाँ एक जंग का अखाड़ा ना बन सके, क्योंकि कुछ देश खुलकर समर्थन में आ रहे हैं तो कुछ देशों ने पर्दे के पीछे समर्थन देकर लड़ाई करने वाले देशों को बढ़ावा दे रहे हैं, मेरा मानना है इसे बंद कर शांति की ओर कदम बढ़ाना चाहिए। हमारे पीएम साहब भी हमेशा यही अपील करते रहते हैं। परमाणु वेपंस का उपयोग हुआ तो मेरे विचार से पूरी दुनियाँ दहल जाएगी। इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, इजरायल ईरान सैन्य टकराव खतरनाक मोड़ पर पहुंच ?दुनियाँ दो गुटों में बंटने की ओर बढ़ी, तीसरे विश्व युद्ध की आहट ?

साथियों बात अगर हम इजरायल ईरान युद्ध की करें तो दोनों देशों के बीच तनाव चरम पर पहुंच चुकाहै,इजरायल और ईरान के बीच 13-14 जून 2025 को शुरू हुआ सैन्य टकराव अब खतरनाक मोड़ पर पहुंच चुका है, इजरायल की ओर से तेहरान में परमाणु सुविधाओं और सैन्य ठिकानों पर किए गए हवाई हमलों ने ईरान को भारी नुकसान पहुंचाया,जबकि ईरान ने जवाबी कार्रवाई में इजरायल के तेल अवीव, हाइफा और बेन गुरियन एयरपोर्ट पर बैलिस्टिक मिसाइलें और ड्रोन हमले किए। इजरायल और ईरान के बीच जारी संघर्ष हर बीतते घंटे के साथ और बढ़ता जा रहा है,सोमवार देर शाम को इजरायल ने एक बार फिर मध्य ईरान पर हवाई हमले किए, इधर ईरान ने भी इजरायल पर अब तक लगभग 400 बैलेस्टिक मिसाइलें दागने का दावा किया है, वहीं एक न्यूज से इजरायल के पीएम ने कहा है कि खामेनेई के खात्मे के साथ ही क्षेत्र में शांति आएगी। इजराइल और ईरान के बीच लगातार चौथे दिन संघर्ष जारी है। इजराइल ने सोमवार शाम सेंट्रल ईरान पर फिर से एयरस्ट्राइक की।

इजराइल एयरफोर्स ने ईरानी की राजधानी तेहरान में नेशनल टीवी न्यूज चैनल इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ ईरान ब्रॉडकास्टिंग की बिल्डिंग पर बम गिराए।घटना के समय टीवी एंकर लाइव शो होस्ट कर रही थी। वह बम धमाके में बाल-बाल बच गई। घटना का वीडियो भी सामने आया, जिसमें एंकर को स्टूडियो से भागते हुए देखा गया।

साथियों बात अगर हम इजरायल -ईरान के भयावह होते युद्ध को हम 10 प्वाइंटों में समझने की करें तो (1) इजरायल और ईरान के बीच तनाव चरम पर है और दोनों देशों के बीच युद्ध जारी है,इजरायल ने ईरान पर बड़ा हमला किया, जिसमें ईरान के परमाणु ठिकानों और सैन्य प्रतिष्ठानों को निशाना बनाया गया. ईरान ने इजरायल के हमले का जवाब देने के लिए ऑपरेशन ट्रू प्रॉमिस लॉन्च किया है, इसके तहत ईरान ने इजरायल पर 100 से अधिक बैलिस्टिक मिसाइलें दागीं, इजरायल की सेना ने अपने नागरिकों से आग्रह किया है कि वे सुरक्षित स्थानों पर शरण लें, (2) वहीं, रविवार को एक बार फिर इजरायल के आसमान में ईरानी मिसाइलों की बौछार हुई, जबकि दोनों देशों के बीच संघर्ष जारी है, इजरायल की सेना ने कहा कि ईरान की मिसाइलें आ रही हैं, यरुशलम में सायरन की आवाजें सुनाई दे रही हैं, जबकि कई वीडियो में तेल अवीव और यरुशलम के आसमान पर मिसाइलें दिखाई दे रही हैं और उनमें से कई को इजरायल की वायु रक्षा प्रणाली द्वारा रोक दिया गया है, (3) ईरान ने शिराज शहर से इजरायल पर बैलिस्टिक मिसाइलों की बारिश कर दी है, जिससे उत्तर में हाइफ़ा से लेकर दक्षिण में ईलाट तक लगभग पूरे इज़राजल में रेड अलर्ट जारी किया गया. तेल अवीव, यरुशलम, बेयर शेवा, हाइफ़ा और दर्जनों अन्य शहरों में हवाई हमले के सायरन की आवाज सुनी गईं, (4) सेना ने कहा है कि ईरानी मिसाइलों की बौछार से इजरायल में कई जगहों पर हमला हुआ है. आरटी इंटरनेशनल की एक पोस्ट के अनुसार, ईरान के हमलों के बाद हाइफा शहर में भीषण आग देखी गई,इसने अनाम इजरायली अधिकारियों के हवाले से बताया कि अब तक इस हमले में चार लोग घायल हुए हैं, (5) ईरान में भी नज़ारा कुछ अलग नहीं है. तेहरान से आई तस्वीरों में रात के समय आसमान में ईंधन डिपो में लगी आग की लपटें दिखाई दे रही हैं। यह आग इजरायल द्वारा ईरान के तेल और गैस क्षेत्र पर हमले शुरू करने के बाद लगी है, इससे वैश्विक अर्थव्यवस्था और ईरानी राज्य के कामकाज पर खतरा बढ़ गया है। (6) ईरान ने शनिवार की देर रात तेल अवीव द्वारा ईरानी परमाणु संयंत्रों, मिसाइल कारखानों और सैन्य कमांड केंद्रों पर किए गए हमले के जवाब में इजरायल के हाइफा पोर्ट और पास की एक तेल रिफाइनरी को निशाना बनाया, हवाई हमलों में शीर्ष सैन्य कमांडर और परमाणु वैज्ञानिक मारे गए। (7) हाइफा शहर के स्काईलाइन पर मिसाइलें नजर आईं, जिससे वहां के लोग दहशत में थे, ईरान लगातार बैलिस्टिक मिसाइलें और ड्रोन से हमला करता रहा और इजरायल का एयर डिफेंस सिस्टम आयरन डोम इन मिसाइलों को हवा में ही इंटरसेप्ट करने में जुट गया, (8) पोर्ट पर रासायनिक टर्मिनल में छर्रे गिरे और कुछ अन्य मिसाइल तेल रिफाइनरी पर गिरे, लेकिन पोर्ट की सुविधाओं को कोई नुकसान नहीं हुआ, बताया जाता है कि रिफाइनरी पोर्ट से कुछ दूरी पर है, हाइफा पोर्ट उत्तरी इजरायल में स्थित एक प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय पोर्ट है, जो दक्षिण की तुलना में अपेक्षाकृत कम अस्थिर क्षेत्र है. यह देश के आयात और निर्यात दोनों के लिए एक महत्वपूर्ण पोर्ट है, (9) ईरान द्वारा लगातार दूसरी रात इजरायल पर बैलिस्टिक मिसाइल दागे जाने के बाद तनाव में वृद्धि हुई है. ईरानी सरकारी मीडिया ने दावा किया है कि हाइफा तेल रिफाइनरी पर सीधा हमला हुआ है, जिससे उत्तरी पोर्ट शहर के पास भीषण आग लग गई, मिसाइल हमला हाइफा के पास तमरा में एक आवासीय इमारत पर हुआ, जिसमें तीन लोगों की मौत हो गई और कम से कम 14 अन्य घायल हो गए, (10) इजरायल और ईरान ने रविवार रात को एक-दूसरे पर फिर से हमले किए, जिसमें कई लोग मारे गए। अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा कि संघर्ष को आसानी से समाप्त किया जा सकता है, उन्होंने तेहरान को किसी भी अमेरिकी लक्ष्य पर हमला न करने की चेतावनी भी दी, वहीं, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि ईरान में हुए हमलों में वाशिंगटन का कोई हाथ नहीं है. हालांकि, तेहरान ने इजरायली हमले में अमेरिका का हाथ होने का आरोप लगाया है और रविवार को ओमान में होने वाली परमाणु वार्ता रद्द कर दी है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि इजरायल ईरान सैन्य टकराव खतरनाक मोड़ पर पहुंचा- दुनियाँ दो गुटों में बटनें की ओर बढ़ी- तीसरे विश्व युद्ध की आहट ? इजरायल-ईरान युद्ध में परमाणु हथियारों की चर्चा पर दुनियाँ सहमीं ।इजरायल-ईरान दोनों के पीछे खड़ी ताकतों द्वारा अंधा समर्थन बंद कर,समझौते से युद्ध विराम करना जरूरी, वरना यह आग़ मिडल ईस्ट से पूरी दुनियाँ में फैलेगी।

सुज़ुकी बर्गमैन 400 पहले से ज्यादा हुआ अट्रैक्टिव, नए कलर के साथ हुआ लॉन्च

परिवहन विशेष न्यूज

सुजुकी ने यूरोप में अपनी लोकप्रिय मैक्सी-स्कूटर 2025 Suzuki Burgman 400 को नए रंगरूप में पेश किया है। इस स्कूटर में 400cc का सिंगल-सिलेंडर इंजन है और यह CVT गियरबॉक्स के साथ आता है। नए मॉडल में LCD स्क्रीन ट्रैक्शन कंट्रोल LED हेडलैंप जैसे कई आधुनिक फीचर्स दिए गए हैं। 2025 Suzuki Burgman 400 को तीन नए आकर्षक रंगों में पेश किया गया है जो इसे स्पोर्टी लुक देते हैं।

नई दिल्ली। सुजुकी ने अपनी पॉपुलर मैक्सी-स्कूटर 2025 Suzuki Burgman 400 को यूरोप में पेश किया है। इसमें किसी तरह का मैकेनिकल बदलाव नहीं किया गया है, लेकिन इसे नए और अट्रैक्टिव कलर के साथ पेश किया गया है। आइए बर्गमैन 400 के 2025 मॉडल के डिज़ाइन, इंजन और फीचर्स के बारे में जानते हैं और यह भी जानते हैं कि भारत में इसे कब लॉन्च किया जाएगा?

2025 Suzuki Burgman 400 का नया लुक

2025 बर्गमैन 400 को तीन नए कलर के साथ पेश किया गया है, जो इसे स्पोर्टी लुक देते हैं। इमें सुनहरे पहियों के साथ पर्ल मैट शैडो ग्रीन, काले रंग में सुनहरे पहियों के साथ ब्लैक विद गोल्डन रिम्स, और स्कूटर को स्पोर्टी और एनर्जेटिक वाइब के लिए ब्राइट मेटालिक ब्लू कलर दिया गया है। इन कलर के अलावा बाकी डिजाइन और फीचर्स वही है, जो पहले इसमें मिलते थे।

2025 Suzuki Burgman 400 का इंजन

इसके इंजन में किसी तरह का अपडेट नहीं किया गया है। इसमें 400cc का सिंगल-सिलेंडर, लिक्विड-कूल्ड इंजन का इस्तेमाल किया जाता है, जो CVT (कंटिन्यूअसली वैरिएबल ट्रांसमिशन) गियरबॉक्स के साथ आता है।

2025 Suzuki Burgman 400 के फीचर्स

इसे कई मॉडर्न फीचर्स के साथ ऑफर किया जाता है, जो इसे एक प्रीमियम स्कूटर बनाते हैं। इममें LCD स्क्रीन के साथ ट्विन-पॉड एनालॉग इंस्ट्रूमेंट कंसोल, स्लिपिंग से बचाने के लिए ट्रैक्शन कंट्रोल सिस्टम, अंडर-सीट स्टोरेज, रात में बेहतर रोशनी के लिए LED हेडलैंप जैसे फीचर्स दिए गए हैं।

2025 Suzuki Burgman 400 का सस्पेंशन

इसमें आगे की तरफ टेलीस्कोपिक, कॉइल सप्रिंग और ऑयल डैम्प्ड सस्पेंशन दिया गया है और पीछे की तरफ लिंक टाइप, सिंगल शॉक, कॉइल सप्रिंग और ऑयल डैम्प्ड सस्पेंशन दिया गया है। ब्रेकिंग के लिए आगे की तरफ ट्विन 260 mm डिस्क और पीछे की तरफ सिंगल 210 mm डिस्क ब्रेक दिया है। इसमें डुअल-चैनल ABS दिया गया है।

हुंडईको फिर पछाड़ महिंद्रा निकली आगे, मारुति पहले नंबर पर बरकरार

परिवहन विशेष न्यूज

मई 2025 में यात्री वाहनों की थोक बिक्री 0.8% घटकर 344656 इकाई रही। दोपहिया वाहनों की बिक्री 2.2% बढ़कर 1655927 इकाई हो गई। सियाम के अनुसार सभी श्रेणियों में वाहनों की थोक बिक्री 1.8% बढ़कर 2012969 इकाई हो गई। राजेश मेनन ने कहा कि यात्री वाहन सेगमेंट में मामूली गिरावट आई है पर कुल बिक्री अच्छी रही। रेपो रेट में कटौती और अच्छे मानसून से ऑटो क्षेत्र को बढ़ावा मिलेगा।

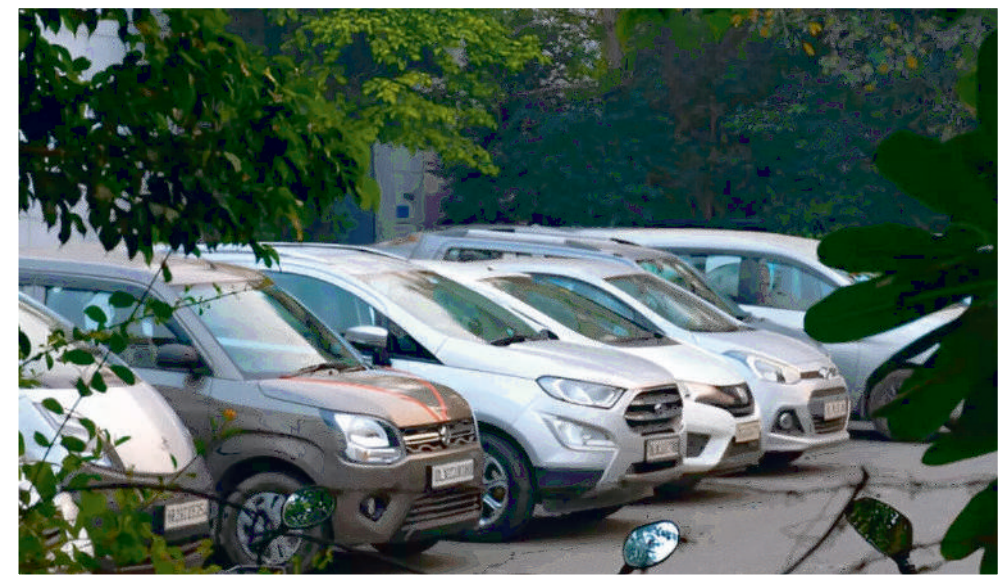

नई दिल्ली। घरेलू यात्री वाहनों की थोक बिक्री इस साल मई में मामूली रूप से 0.8 प्रतिशत घटकर 3,44,656 इकाई रह गई। पिछले साल इसी महीने में यह आंकड़ा 3,47,492 इकाई रहा था। सोसाइटी आफ इंडियन आटोमोबाइल मैन्युफैक्चरर्स (सियाम) द्वारा जारी नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, मई में निर्माताओं से डीलरों को दोपहिया वाहनों की बिक्री 2.2 प्रतिशत बढ़कर 16,55,927 इकाई हो गई, जबकि एक साल पहले इसी महीने यह 16,20,084 इकाई थी। अगर सभी श्रेणियों में वाहनों की थोक बिक्री की बात करें तो यह 1.8 प्रतिशत बढ़कर 20,12,969 इकाई हो गई, जबकि पिछले साल मई में यह 19,76,674 इकाई थी।

चार पहिया वाहनों की बिक्री

सियाम ने कहा कि यात्री वाहन सेगमेंट में मारुति सुजुकी इंडिया की घरेलू बिक्री पिछले महीने 1,35,962 यूनिट रही, जबकि मई 2024 में यह 1,44,002 यूनिट थी। घरेलू वाहन निर्माता महिंद्रा एंड महिंद्रा ने पिछले साल इसी महीने 43,218 यूनिट के मुकाबले 52,431 यूनिट की बिक्री की, जबकि हुंडई मोटर इंडिया ने मई 2024 में 49,151 यूनिट की तुलना में 43,861 यूनिट की घरेलू बिक्री दर्ज की।

दोपहिया वाहनों की बिक्री

दोपहिया वाहन खंड में मोटरसाइकिल की बिक्री पिछले महीने 10,39,156 इकाई पर लगभग स्थिर रही। मई 2024 में यह आंकड़ा 10,38,824 इकाई था। दूसरी ओर, स्कूटर की बिक्री पिछले महीने 7.1 प्रतिशत बढ़कर 5,79,507 इकाई हो गई, जबकि मई 2024 में यह 5,40,866 इकाई थी। सियाम ने कहा कि घरेलू बाजार में कुल तिपहिया वाहनों की बिक्री पिछले महीने 55,763 इकाई की तुलना में 3.3 प्रतिशत घटकर 53,942 इकाई रह गई।

दोपहिया वाहन खंड में मोटरसाइकिल की बिक्री पिछले महीने 10,39,156 इकाई पर लगभग स्थिर रही। मई 2024 में यह आंकड़ा 10,38,824 इकाई था। दूसरी ओर, स्कूटर की बिक्री पिछले महीने 7.1 प्रतिशत बढ़कर 5,79,507 इकाई हो गई, जबकि मई 2024 में यह 5,40,866 इकाई थी। सियाम ने कहा कि घरेलू बाजार में कुल तिपहिया वाहनों की बिक्री पिछले महीने 55,763 इकाई की तुलना में 3.3 प्रतिशत घटकर 53,942 इकाई रह गई।

2025 होंडा XL750 ट्रांसलप भारत में लॉन्च, नए लुक और फीचर्स के साथ हुई और दमदार

परिवहन विशेष न्यूज

होंडा मोटरसाइकिल्स ने भारतीय बाजार में 2025 Honda XL750 Transalp लॉन्च की जिसकी एक्स-शोरूम कीमत 10.99 लाख रुपये है। यह बाइक ऑफ-रोड एडवेंचर और टूरिंग के लिए डिजाइन की गई है। इसमें 755cc का लिक्विड-कूल्ड इंजन है और यह दो रंगों में उपलब्ध है। बुकिंग शुरू हो चुकी है और डिलीवरी जुलाई 2025 से शुरू होने की उम्मीद है। इसमें कई आधुनिक फीचर्स भी दिए गए हैं।

नई दिल्ली। होंडा मोटरसाइकिल्स ने भारतीय बाजार में 2025 Honda XL750 Transalp को लॉन्च कर दिया है। इस बाइक को ऑफ-रोड, एडवेंचर, और टूरिंग के लिए डिजाइन किया गया है। इसे 10.99 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में लॉन्च किया गया है। इसे आप सड़क और ऑफ-रोड दोनों जगह पर आसानी से चला सकते हैं। इसके लॉन्च होने के साथ ही होंडा के बिगविंग डीलरशिप्स पर इसकी बुकिंग भी शुरू कर दी गई है और डिलीवरी जुलाई 2025 से शुरू की जा सकती है। आइए 2025 XL750 ट्रांसअल्प के डिजाइन, इंजन और खास फीचर्स के बारे में विस्तार से जानते हैं।

2025 Honda XL750 Transalp का डिजाइन

इसे नया और मॉडर्न लुक दिया गया है, जिसकी वजह से यह पिछले मॉडल से ज्यादा बेहतरीन दिखाई देती है। इसमें नया नया विंडस्क्रीन, ट्विन LED क्लस्टर के साथ रिफ्रेश्ड हेडलाइट, दोनों पहियों पर सुनहरे रंग के फिनिश के साथ वायर-स्पोक व्हील्स दिए गए हैं। इसे रॉस व्हाइट और ग्रेफाइट ब्लैक कलर ऑप्शन में पेश किया गया है।

2025 Honda XL750 Transalp का इंजन

इसमें 755cc का लिक्विड-कूल्ड, पैरलल-ट्विन इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 91.77 PS पावर और 75 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को राइड-बाय-वायर थ्रॉटल और 6-स्पीड गियरबॉक्स के साथ जोड़ा गया है। इसमें स्लिप-एंड-असिस्ट क्लच भी दिया गया है। इस इंजन को ट्रांसअल्प के लिए इसे खास तौर पर ट्यून किया गया है। इसके इंजन में हल्का बदलाव किया गया है, जो इस बाइक को लो-एंड ग्रंट और मिड-रेंज ड्राइव में बेहतर बनाते हैं।

2025 Honda XL750 Transalp का सस्पेंशन

इस बाइक में दोनों वायर-स्पोक और ट्यूब्ड टायर्स के साथ 21-इंच फ्रंट व्हील और 18-इंच रियर व्हील दिए गए हैं। फ्रंट में बेहतर कंट्रोल के लिए शोवा 43mm इनवर्टेड फोर्क, रियर लिंक-टाइप मोनोशॉक दिया गया है। इसमें सस्पेंशन को ऑफ-रोड परफॉर्मेंस के लिए खास तौर पर ट्यून किया गया है। ब्रेकिंग के लिए 310mm डुअल फ्रंट डिस्क और 256mm रियर डिस्क के साथ डुअल-चैनल ABS दिया गया है।

2025 Honda XL750 Transalp के फीचर्स

होंडा की इस मोटरसाइकिल में 5.0-इंच कलर TFT कंसोल, स्मार्टफोन कनेक्टिविटी, टर्न-बाय-टर्न नेविगेशन, म्यूजिक, कॉल, और SMS अलर्ट, बैकलिट स्विचगियर, ऑटोमैटिक टर्न सिग्नल कैंसिलेशन और स्विचेबल ट्रैक्शन कंट्रोल जैसे फीचर्स दिए गए हैं। इसमें 5 राइडिंग मोड भी मिलते हैं, जो स्पोर्ट, स्टैंडर्ड, रेन, ग्रेवल और यूजर मोड है।

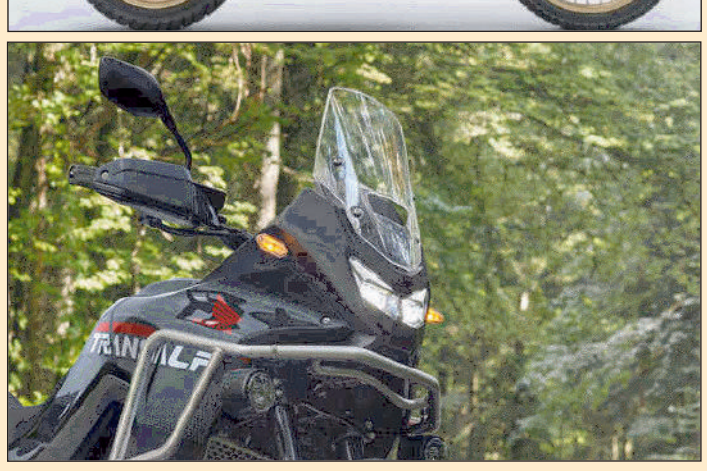

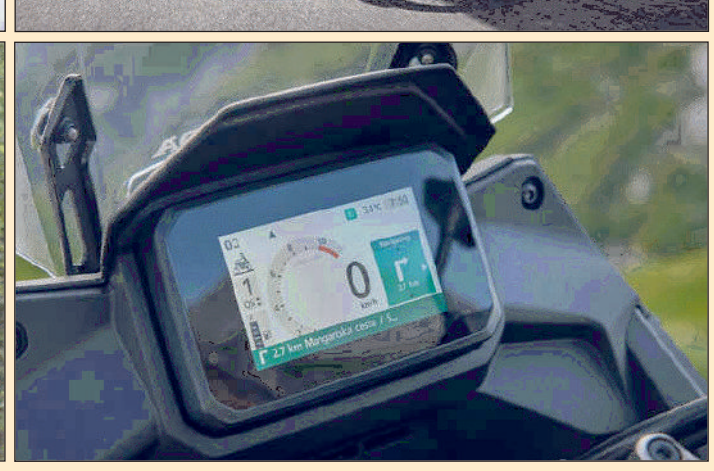

जल्द खुलेगा भारत का पहला ऑटोमोटिव डिजाइन स्कूल; नितिन गडकरी ने रखी आधारशिला, 2026 से शुरू होगा संचालन

परिवहन विशेष न्यूज

भारत का पहला ऑटोमोटिव डिजाइन स्कूल इंडियन स्कूल फॉर डिजाइन ऑफ ऑटोमोबाइल्स (INDEA) की आधारशिला रखी गई है। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने इसे वर्चुअल रूप से स्थापित किया जिसका संचालन 2026 से शुरू होगा। XLRI के सहयोग से विकसित यह स्कूल भारतीय ऑटोमोटिव सेक्टर को नई दिशा देगा। यहाँ छात्रों को पारंपरिक शिक्षा से अलग प्रैक्टिकल अनुभव पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा जिससे वे डिजाइन में नवाचार कर सकेंगे।

नई दिल्ली। भारत का पहला ऑटोमोटिव डिजाइन स्कूल इंडियन स्कूल फॉर डिजाइन ऑफ ऑटोमोबाइल्स (INDEA) की आधारशिला रखी गई। इसकी आधारशिला को केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने वर्चुअल तरीके से रखी। इसका कामकाज साल 2026 से शुरू किया जाएगा। यह स्कूल XLRI के सेंटर फॉर ऑटोमोबाइल डिजाइन एंड मैनेजमेंट (XADM) के सहयोग से डेवलप किया जा रहा है। INDEA के संस्थापक और XADM के चेयरपर्सन अविक चट्टोपाध्याय का मानना है कि यह स्कूल भारतीय ऑटोमोटिव सेक्टर के लिए एक अनोखी डिजाइन दर्शन को जन्म देगा। आइए इस स्कूल के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, और भविष्य की योजनाओं के बारे में विस्तार से जानते हैं।

INDEA की शुरुआत

XLRI दिल्ली-NCR कैंपस में INDEA की भूमि पूजन और नींव रखने की समारोह 16 जून 2025 को हुआ। इस दौरान केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी, XLRI दिल्ली-NCR के डायरेक्टर KS कसीमिर, और अविक चट्टोपाध्याय वर्चुअल रूप से मौजूद रहे। इस कॉलेज का लक्ष्य पारंपरिक कक्षा आधारित शिक्षा से हटकर एक वर्किंग स्टूडियो के रूप में काम करना है, जहां पर छात्रों को प्रैक्टिकल एक्सपीरिएंस दिया जाएगा।

कैसा होगा स्लेबस?

INDEA का स्लेबस काफी अलग है। अविक चट्टोपाध्याय ने बताया कि यहां कोई पारंपरिक कक्षा नहीं होगी, बल्कि एक बड़ा हॉल होगा जहां 25 छात्र बैठेंगे। बाकी समय वे क्ले मॉडलिंग एरिया, CAD-CAM लैब, प्रोटोटाइप वर्कशॉप, या एडिटिव मैन्युफैक्चरिंग लैब में काम करेंगे। उनके स्लेबस में हैंड ड्रॉइंग, CAD (कंप्यूटर-एडेड डिजाइन), 3D मॉडलिंग, स्केल, 1:1 क्ले मॉडलिंग और प्रोटोटाइपिंग तक शामिल है।

यहां पर छात्रों को कोर्स डिजाइन और मैनेजमेंट को मिलाकर सिखाया जाएगा। छात्रों को डिजाइन सिखाने का काम जापान, जर्मनी, और भारत के डिजाइन स्पेसलिस्ट करेंगे। कोर्स के आखिरी में सभी छात्र मिलकर एक वर्किंग प्रोटोटाइप बनाएंगे, जिसे दुनिया के सामने पेश किया जाएगा।

ऑटोमोटिव डिजाइन में एक अनोखी पहचान

अविक चट्टोपाध्याय का मानना है कि केवल मेक इन इंडिया से काम नहीं चलेगा, इसके लिए डिजाइन इन इंडिया भी जरूरी है। जब तक हम डिजाइन को निवेश के रूप में नहीं देखेंगे, इसे खर्च समझते रहेंगे। प्रोडक्शन इंजीनियरिंग या नई असेंबली लाइन को निवेश माना जाता है, तो डिजाइन को क्यों नहीं? भारत अपनी ऑटोमोटिव डिजाइन में एक अनोखी पहचान बनाए, जो आने वाले तीन दशकों में इंडियन डिजाइन DNA के रूप में सामने आए।

इसके साथ ही उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति में वास्तुकला, भोजन, संगीत, कला, और कपड़ों में गहरी सौंदर्यबोध है, तो फिर वाहनों में क्यों नहीं? डिजाइन को ओवरली इंडियन नहीं दिखना चाहिए, लेकिन इसमें भारतीयता की बारीक छाप होनी चाहिए—जैसे इंटीरियर डिजाइन या इस्तेमाल की जाने वाली फैब्रिक्स में। वह इटली के ऑटोमोटिव डिजाइन से प्रेरणा लेते हैं, जहां फेरारी या लैम्बोर्गिनी के लोगो हटाने के बाद भी लोग इसे इटालियन डिजाइन के रूप में पहचान लेते हैं। इसी तरह, भारत को भी एक विशिष्ट डिजाइन लैंग्वेज डेवलप करनी चाहिए।

इसके साथ ही उन्होंने कहा कि अच्छा डिजाइन महंगा नहीं, बल्कि लाभकारी होता है। वे तमाम पंच की मिसाल देते हैं, जिसकी बिक्री डिजाइन के कारण होती है चाहे वह बाहर का लुक हो या अंदर का इंटीरियर। अगर सही निवेश हो, तो डिजाइन से मुनाफा बढ़ता है।

दुनिया के सबसे एडवांस फाइटर जेट F-35 की सुरक्षा कर रही महिंद्रा की गाड़ी, इन फीचर्स से है लैस

परिवहन विशेष न्यूज

हाल ही में ब्रिटेन के F-35B स्टील्थ फाइटर जेट ने तिरुवनंतपुरम एयरपोर्ट पर इमरजेंसी लैंडिंग की। ईंधन की कमी के कारण हुई इस लैंडिंग के बाद जेट की सुरक्षा CISF और महिंद्रा मार्क्समैन को सौंपी गई। महिंद्रा मार्क्समैन B6 स्तर की बैलिस्टिक सुरक्षा से लैस है और इसमें 4x4 व्हील ड्राइव है। तकनीकी खराबी के संदेह के चलते विमान को 48 घंटे तक जमीन पर रखा गया।

नई दिल्ली। हाल ही में केरल के तिरुवनंतपुरम एयरपोर्ट पर ब्रिटेन का F-35B स्टील्थ फाइटर जेट ने लैंडिंग की है। यह दुनिया के सबसे महंगे और एडवांस्ड फाइटर जेट्स में से एक है। इस फाइटर जेट की सुरक्षा की कमान CISF के साथ ही Mahindra Marksman को मिली है। यह मार्क्समैन फाइटर जेट की सेफ्टी को बरकरार रखने के लिए CISF की मदद कर रही है। आइए जानते हैं कि आखिर ऐसा क्या हुआ कि F-35B स्टील्थ फाइटर जेट को भारत में लैंड करना पड़ा और महिंद्रा मार्क्समैन किन फीचर्स के साथ आती है?

क्यों करनी पड़ी इमरजेंसी लैंडिंग?

HMS Prince of Wales कैरियर स्ट्राइक ग्रुप का F-35B जेट इंडो-पैसिफिक में भारत और ब्रिटेन की साझा नौसेना अभ्यास के बाद उड़ान भर रहा था। इस उड़ान के दौरान फ्यूल कम हो जाने के कारण इसे इमरजेंसी लैंडिंग करनी पड़ी। इस घटना को सामान्य मानी गई, लेकिन सैन्य जानकारों के अनुसार पूरी तरह से अभूतपूर्व नहीं है। लैंडिंग के बाद तकनीकी खराबी के संदेह के चलते F-35B को 48 घंटों तक जमीन पर ही रखा गया। इस दौरान जेट की सुरक्षा के लिए CISF के साथ Mahindra Marksman को तैनात किया गया है।

Mahindra Marksman की खुबियां

महिंद्रा मार्क्समैन B6 स्तर की बैलिस्टिक सुरक्षा कवच के साथ आती है। इसमें 2.2-लीटर mHawk डीजल या 2.6-लीटर डीजल इंजन के साथ पेश किया जाता है। इसे 4x4 व्हील ड्राइव के साथ 5-स्पीड मैनुअल गियरबॉक्स दिया जाता है। इसमें कई तरह की सुरक्षा सुविधाएं मिलती है। इसमें बहु-स्तरित बुलेटप्रूफ ग्लास, छत हैच, और इंजन, बैटरी और ईंधन टैंक के लिए सुरक्षा दी जाती है। साथ ही सैटेलाइट संचार प्रणाली, अग्नि शमन प्रणाली, रिमोट-नियंत्रित हथियार प्रणाली, लेजर रेंज फाइंडर, रियरव्यू कैमरा और ड्राइवर के लिए एलसीडी स्क्रीन भी दी गई है। इसमें मशीन गन माउंट और फायरिंग पोर्ट के साथ कपोला भी दिया जाता है। Marksman का इस्तेमाल इंडियन स्पेशल फोर्सेस करती है।

महिंद्रा मार्क्समैन B6 स्तर की बैलिस्टिक सुरक्षा कवच के साथ आती है। इसमें 2.2-लीटर mHawk डीजल या 2.6-लीटर डीजल इंजन के साथ पेश किया जाता है। इसे 4x4 व्हील ड्राइव के साथ 5-स्पीड मैनुअल गियरबॉक्स दिया जाता है। इसमें कई तरह की सुरक्षा सुविधाएं मिलती है। इसमें बहु-स्तरित बुलेटप्रूफ ग्लास, छत हैच, और इंजन, बैटरी और ईंधन टैंक के लिए सुरक्षा दी जाती है। साथ ही सैटेलाइट संचार प्रणाली, अग्नि शमन प्रणाली, रिमोट-नियंत्रित हथियार प्रणाली, लेजर रेंज फाइंडर, रियरव्यू कैमरा और ड्राइवर के लिए एलसीडी स्क्रीन भी दी गई है। इसमें मशीन गन माउंट और फायरिंग पोर्ट के साथ कपोला भी दिया जाता है। Marksman का इस्तेमाल इंडियन स्पेशल फोर्सेस करती है।

भारत की महिला योद्धाओं की अनकही कहानी

विजय गर्ग

परंपरागत रूप से, सभ्यताओं में, महिलाओं ने युद्धों और लड़ाइयों में प्रत्यक्ष भूमिका नहीं निभाई है। प्रारंभिक समाजों में, महिलाओं के संरक्षण और सुरक्षा को समुदायों के अस्तित्व और निरंतरता के लिए महत्वपूर्ण माना जाता था। फिर भी इतिहास कई शक्तिशाली अपवाद प्रदान करता है - जिन महिलाओं ने सम्मेलन को परिभाषित किया और खुद को असाधारण योद्धा साबित किया।

उदाहरण के लिए, अमेज़ोन्स, ग्रीक पौराणिक कथाओं में महिला योद्धाओं की पौराणिक जनजाति, अपने तीरंदाजी, सवारी कौशल और युद्ध के मैदान के कौशल के लिए मनाया जाता है। घर के करीब, ऋग्वेद में विश्पाला का उल्लेख है, एक योद्धा जो लड़ाई में अपने अंग को खोने के बाद एक कृत्रिम पैर से मुकाबला करने के लिए लौटा था - लचीलापन और साहस का एक वसीयतनामा। भारतीय परंपरा शक्ति को प्रकट करती है, जो माँ दुर्गा के रूप में सन्निहित है, हथियारों से लैस योद्धा देवी और शेर पर चढ़कर - अपने सबसे शक्तिशाली रूप में स्त्री शक्ति का प्रतीक है।

हाल की शताब्दियों में, माई भगो कौर और रानी दुर्गावती जैसे आंकड़े मुगल सेनाओं के खिलाफ खड़े थे, जबकि झांसी और किट्टू चेन्नम्मा की रानी लक्ष्मीबाई ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ बहादुरी से लड़ाई लड़ी। ये महिलाएं केवल बाहरी व्यक्ति नहीं थीं - वे ट्रेलब्लेज़र थीं जिनकी विरासत प्रेरणा देती रहती है।

सेना में भारतीय महिलाओं की भागीदारी औपचारिक रूप से ब्रिटिश भारतीय सेना के तहत नर्सिंग सेवाओं में शामिल होने के साथ शुरू हुई। विश्व युद्धों के दौरान हजारों लोगों ने भेद किया। स्वतंत्रता के बाद, 1958 में सशस्त्र बल चिकित्सा कोर में महिलाओं को नियमित कमीशन दिया गया था। तब से, अधिक रास्ते धीरे-धीरे खुल गए हैं। 1992 में, महिलाओं को लघु सेवा आयोग के तहत भारतीय सेना की विभिन्न गैर-चिकित्सा शाखाओं में शामिल किया गया था। 2008 तक, वे कानूनी और शिक्षा कोर में स्थायी कमीशन के लिए पात्र थे, और 2020 में, इस अवसर को आठ और शाखाओं तक बढ़ा दिया गया था। पिछले एक दशक में, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में, सशस्त्र बलों में महिलाओं को शामिल करने को बढ़ावा देने के लिए एक सचेत और ठोस प्रयास किया गया है। प्रतिष्ठित मील के पत्थर - जैसे कि कैप्टन तानिया शेरगिल 2020 गणतंत्र दिवस परेड में एक सभी पुरुष दल का नेतृत्व कर रहे हैं, या लेफ्टिनेंट कर्नल सोफिया कुरैशी एक बहुराष्ट्रीय अभ्यास में एक अखिल पुरुष दल का नेतृत्व कर रहे हैं - ने एक नई पीढ़ी की युवा महिलाओं को वर्दी में करियर बनाने के लिए प्रेरित किया है। महिलाओं को राष्ट्रीय रक्षा अकादमी के उद्घाटन ने एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर चिह्नित किया।

जुलाई 2023 तक, भारतीय सशस्त्र बलों में 4,000 के करीब महिला अधिकारी हैं। मेडिकल कोर सहित, संख्या लगभग 5,800 तक बढ़ जाती है। इसके अतिरिक्त, अन्य रैंकों में लगभग 1,000 महिलाएं और 4,600 महिला नर्सिंग स्टाफ हैं। ये आंकड़े लगातार बढ़ रहे हैं क्योंकि नीतियां व्यापक भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए विकसित होती हैं।

महत्वपूर्ण रूप से, अब पुरुष और महिला अधिकारियों की तैनाती और काम करने की स्थिति में कोई अंतर नहीं है। असाइनमेंट परिचालन आवश्यकताओं पर आधारित हैं, और रोजगार नियम लिंग-तटस्थ हैं, जो पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए समान अवसर सुनिश्चित करते हैं।

आधुनिक युद्ध तेजी से प्रौद्योगिकी संचालित है, और महिलाएं संचार, साइबर युद्ध और खुफिया जैसे डोमेन में महत्वपूर्ण संपत्ति के रूप में उभरी हैं। महिला वैज्ञानिक और इंजीनियर रक्षा प्रौद्योगिकी और नवाचार में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं - नई प्रणाली बनाना, संचालन को परिष्कृत करना और भारत की रक्षा तैयारियों को बढ़ावा देना। वे रोल मॉडल के रूप में काम करते हैं, युवा पीढ़ियों को प्रेरित करते हैं, और पारंपरिक रूढ़ियों को चुनौती देते हैं।

इससे पहले, हम डॉ जैसे अग्रदूतों से प्रेरित थे। भारत के मिसाइल विकास कार्यक्रमों का नेतृत्व करने वाले टेसी थॉमस। आज, हम ऑपरेशन सिंदूर में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली महिलाओं से प्रेरणा लेते हैं - एक मिशन जिसने न केवल एक आतंकी हमले में खोए जीवन का बदला लिया, बल्कि लिंग-समावेशी रक्षा कार्यों में एक मील का पत्थर भी चिह्नित किया।

विंग कमांडर सिंह और कर्नल कुरैशी जैसे दिखने वाले चेहरों से लेकर एकीकृत वायु कमान और नियंत्रण प्रणाली (शकी रीढ़ बनाने वाली कई अनसंग महिलाओं तक, उनके योगदान महत्वपूर्ण थे। आईऐसीसीएस एक उन्नत कमांड और नियंत्रण प्रणाली है जो शत्रुतापूर्ण खतरों का पता लगाने, पहचानने, अवरोधन करने और बेअसर करने के लिए विभिन्न वायु रक्षा परिसंपत्तियों से वास्तविक समय के डेटा को एकीकृत करती है। अनुमान है कि ऑपरेशन सिंदूर में शामिल आईएसीसीएस टीम में महिलाओं ने 25-30 प्रतिशत का गठन किया था. मिशन की सफलता, कई मायनों में, उन लोगों के लिए एक गंभीर सलामी थी, जिन्होंने ड्यूटी के दौरान अपने पति को खो दिया था।

रक्षा में भारत की महिलाओं की कहानी - डीआरडीओ, इसरो या परिचालन कमान में हो - हमारे समय के सबसे सम्मोहक अभी तक बताए गए आख्यानों में से एक है। यह राष्ट्र की सेवा में महत्वपूर्ण पदों पर अधिकार रखने वाली महिलाओं को देखने के लिए हार्दिक है।

नेतृत्व भूमिकाओं में उनकी बढ़ती उपस्थिति केवल प्रतिनिधित्व का मामला नहीं है; यह एक रणनीतिक अनिवार्यता है। उनके सशक्तिकरण के लिए प्रतिबद्ध सरकार के साथ, उनकी भूमिका केवल बढ़ने के लिए तैयार है। जैसा कि भारत समावेशी शक्ति को गले लगाता है, हम अपनी पूर्ण राष्ट्रीय क्षमता को साकार करने के करीब जाते हैं - अपनी बेटियों के संकल्प द्वारा समान रूप से संचालित

कहानी:बिन पते के पहुंची दादी

विजय गर्ग

बहुत देर से पिंटू देख रहा था। एक अम्मा क्रिकेट के मैदान के एक कोने से दूसरे कोने पर आ-जा रही थीं।

उनके सिर पर सामान की गठरी भी थी। शायद वह रास्ता भूल गई थीं। पिंटू से जब रहा न गया तो अपने मित्र जीतू से कहा, 'यार ! चल बूढ़ी अम्मा की मदद करते हैं। बेचारी न जाने कब से भटक रही हैं'।

'हां, बे ! हां, चलते हैं'।

जीतू बोला था। हालांकि उसने बल्लेबाजी वाले पैड पहन रखे थे। उसकी बारी कभी भी आ सकती थी, लेकिन एक बुजुर्ग को परेशान होते हुए देखते भी नहीं बन रहा था। आदर भाव में दोनों अम्मा जी के समक्ष थे। पिंटू ही बोला, 'आंटी जी ! आपको जाना कहां है ?₹

अम्मा जी एकटक उन्हें देखती रह गई। फिर तनिक मुस्कराते हुए बोलीं-

'बच्चो ! मैं आंटी कहां से दिख रही हूं। तुम दादी नहीं बुला सकते ?₹

इस पर दोनों उलझन में पड़ गए। दोनों कुछ कहते इससे पहले वे ही बोलीं, 'बच्चो ! मैं रास्ता भूल गई हूं। मुझे अपने बेटे के घर जाना है। उफ्फ ! जिस कागज के टुकड़े पर पता लिखा था वह मिल नहीं रहा। मैं मथुरा से आई हूं। छह महीनों में सब बदला-बदला सा लग रहा है यहां इस मौजी बाग में। कुछ समझ नहीं आ रहा कि इतने जाने-पहचाने रास्ते को भूल कैसे गई'।

जीतू पूछने लगा, 'दादी जी ! मौजी बाग यहां तीन हैं। आपको कौन से बाग में जाना है। मौजी बाग एक, मौजी बाग दो या साऊथ मौजी बाग ?'

'बेटे ! गुरद्वारा है उधर। सीधे मेन रोड पर ही सरकारी फ्लैट है नीचे का'।

'वो तो ठीक है, दादी जी !' बीच में बोल पड़ा था पिंटू, 'आपके पास कोई पता है नहीं तो पहुंचेंगी कैसे आप ?'

तभी जीतू बल्लेबाजी के लिए चल पड़ा था। उधर अरुण आउट हो कर जब आया तो पूछने लगा, 'क्या बात है ? अम्मा जी को क्या हुआ ?' उसे

पूरी बात बताई गई तो वह तपाक

x से बोल पड़ा, 'अम्मा जी ! हमारे जैसा आपका भी कोई

पोता होगा जो क्रिकिट फिर्किट खेलता होगा'।

इस पर वे बोलीं, 'हां, हां, गोपाल है मेरा पोता। वो भी जबर बैट -बाल खेलता है'।

नाम सुन कर बच्चे असमंजस में थे। एक-दूसरे की शक्ल देख कर चुप थे।

तब अरुण ही बोला, 'वो पढ़ता कहां है, दादी ?'

'पता नहीं, बेटा ! मुझे तो बस इतना ही पता है कि जहां बस खत्म होती है वहां से सीधा जाना है गुरुद्वारे के पास। कम्बख्त, ये मरा पुल कब बन गया। उधर, बेवकूफ बस वाले ने भी यहां किधर उतार दिया मुझे जबकि मैं पहले यहां आती-जाती रही हूं। मगर जरा भी याद नहीं आ रहा कि मुझे किधर जाना है।'

तभी बल्लेबाजी कर रहे एक बच्चे के सिर में जोर से . बाल लगी। वह वहीं तिलमिला

कर गिर गया था। बच्चे आपस में बातें कर रहे थे। बालिंग कर रहा लड़का गायब हो गया था। एक बच्चा बोल पड़ा, 'बाउंसर मारी है'।

तभी एक दूसरे बच्चे ने कहा, 'यार, सर ने बाउंसर के लिए मना किया हुआ है'।

उसी वक्त वो अम्मा जी चिल्लाई, 'अरे बच्चो ! याद आया मेरे गोपाल को भी तो बाक्सर कहते हैं'। 'दादी ! बाक्सर नहीं बाउंसर' अरुण उछल कर बोला था। तब दादी ने तुरंत दोहराया, 'शायद बाउंसर ही।'

'वाह दादी ! बाउंसर को तो

हम खूब अच्छे से जानते हैं। अगर वही आपका पोता है तो चलिए, दादी ! मैंने उसका यानी आपका घर देखा हुआ है। वह हमारे साथ खेलता भी है।'

पांच मिनट में ही वे घर पहुंच गए थे। दादी को अचानक देख गोपाल चीख पड़ा-दादी ! मेरी दादी दादी के चरण स्पर्श कर उसकी नजर पिंटू की ओर गई। अबे, मेरी दादी तुझे कहां मिलीं।'

तब पिंटू ने पूरा किसा सुनाया। फिर जोर से बोला, 'अरे यार, तुझे बाउंसर जो पुकारते हैं, ना। इसी नाम से हम तुझ तक पहुंचे हैं। रास्ते में तेरी दादी भी ठीक कह रही थीं, बेटा, काम ऐसा करो कि लोग तुम्हें नाम से नहीं बल्कि तुम्हारे काम से पुकारें।

सच में बात तो मजेदार है। बाउंसर नाम ने ही दादी को बिना पते के घर पहुंचा दिया था।

कैसे महिलाएं व्यापार नेतृत्व के भविष्य को फिर से आकार दे रही हैं

विजय गर्ग

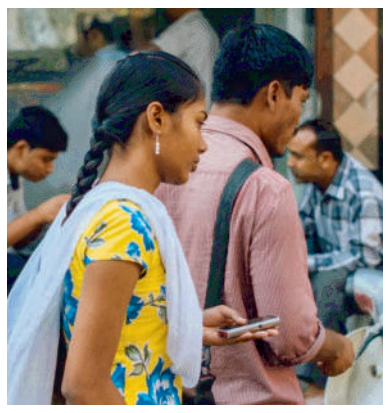

भारत अपने शैक्षिक और पेशेवर परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन देख रहा है, जिसमें मास्टर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन (एमबीए) कार्यक्रमों में महिलाओं की बढ़ती संख्या और कॉर्पोरेट दुनिया में शीर्ष नेतृत्व भूमिकाओं में आगे बढ़ रही है। यह बदलाव न केवल पिछले रुझानों से एक स्वागत योग्य प्रस्थान का प्रतीक है, बल्कि भारतीय व्यवसायों के लिए अधिक समावेशी और गतिशील भविष्य का संकेत भी देता है। ऐतिहासिक रूप से, भारत में व्यावसायिक शिक्षा मुख्य रूप से पुरुष-प्रधान थी। हालांकि, हाल के आंकड़ों में एमबीए कार्यक्रमों में महिलाओं की भागीदारी में लगातार और पर्याप्त वृद्धि पर प्रकाश डाला गया है।

अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद के अनुसार, महिलाओं के पास 2022-23 शैक्षणिक वर्ष में कुल MBA नामांकन का 42.11 प्रतिशत हिस्सा था - 2018-19 में 33 प्रतिशत से एक प्रभावशाली छलांग। कच्ची संख्या में, यह 2018-19 में 78,374 महिलाओं से 2022-23 में 1,20,142 तक की छलांग का प्रतिनिधित्व करता है। यह प्रगति केवल आंकड़ों तक ही सीमित नहीं है। देश के शीर्ष 10 बिजनेस स्कूलों ने बताया है कि उनके 2024 के एमबीए कॉहोर्ट्स में से 50 प्रतिशत या उससे अधिक महिलाएं शामिल हैं, जो लिंग समानता की दिशा में एक उल्लेखनीय कदम है। राज्य स्तर पर भी, जैसे कि महाराष्ट्र में, बदलाव स्पष्ट है। राज्य के कॉमन एंट्रेंस टेस्ट (सीईटी) सेल के आंकड़ों के अनुसार, महिलाएं अब सभी एमबीए छात्रों में से लगभग आधे हैं - एक उल्लेखनीय वृद्धि। जबकि मेट्रो शहर महिलाओं की व्यावसायिक शिक्षा में नेतृत्व करते हैं, टियर 2 और टियर 3 शहर बहुत पीछे नहीं हैं। इंदौर, नासिक और कोयम्बटूर जैसे शहरों में 2020 से एमबीए कार्यक्रमों में दाखिला लेने वाली महिलाओं में 27 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई है, जैसा कि भारत उच्च शिक्षा रिपोर्ट 2023 में उल्लेख किया गया है।

इस विस्तार में क्षेत्रीय व्यावसायिक स्कूल एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। डिजिटल क्रांति ने व्यावसायिक शिक्षा तक पहुंच को भी लोकतांत्रिक बना दिया है। केपीएमजी की एक रिपोर्ट से पता चला है कि 2021 से 2023 के बीच, गैर-मेट्रो शहरों में महिलाओं द्वारा ऑनलाइन एमबीए नामांकन 54 प्रतिशत बढ़ गया, जिससे महिलाओं को स्थानांतरित करने की आवश्यकता के बिना गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंचने की अनुमति मिली - कई लोगों के लिए एक आवश्यक विचार। इस सकारात्मक प्रवृत्ति में कई कारकों ने योगदान दिया है। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक सशक्तिकरण है। एमबीए को वित्तीय स्वतंत्रता और कैरियर की उन्नति के प्रवेश द्वार के रूप में देखा जाता है, जिससे महिलाएं पारंपरिक सामाजिक-आर्थिक बाधाओं को तोड़ सकती हैं। दूसरे, बिजनेस स्कूल अधिक समावेशी होते जा रहे हैं। कई संस्थान अब छात्रवृत्ति, मेंटरशिप प्रोग्राम और विशेष रूप से महिलाओं के लिए डिज़ाइन किए गए लचीले शिक्षण विकल्प प्रदान करते हैं। वित्तपोषण में नवाचार के लिए भी एक उल्लेखनीय धक्का है, विशेष रूप से टियर 2-3 क्षेत्रों के छात्रों के लिए, जिसमें अनुकूलित छात्रवृत्ति योजनाएं और कंपित शुल्क भुगतान योजनाएं शामिल हैं। इसके अलावा, सरकार और कॉर्पोरेट पहल इस बदलाव को बढ़ावा दे रही हैं। उदाहरण के लिए, महाराष्ट्र सरकार ने '8 लाख प्रति वर्ष से कम आय वाले परिवारों से पेशेवर पाठ्यक्रम प्राप्त करने वाली लड़कियों के लिए 100 प्रतिशत शुल्क माफी की शुरुआत की - उच्च शिक्षा में महिला भागीदारी को काफी बढ़ावा देने की उम्मीद है। एमबीए कार्यक्रमों में महिलाओं की बढ़ी हुई भागीदारी व्यावसायिक दुनिया में वास्तविक प्रभाव में अनुवाद कर रही है। महिला एमबीए स्नातक वित्त से लेकर तकनीक तक के उद्योगों में अपनी पहचान बना रही हैं।

इंस्टीट्यूशनल इन्वेस्टर एडवाइजरी सर्विसेज के एक अध्ययन से पता चला है कि एनएसई की शीर्ष 500 सूचीबद्ध कंपनियों में महिलाएं अब 18 प्रतिशत बोर्ड पदों पर काबिज हैं। इन फर्मों के बीच 22 महिला बोर्ड कुर्सियां, 25 महिला सीईओ और 62 महिलाएं कार्यकारी निर्देशन कर रही हैं। इसके अलावा, महिलाएं प्लेसमेंट में मजबूत प्रदर्शन दिखा रही हैं। डेटा इंगित करता है कि महिला एमबीए स्नातकों की तुलना में उनकी तुलना में 36.7 प्रतिशत अधिक चयन दर है

पुरुष समकक्षों, अपनी तैयारी और उद्योग की प्रासंगिकता का प्रदर्शन करते हुए। उद्यमिता भी एमबीए वाली महिलाओं में वृद्धि देख रही है। औपचारिक प्रशिक्षण और एक नए दृष्टिकोण के साथ सशस्त्र, कई अपने उद्यम शुरू कर रहे हैं, नवाचार चला रहे हैं, और अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। जबकि प्रगति सराहनीय है, लाभ को गहरा और विस्तारित करने के लिए निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है। संगठनों को उन नीतियों को लागू करना चाहिए जो लैंगिक समानता को बढ़ावा देती हैं, जैसे कि समान वेतन, भेदभाव-विरोधी प्रथाओं और पारदर्शी प्रचार। महिलाओं को मार्गदर्शन और रोल मॉडल प्रदान करने के लिए मेंटरशिप नेटवर्क विकसित किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, लचीली कार्य व्यवस्था पेशेवर और व्यक्तिगत जिम्मेदारियों को संतुलित करने में मदद कर सकती है, जिससे आकर्षण कम हो सकता है।

हवाई सुरक्षा में छेद

अभी तो एयर इंडिया के ड्रीमलाइनर विमान के क्रैश होने की त्रासदी और संताप देश को शोकाकुल किए है। कुछ और विमानों की आपात लैंडिंग की खबरों ने भी हमें कंपा दिया। रविवार सुबह एक और मनहूस खबर सामने आई कि उत्तराखंड में केदारनाथ के गौरीकुंड के पास एक हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिसमें पायलट समेत 7 यात्रियों की मौत हो गई। उत्तराखंड में 38 दिनों में 4 हेलीकॉप्टर क्रैश हो चुके हैं, जिनमें 13 मौतें हुई हैं। यह कैसी तीर्थयात्रा है? अंततः नियति पर विश्वास करना पड़ता है, लेकिन मौजू सवाल यह है कि क्या हवाई यात्रा असुरक्षित है अथवा हेलीकॉप्टर के संचालन की प्रक्रिया ही छिद्रमय और भ्रष्ट है? बेशक मौत निश्चित है, लेकिन इस तरह इनसान को मौत के कुएं में धकेलना स्वीकार्य नहीं हो सकता। शेष नियति का विधान है, लेकिन हमारी व्यवस्था भी तो खोखली और गैर-जिम्मेदार है! एयर इंडिया विमान की त्रासद् दुर्घटना को टाटा संस और टाटा समूह के चेयरमैन एन.चंद्रशेखरन ने समूह के इतिहास का 'सबसे काला दिन' करार दिया है। एयर इंडिया कंपनी 2022 में निजीकरण की प्रक्रिया के तहत टाटा समूह को मिली। टाटा कितना भी प्रतिष्ठित समूह हो, लेकिन एयर इंडिया उसके चेहरे पर काली लकीरें उकेरती आई है। कई शिकायतें और विसंगतियां सामने आती रही हैं। बहरहाल रमेश की तरह, हर दुर्घटना के बाद की तरह, इस बार भी केंद्र सरकार ने एक उच्चस्तरीय समिति का गठन किया है। इसमें वरिष्ठ सचिव स्तर के अधिकारियों और विशेषज्ञों को रखा गया है। राष्ट्रीय स्तर की इस समिति ने सोमवार से अपने विमर्श की शुरुआत कर दी है। विमान दुर्घटना जांच ब्यूरो (एएआईबी) ने तकनीकी पहलुओं की जांच शुरू कर दी है। विमान के दोनों 'ब्लैक बॉक्स' मिल चुके हैं। हालांकि उनके जरिए विमान के भीतर की गतिविधियों और आवाजों की हकीकत तक पहुंचने में वक्त लगेगा। सरकार ने एक साल का वक्त दिया है।

अब महानिदेशक, नागरिक उड्डयन (डीजीसीए) ने निर्णय किया है कि वह बोइंग के प्रत्येक विमान की 'अतिरिक्त जांच' करेगा। इसके बाद ही विमान उड़ान भर सकेगा। त्रासद् दुर्घटना से पहले ऐसी नियमित जांच-पड़ताल क्यों नहीं की जाती रही? अब ही भानक संचालन प्रक्रिया तय करने की याद क्यों आई? कमांड एंड कंट्रोल सिस्टम में बदलाव अब ही क्यों किया जा रहा है? अभी तो समितियों के निष्कर्ष सामने आएंगे, तो हवाई सुरक्षा के कई और छेद भी बेनकाब होंगे, क्या उनमें भी सुधार किया जाएगा? दरअसल हम विश्व में विमानन सुरक्षा को लेकर 48वें स्थान पर हैं। विश्व की शीर्ष 25 एयरलाइंस में एक भी भारतीय नहीं है। कम लागत वाली अपेक्षाकृत सुरक्षित एयरलाइंस में 'इंडिगो' 19वें स्थान पर है, लेकिन यह इतनी महत्वपूर्ण नहीं है, क्योंकि एयर इंडिया के 198 विमान नियमित उड़ान पर रहते हैं। बोइंग 787 और 737 बीते 14 सालों से भारत की एयरलाइंस में हैं। बोइंग में कुछ छिद्र सामने आए थे, तो जापान ने ड्रीमलाइनर विमानों पर ही रोक लगा दी थी। क्या ऐसा कड़ा फैसला भारत ले सकता है? बोइंग विमान कंपनी 108 साल पुरानी है। उसके अभी तक करीब 6000 विमान क्रैश हो चुके हैं, जिनमें करीब 9000 मौतें हुई हैं। बहरहाल केदारनाथ सरीखे पहाड़ी क्षेत्र में हेलीकॉप्टर सेवा में विसंगतियां भी लगातार दुर्घटनाओं का सबब बनी हैं। दरअसल उत्तराखंड की इस हवाई सेवा में बड़ा भ्रष्टाचार और लालच लपलपाता रहा है। उनमें कई 'काली भेड़ें' भी हैं, जो हवाई सेवा की 'कालाबाजारी' भी करती हैं। चूंकि उसका एक हिस्सा सताधीशों तक भी पहुंचता होगा, लिहाजा दुर्घटनाओं के बावजूद हेली सेवाएं जारी हैं। फिलहाल ये सेवाएं स्थगित की गई हैं। दरअसल एक घंटे में प्रति हेलीकॉप्टर 3-4 फेरे ही तय हैं। करीब 9 कंपनियां दिन भर में 142-165 फेरे कर रही थीं। आरोपित कंपनी को सुबह 6 बजे से उड़ान की अनुमति थी, लेकिन 5.30 बजे से पहले तो हेलीकॉप्टर क्रैश कर चुका था। यात्रियों की संख्या भी 3-4 होनी चाहिए, लेकिन हेलीकॉप्टर में पायलट समेत 7 सवारियां कैसे हो गईं?

बाल श्रम के जाल में उलझा बचपन

विजय गर्ग

बाल श्रम एक ऐसी गंभीर समस्या है, जो बच्चों से उनका बचपन, शिक्षा और सुनहरा भविष्य छीन लेती है। यही नहीं, इससे बच्चों का शारीरिक, मानसिक एवं लैंगिक विकास भी बाधित होता है। जबकि, हमें एक ऐसे विश्व का निर्माण करना है, जहां काम नहीं, किताबें बच्चों का अधिकार हो। बाल श्रम के विरुद्ध आज भी दुनिया भर में आवाज उठती है। विश्व में इस दिशा में चल रहे सतत संघर्ष का ठोस परिणाम कम ही दिखाई देता है। अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन बाल श्रम के सभी रूपों को समाप्त करने के लिए वैश्विक प्रयासों को सुदृढ़ करने का आह्वान करता है। बाल श्रम के खिलाफ उठने वाली आवाज हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि तकनीकी विकास और वैश्वीकरण के इस युग में करोड़ों बच्चे आज भी श्रम करने के लिए विवश क्यों हैं? अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन के अनुसार, आज भी 16 करोड़ से अधिक बच्चे विश्व भर में बाल श्रमिक के रूप मैं कार्यरत हैं और इनका एक बड़ा हिस्सा खतरनाक परिस्थितियों में काम कर रहा है। यह स्थिति विकास की चमकदार तस्वीर के पीछे उस अंधकार को उजागर करती है, जिसे हम हम अनदेखा कर देते हैं।

बाल श्रम एक ऐसा कार्य है, जो बच्चों से उनका बचपन बेहद ही निर्ममता से छीन लेता है। कई बार काम के दौरान उन पर जोर- जुल्म होता है। होता है। नतीजा यह कि इन सब हालात के बीच उनका शारीरिक, मानसिक और लैंगिक विकास बुरी तरह बाधित होता है। उनके भविष्य की सभी संभावनाएं क्षीण होने लगती हैं। दरअसल, बाल श्रम बच्चों की शिक्षा में बाधा डालता है। कई मामलों में पाया गया कि जो बच्चे पढ़-लिख कर अपना भविष्य उज्ज्वल बना सकते बना हैं, उन्हें बाल श्रम का जाल अंधकारमय भविष्य की ओर ले जाता है इस समस्या की जड़ में गरीबी, शिक्षा की कमी, सामाजिक असमानता, परिवार में बेरोजगारी और बाल श्रम कानूनों का शिथिल क्रियान्वयन है। जब एक परिवार की रोजी-रोटी की बुनियादी जरूरतें पूरी नहीं होती हैं, तब उनके सामने सबसे आसान विकल्प बच्चों को काम पर भेजना बन जाता है। यही कारण है कि खेतों, कारखानों, ईंट-भट्टों, घरेलू कामकाज और निर्माण स्थलों पर कई मासूम बच्चे काम करते नजर आते हैं। हैरत की बात है कि स्थानीय प्रशासन सब कुछ देखते देखते हुए भी भी अक्सर आंखें मूंदे रहता है।

कोरोना महामारी के बाद यह संकट और भी गहराया है। स्कूल बंद होने से लाखों बच्चे शिक्षा से वंचित हो गए। दूसरी ओर, बेरोजगार हुए परिवारों में बच्चों की पढ़ाई की अपेक्षा उन्हें काम पर भेज कर पैसा कमाने को अधिक उचित समझा गया। वर्ष 2000 से 2020 के बीच वैश्विक स्तर पर बाल श्रम में 8.55 करोड़ बच्चों की कमी दर्ज की गई थी, जो एक सकारात्मक संकेत था मगर, कोरोना महामारी और आर्थिक असमानताओं ने इस प्रवृत्ति को पलट दिया और इसके बाद बाल श्रमिकों की संख्या में तेजी से बढ़ोतरी होती चली गई। ग्रामीण क्षेत्रों, शहरी झुग्गियों तथा प्रवासी मजदूर परिवारों में यह समस्या अब अत्यंत गंभीर बनी हुई है। यह स्थिति इस बात पर जोर देती है कि इस गंभीर सामाजिक चुनौती से निपटने के लिए नवीन, समग्र, सामूहिक और ठोस प्रतिबद्धता की महती आवश्यकता है। बाल श्रम भारत के साथ-साथ सभी देशों में गैर कानूनी है। अब समय आ गया है कि हम इस विषय पर सिर्फ बात न करके अपनी नैतिक जिम्मेदारी भी समझें बाल श्रम को जड़ उखाड़ना हमारे लिए एक चुनौती है, जिस पर खरा उतरना हमारी प्रमुख प्राथमिकता होनी चाहिए। जाहिर है, इसके लिए सरकार को ही नहीं स्थानीय प्रशासन और परिवारों को भी आगे आना होगा। अगर समन्वित प्रयास हों, तो बच्चों को बाल श्रम से बचाया जा सकता है। अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन द्वारा वर्ष 1992 से शुरू किया गया उपक्रम बाल श्रम के क्रमिक उन्मूलन की दिशा में राष्ट्रीय क्षमताओं को सशक्त करने और वैश्विक जागरूकता बढ़ाने में काम आया। हालांकि, संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों का असर दिखना बाकी है। विशेष रूप से चालू वर्ष के अंत तक बाल श्रम के सभी रूपों को समाप्त करने के लिए प्रतिबद्धता कितनी सफल होगी, यह देखने की बात होगी। हालां ज्यादातर अभियानों में अपेक्षित सफलता अभी तक नहीं मिली है।

भारत में बाल श्रम की समस्या बहुआयामी है। इस समस्या से निपटने के लिए शिक्षा एक माध्यम हो सकती है, जो किसी भी बच्चे को श्रम के कुचक्र से बाहर निकाल सकती है। सरकार का सर्वशिक्षा अभियान एवं राष्ट्रीय बाल श्रमिक परियोजना जैसे प्रयास सराहनीय हैं, पर इन्हें और व्यापक बना कर समाज के अंतिम छोर तक पहुंचाना, बाल श्रम को खत्म करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता हैं। नोबल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी के संगठन 'बचपन बचाओ आंदोलन' ने अब तक हजारों बच्चों को बाल श्रम से मुक्त कराया है।

उत्तर प्रदेश सरकार ने बाल श्रम उन्मूलन के लिए 12 जून से एक व्यापक अभियान शुरू करने की योजना बनाई है। इसका लक्ष्य वर्ष 2027 तक बाल श्रम मुक्त प्रदेश बनाना है। इसे राज्य सरकार का बड़ा कदम माना जा सकता है। मगर, वर्ष 2011 की जनगणना के बाद से अब तक बाल श्रमिकों का कोई भी ताजा आंकड़ा उपल न होने से योजना के प्रभावी क्रियान्वयन में बाधा आ रही है। इस स्थिति से निपटने के लिए पंचायती राज विभाग को गांव स्तर पर बाल श्रमिकों की पहचान कर आंकड़े एकत्र करने के निर्देश दिए गए हैं। इसके अतिरिक्त सरकार यूनिसेफ के साथ मिल कर 'योजना पुस्तिका' तैयार कर रही है, जिसमें उन योजनाओं का विवरण होगा, जो बाल श्रमिकों और उनके परिवारों की मदद के लिए उपलब्ध है। सरकार द्वारा मंडल स्तर पर बच्चों को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए अटल आवासीय विद्यालयों का संचालन भी किया जा रहा है, ताकि श्रमिकों के बच्चों को बाल श्रम से रोका जा सके। बाल श्रम की इस समस्या के विरुद्ध समाज और सरकार को जनजागरण का आह्वान करना चाहिए, क्योंकि यह केवल बच्चों की भलाई का मुद्दा नहीं है, बल्कि संपूर्ण मानवता का सवाल है। प्रत्येक बच्चे को सुरक्षित, स्वस्थ और गरिमापूर्ण बचपन मिलना चाहिए। आज इस बात की आवश्यकता है कि हम निष्पक्ष, संवेदनशील और सतत रणनीतियाँ अपनाएं, जो ऐसे विश्व का निर्माण करें, जहां 'काम नहीं किताबें बच्चों का अधिकार हो। तभी हम बच्चों को न केवल बाल श्रम से मुक्ति दिला सकते हैं, बल्कि देश के भविष्य की नींव भी मजबूत कर सकते हैं।

स्वतंत्रता की पहली शहीद — रानी, माँ, योद्धा [झांसी की वो रानी, जो इतिहास से नहीं, हृदय से जुड़ी है]

18 जून 1858 — वह तारीख जब भारत की धरती ने न केवल एक रानी को खोया, बल्कि एक ऐसी क्रांति की ज्वाला को वीरगति प्राप्त करते देखा, जिसने अंग्रेजी साम्राज्य की नींव को हिलाकर रख दिया। ग्वालियर के रणक्षेत्र में, अपने पुत्र को पीठ पर बांधे, तलवार से दुश्मनों को चीरती हुई रानी लक्ष्मीबाई ने न केवल युद्ध लड़ा, बल्कि स्वतंत्रता की उस अग्नि को प्रज्वलित किया, जो आज भी हर भारतीय के हृदय में धधकती है। वह पल केवल एक योद्धा का अंत नहीं था, वह इतिहास के स्वर्णिम पन्नों पर अमर होने वाली एक अनुपम गाथा का प्रारंभ था। रानी लक्ष्मीबाई की गाथा — साहस, बलिदान और स्वाभिमान की गाथा।

रानी लक्ष्मीबाई का जन्म 19 नवंबर 1828 को वाराणसी में हुआ। बचपन में 'मनु' कहलाने वाली यह बालिका साधारण नहीं थी। घुड़सवारी, तलवारबाजी और युद्धकला में निपुण मनु ने बचपन से ही यह सिद्ध कर दिया था कि वह नारीत्व की पारंपरिक परिभाषाओं को तोड़ने के लिए जन्मी है। उनके पिता मोरोपंत तांबे और माता भागीरथी बाई ने उन्हें न केवल संस्कार दिए, बल्कि स्वतंत्र चेतना और साहस का वह बीज बोया, जो आगे चलकर झांसी की रानी के रूप में अंकुरित हुआ। विवाह के पश्चात झांसी के राजा गंगर राव की रानी बनने के बाद, लक्ष्मीबाई ने अपने प्रशासनिक कौशल और प्रजा-प्रेम से झांसी को समृद्ध किया। किंतु, नियति ने उनके लिए एक कठिन मार्ग चुना।

1853 में राजा गंगाधर राव के निधन और उनके दत्तक पुत्र दामोदर राव को उत्तराधिकारी मानने से अंग्रेजों के इंकार ने झांसी के लिए संकट ला खड़ा किया। ब्रिटिश सरकार ने 'डॉक्टिन ऑफ लैप्स' के तहत झांसी को अपने साम्राज्य में मिलाने की साजिश रची। उस समय रानी लक्ष्मीबाई का वह ऐतिहासिक कथन — ₹मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी₹ — केवल एक प्रतिज्ञा नहीं थी, यह अन्याय के विरुद्ध उठा एक ऐसा स्वर था, जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की पहली चिंगारी बना। यह वाक्य न केवल झांसी की रक्षा का संकल्प था, बल्कि समूचे भारत के स्वाभिमान की हुंकार था।

1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम भारत के इतिहास में एक निर्णायक मोड़ था, और रानी लक्ष्मीबाई इस क्रांति की प्रखर नायिका के रूप में उभरीं। उन्होंने न केवल झांसी की रक्षा के लिए सेना को संगठित किया, बल्कि महिलाओं को युद्धकला में प्रशिक्षित कर एक नया इतिहास रचा। झलकारी बाई, सुंदर-मुंदर जैसी वीरांगनाएं उनकी प्रेरणा से रणभूमि में उतरीं और अंग्रेजों के दांत खट्टे किए। रानी का युद्ध-कौशल और रणनीति इतनी प्रभावशाली थी कि ब्रिटिश सेनानायक ह्यू रोज़ ने स्वयं उनकी प्रशंसा की। झांसी के किले की रक्षा में रानी ने जिस अदम्य साहस का परिचय दिया, वह किसी भी सैन्य इतिहास में स्वर्णाक्षरों में दर्ज है। जब झांसी का किला अंग्रेजों के हाथों में चला गया, तब भी रानी ने हार नहीं मानी। अपने पुत्र को पीठ पर बांध, घोड़े पर सवार होकर वह काल्पी पहुंचीं। वहां से तात्या टोपे और अन्य क्रांतिकारियों के साथ मिलकर उन्होंने ग्वालियर पर कब्जा कर लिया। ग्वालियर में रानी ने न केवल सैन्य शक्ति का प्रदर्शन किया, बल्कि अपनी कूटनीतिक सूझबूझ से क्रांति को नई दिशा दी। किंतु अंग्रेजों ने कोटा की सराय में उन्हें घेर लिया। 18 जून 1858 को, मात्र 29 वर्ष की आयु में, रानी लक्ष्मी ने अपने अंतिम युद्ध में बलिदान दे दिया। कहा जाता है कि वह अंत तक लड़ीं, और अपनी तलवार की धार से दुश्मनों को पीछे धकेलती रहीं। उनकी मृत्यु एक देह का अंत नहीं, बल्कि एक ऐसी प्रेरणा का जन्म था, जो आज भी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की नींव में बस्ती है।

रानी लक्ष्मीबाई का जीवन केवल युद्ध की कहानी नहीं, यह नेतृत्व, आत्मबल और रणनीति का एक जीवंत पाठ है। एक युवा रानी, जिसने राजनीतिक कूटनीति, प्रशासनिक कौशल और सैन्य संगठन को अपने साहसिक निर्णयों से जोड़ा, वह केवल रणभूमि की नायिका नहीं, बल्कि राष्ट्रीय जागरण की अग्रदूत थीं। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि स्वतंत्रता किसी जाति, वर्ग या लिंग की बपौती नहीं, बल्कि हर उस आत्मा का अधिकार है, जो अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने का साहस रखती है। उनकी ज्वाला ने न केवल 1857 की क्रांति को प्रेरित किया, बल्कि महात्मा गांधी, भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस जैसे अनगिनत क्रांतिकारियों के हृदय में स्वतंत्रता की चिंगारी जलाई।

रानी लक्ष्मीबाई की पुण्यतिथि पर उन्हें स्मरण करना केवल एक रस्म नहीं, बल्कि एक आत्ममंथन है। क्या हम उस स्वतंत्रता के सच्चे उत्तराधिकारी हैं, जिसके लिए उन्होंने अपने प्राणों की आहुति दी? उनका जीवन हमें सिखाता है कि स्वाधीनता कोई उपहार नहीं, बल्कि तप, त्याग और संघर्ष से अर्जित किया जाने वाला अधिकार है। उन्होंने भारतीय नारी की उस शक्ति को प्रदर्शित किया, जो जब जागती है, तो साम्राज्यों को भस्म कर सकती है। उनकी तलवार की चमक आज भी इतिहास के पन्नों से झांकती है, उनकी आवाज आज भी हर उस आत्मा को पुकारती है, जो स्वाभिमान के लिए जीती है।

18 जून: रानी लक्ष्मीबाई की पुण्यतिथि पर विशेष

लक्ष्मीबाई का नाम याद दिलाया...!
उसने अंग्रेजी साम्राज्य की नींव को था हिलाया,
एक बार रानी लक्ष्मीबाई का नाम याद दिलाया।
ग्वालियर रणक्षेत्र में अपने पुत्र को पीठ पे बांधे,
तलवार से दुश्मनों को चीर हजारों निशाने साधे।
स्वतंत्रता की असीम अग्नि को प्रज्वलित किया,
केवल युद्ध ही नहीं लड़ा आंदोलन खड़ा किया।
उसने अंग्रेजी साम्राज्य की नींव को था हिलाया,
एक बार रानी लक्ष्मीबाई का नाम याद दिलाया।
वो आज भी हर एक भारतीय के हृदय में समाई,
हमारे मस्तक का भाल हैं मनु व रानी लक्ष्मीबाई।
इतिहास के स्वर्णिम पन्नों पे अमर अनुपम गाथा,
साहस,बलिदान और स्वाभिमान से रहा हैं नाता।
उसने अंग्रेजी साम्राज्य की नींव को था हिलाया,
एक बार रानी लक्ष्मीबाई का नाम याद दिलाया।
मनु एक असाधारण से व्यक्तित्व की थी मलिका,
घुड़सवारी, तलवार, युद्धकला में निपुण चालिका।
वे नारीत्व की पारंपरिक परिभाषाओं को तोडती,
मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी - का कथानक जोडती।

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)

व्यंग्य : साड़ी मिलीं एक खर्च हो गए अर्थ अनेक मे

मेरी साड़ी से अच्छी साड़ी उसकी क्यों है ? यह महिलाओं के लिए बोध वाक्य हों सकता है लेकिन , वास्तविकता में देखा जाए तो , यह मेरे व्याकरण वाले ज्ञान के अनुसार , जलन पैदा करने वाला वाक्य है ।

श्रीमती शर्मा की साड़ी को देख कर ।कई सहेलियों ने प्रशंसा करते हुए कहा कि , आज तों चांदनी बिखरीं है ।श्रीमती वर्मा ने तारीफों के पुल बिना कोई भ्रष्टाचार किएं बांधे जा रही थी । आखिर ₹ बेस्ट सहेली ₹ जो है । श्रीमती शर्मा आपने भुवा जी के यहां से साड़ी लेकर आईं पूरे के पूरे 1000रू की है और फिर चर्चा का दौरा चुनाव प्रचार की तरह चालू हो गया । श्रीमती शर्मा को 700 की साड़ी को होशियार भुवा जी ने 1000 की बताकर को भेंट कर दी । ₹ ये अन्दर की बात है किसी को बताने का नहीं ₹ और तुम भी ₹ इशारे को समझों राज़ को राज़ ही रहने दो । ₹ त्यौहार को देखते हुए श्रीमती शर्मा ख़ुशी ख़ुशी भुवा जी से साड़ी लेकर आ गई थी । इस साड़ी को पहनकर श्रीमती शर्मा जैसे ही पार्टी में पहुंची तो उनका स्वागत ऐसा हुआ जैसे ₹ कोई नेता दल बदल कर आया हों ₹ श्रीमती शर्मा की साड़ी को देखते हुए श्रीमती वर्मा ने साड़ी की तारीफ में जो कसीदे पढ़े , उससे पार्टी में चार चांद लग गए । साड़ी की तारीफ सुनकर , श्रीमती शर्मा गुलाब की तरह खिल गई और साड़ी के मेच कलर की फाल , पिकों , गोटा , किनारी , फुल , पत्ती , ब्लाउज , पेटीकोट , बिंदी , नाखुन पालीश , चुड़ी या , सेन्डील की तारीफ करते हुए ₹ ई डी ₹ की तरह इन का खर्चा पुछा तो श्रीमती शर्मा ने 1500 बताया । बहुत बढ़िया भाभी जी , 1000 की साड़ी और 1500 का खर्चा कुछ मिला कर 2500 की शानदार, जानदार , वजनदार साड़ी में गुलाबो लग रही हो । नेताओं की तरह स्थिति और परिस्थितियों को समय के साथ ₹ छपटते ₹ हुए अन्य सहेलियों ने प्रशंसा के झंडे गाड़ दिए । ₹ फिर क्या था ₹ श्रीमती शर्मा इस पार्टी में ₹मोनालिसा₹ की तरह सोशल मीडिया पर छा गई पार्टी में हुई। पुरी कथा को , मन की गठरी में बांध कर ₹ मन की बात ₹ बताने के लिए जैसे ही घर पहुंची तो , मिस्टर शर्मा ने पत्नी के चेहरे के हाव-भाव पढ़ते हुए कहा । ₹ ओ मेरी जोहराजबी तुझे मालूम नहीं तुम अभी तक है हंसी और मैं जवां..... ₹ गुनगुने हुए साड़ी की तारीफ कर दी फिर क्या था । पार्टी में हुई बातों की , ₹ समीक्षा ₹ चाय के साथ कर दी । मिस्टर शर्मा ने कहा ये साड़ी तों भुवा जी ने दी थी । तुम्हारे लिए और भुवा जी ने यह साड़ी मुझसे मंगवाईं थी । इस साड़ी की किमत तो सुनों ..... । श्रीमती शर्मा ने , बिच में बात काटते हुए कहा हां हां यह साड़ी पुरे 1000 की है । मिस्टर शामा जी का सर चकरा और कुछ नहीं कहा , यह साड़ी कितने की है ।

शर्मा जी मन ही मन में कहने लगे । ₹ चुप कबीरा बोलें मत भेद पड़ोसी का खोले मत । ₹ इस साड़ी के साथ खर्चा कितना हुआ होगा । ये मेरा , दिल समझता है क्योंकि भुवा जी ने इस साड़ी के साथ ब्लाउज , पेटीकोट , बिंदी , नाखुन पालीश , चुड़ीयां जैसी कई आवश्यक सामग्री आदि भी मंगवाईं थी क्या करूं , क्या न करूं , बड़ी मुश्किल में हूं । शर्मा जी मन ही मन में ₹ बुदबुदा ₹ ने लगें । श्रीमती शर्मा तुम्हें ₹ साड़ी तो मिलीं एक , खर्च हो गए मेरे अर्थ के रूप में अर्थ अनेक ₹ ।

प्रकाश हेमावत
मकान नंबर 545 गली नबर 5

ताकि हेट स्पीच पर लगाया जा सके अंकुश....

हेट स्पीच(द्वेषपूर्ण/घृणास्पद भाषण/नफरती भाषण) के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय दिवस 18 जून को मनाया जाता है। दरअसल,हेट स्पीच के खिलाफ जागरूकता बढ़ाने, हेट स्पीच की पहचान करने, इसका विरोध करने तथा देश और समाज में समावेशिता व सहिष्णुता को बढ़ावा देने के क्रम में ही 18 जून को प्रत्येक वर्ष यह दिवस मनाया जाता है।

हेट स्पीच या यूं कहें कि घृणास्पद भाषण किसी व्यक्ति, समुदाय और देश को नुकसान पहुंचाते हैं, क्यों कि हेट स्पीच किसी भी देश के सामाजिक सद्भाव, आपसी भाईचारे, शांति को भंग करने का काम करती है। यह बहुत ही दुखद है कि आज हमारे समाज में ऐसे कई लोग मौजूद हैं,जिनके खिलाफ नफरत फ़ैलाने वाले भाषण के मामले दर्ज हैं। वास्तव में, नफरती भाषण(हेट स्पीच) समाज में हिंसा, भेदभाव की भावना पैदा करते हैं तथा असहिष्णुता को उकसाते हैं और इस प्रकार के भाषणों से समाज और देश को बहुत नुकसान पहुंचता है। यह ठीक है कि सोशल मीडिया आज के समय में अभिव्यक्ति का एक बड़ा और शानदार माध्यम है, लेकिन यह बहुत ही अफसोसजनक है कि सोशल मीडिया आज धमकियों का प्लेटफार्म बन चुका है। वास्तव में, सोशल मीडिया पर आज किसी को भी ट्रोल करना, किसी व्यक्ति विशेष पर ऊल-जलूल और अभद्र टिप्पणियां करना, धमकियां देना, जो भी मन में आए वह कंटेंट डाल देना जैसी बातें आम हो चली हैं।सच तो यह है कि आज सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग से लोगों में सहानुभूति की कमी, साइबर बुलिंग(बिना किसी डर के दूसरों को निशाना बनाना) और व्यक्तिगत जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। लोग अब अपनी निजता का सम्मान नहीं करते हैं और दूसरों की भावनाओं की बिल्कुल भी परवाह नहीं करते हैं कि वे एक सार्वजनिक स्टेज(मंच) पर क्या कह रहे हैं और वास्तव में उन्हें क्या कहना चाहिए और क्या नहीं कहना चाहिए तथा इसका समाज और देश पर क्या और किस कदर प्रभाव पड़ सकता है? वास्तव में होना तो यह चाहिए कि सोशल मीडिया पर हम दूसरों के प्रति सम्मान और सहानुभूति दिखाएं, और उनके विचारों का सम्मान करें। सोशल मीडिया पर ग़लत सूचनाओं, जानकारी को शेयर ना करें और सोशल मीडिया पर अपने समय को सीमित करते हुए हम व्यक्तिगत जीवन को प्राथमिकता दें। हम जानते हैं कि आज के समय में सोशल मीडिया अभिव्यक्ति का एक शक्तिशाली उपकरण है जो हमारे जीवन में, समाज और देश में कई सकारात्मक बदलाव ला सकता है, लेकिन हमें इसका उपयोग सावधानीपूर्वक और नैतिक रूप से करना चाहिए, ताकि हमारे नैतिक मूल्यों में गिरावट न आए और दूसरों की भावनाओं को ठेस न पहुंचे। हेट स्पीच दूसरों की भावनाओं को आहत करती है। वास्तव में इस दुनिया को आज नफरत की नहीं अपितु प्यार की जरूरत है।नफरती टिप्पणियां उकसातीं हैं, लेकिन आज हेट स्पीच जैसे एक फैशन सा हो चला है, यह हमारे लोकतंत्र पर एक आघात है। बहरहाल, यहां पाठकों को बताता चलूं कि भारत के विधि आयोग की 267वीं रिपोर्ट में घृणास्पद भाषण को मुख्य रूप से नस्ल, जातीयता, लिंग, यौन अभिविन्यास, धार्मिक विश्वास और इसी तरह के संदर्भ में परिभाषित व्यक्तियों के एक समूह के खिलाफ नफरत को उकसाने वाला बताया गया है। हेट स्पीच लोकतंत्र को तो कमजोर करने का काम करती ही है, यह ह्यूमन राइट्स (मानवाधिकारों) पर भी एक बड़ा प्रहार होती है। इतना ही नहीं, हेट स्पीच कानून के शासन को भी कमजोर करती है।

कुल मिलाकर यह बात कही जा सकती है कि हेट स्पीच किसी भी समाज और देश पर व्यापक हानिकारक प्रभाव छोड़ती है। आज सोशल मीडिया का दौर है और सोशल मीडिया के इस दौर में हेट स्पीच हमारे समाज और देश के लिए एक बहुत बड़ी समस्या बन चुकी है। कहना ग़लत नहीं होगा कि संचार की तकनीकों ने आज हेट स्पीच के पैमाने और प्रभाव को बढ़ाने का काम किया है, क्यों कि आज पूरी दुनिया संचार क्रांति के कारण बहुत छोटी हो चुकी है। आज का समय वह समय है जब संचार क्रांति के कारण कोई भी बात विश्व भर में फैलने में ज़रा सी भी देर नहीं लगती। कहना ग़लत नहीं होगा कि हेट स्पीच समाज में संघर्ष और तनाव को जन्म देती है तथा यह मानवाधिकारों के उल्लंघन का एक बेस या आधार तैयार करके समाज व देश के विकास और शांति,संयम को व्यापक तौर पर नकारात्मक ढंग से प्रभावित करती है। वास्तव में, हेट स्पीच या घृणास्पद भाषण को भाषण, लेखन या व्यवहार में किसी भी प्रकार के संचार के रूप में परिभाषित किया गया है जो किसी व्यक्ति या समूह के संदर्भ में उनके धर्म, जातीयता, राष्ट्रीयता, नस्ल, रंग, वंश, लिंग या अन्य पहचान कारक के आधार पर हमला करता है या अपमानजनक या भेदभावपूर्ण भाषा का उपयोग करता है। दूसरे शब्दों में और सरल शब्दों में यदि कहें तो हेट स्पीच एक ऐसा भाषण, लेखन या व्यवहार है जो किसी व्यक्ति या समूह के प्रति घृणा, शत्रुता या हिंसा को बढ़ावा देता है। यह आमतौर पर नस्ल, धर्म, लिंग, राष्ट्रीयता, या अन्य पहचान के आधार पर भेदभाव को बढ़ावा देता है। बहरहाल,आज हर कहीं पर घृणास्पद भाषणों(हेट स्पीच) का बोलबाला हो गया है, इसलिए ज़रूरत इस बात की है ऐसे घृणास्पद भाषणों पर रोक लगाई जाए। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज जरूरत इस बात की है हमारा समाज, हमारी देश, सामाजिक संगठन और सरकारें हेट स्पीच का मुकाबला करने के लिए कृत संकल्पित होकर आगे आए। यहां पाठकों को बताता चलूं कि संयुक्त राष्ट्र के अनुसार घृणास्पद भाषण, 'किसी भी प्रकार का संचार है जो किसी व्यक्ति या समूह के खिलाफ भेदभाव, शत्रुता या हिंसा को उकसाता है, लक्षित करता है, या उसका समर्थन करता है।' यह भाषण/स्पीच नस्ल, धर्म, लिंग, यौन अभिविन्यास, राष्ट्रीयता या किसी अन्य पहचान के आधार पर हो सकता है। बहरहाल पाठक जानते हैं कि हमारे देश के संविधान के अनुच्छेद 19(1)(ए) के तहत भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को मौलिक अधिकार के रूप में गारंटी दी गई है, लेकिन यह अधिकार निरपेक्ष नहीं है और ,यदि हम यहां पर भारत में हेट स्पीच की कानूनी स्थिति की बात करें तो भारतीय संविधान का अनुच्छेद 19(2) संविधान में भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर उचित प्रतिबंध लगाने का प्रावधान करता है । गौरतलब है कि यह अनुच्छेद सरकार को कुछ आधारों पर, जैसे 'लोक व्यवस्था के हित में', 'मानहानि', 'अपमान', 'राजद्रोह', 'शालीनता या नैतिकता के विरुद्ध' आदि, भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगाने की अनुमति देता है। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि हेट स्पीच के पहलू से संबंधित विभिन्न दंडात्मक प्रावधान किए गए हैं। मसलन,भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 153ए और 153बी उन कृत्यों को दंडित करती है, जो दो समूहों के बीच दुश्मनी और घृणा पैदा करते हैं।इसी प्रकार से भारतीय दंड संहिता की धारा 295ए उन कृत्यों को दंडित करने से संबंधित है, जो जानबूझकर या दुर्भावनापूर्ण इरादे से किसी वर्ग के लोगों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाते हैं। गौरतलब है कि धारा 505(1) और 505(2) के अनुसार ऐसी सामग्री का प्रकाशन और प्रसार जो विभिन्न समूहों के बीच दुर्भावना या घृणा पैदा करे, अपराध है।इसी प्रकार से जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 (आरपीए) की धारा 8, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अवैध उपयोग के दोषी व्यक्ति को चुनाव लड़ने से रोकती है।आरपीए की धारा 123(3A) तथा 125 चुनावों के संदर्भ में नस्ल, धर्म, समुदाय, जाति या भाषा के आधार पर भारत के नागरिकों के विभिन्न वर्गों के बीच शत्रुता अथवा घृणा की भावनाओं को बढ़ावा देने पर रोक लगाता है और साथ ही इसे भ्रष्ट चुनावी प्रथाओं के अंतर्गत शामिल करता है। इसी प्रकार से अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989 सार्वजनिक रूप से किसी भी स्थान पर अनुसूचित जाति अथवा अनुसूचित जनजाति को लक्षित करने वाले घृणास्पद भाषण पर प्रतिबंध लगता है। नागरिक अधिकारों का संरक्षण अधिनियम, 1955 मौखिक अथवा लिखित शब्दों के माध्यम से या संकेतों एवं दृश्य प्रस्तुतियों द्वारा अथवा अस्पृश्यता को उकसाने एवं प्रोत्साहित करने पर दंड का प्रावधान करता है। अंत में संक्षेप में यही कहूंगा कि

हेट स्पीच(नफरती भाषण)के दूरगामी परिणाम होते हैं, जो हमारे सामाजिक सद्भाव, सामाजिक ताने-बाने और व्यक्तिगत कल्याण, तथा मानवता के लिये खतरा उत्पन्न करते हैं। नफरती भाषणों या यूं कहें कि द्वेषपूर्ण भाषणों से निपटने के लिए आज जरूरत इस बात की है कि हम अपने यहां शिक्षा को बढ़ावा दें। कानून को तो सख्त बनाने की आवश्यकता है ही।एक आचार संहिता का पालन किया जाना आवश्यक है।डिजिटल या सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का प्रभाव लंबे समय तक रहता है, इसलिए इसका विवेकपूर्ण उपयोग सुनिश्चित किया जाना आज की महत्ती आवश्यकता है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

कुटिल मुस्कानों के बीच एक सीधी बात

अब ये बात तो मैं पूरे आत्मविश्वास से कह सकता हूँ कि व्यंग्य लिखने से ज़्यादा कठिन काम उसे मंच पर मुस्कुराते चेहरों के बीच पढ़ना है। वजह? क्योंकि वो मुस्कानें वास्तव में हँसी नहीं, सामाजिक रणनीतियाँ होती हैं। और मैं, एक सीधी बात करने वाला नौसीखिया व्यंग्यकार, उस मंच पर खड़ा होता हूँ जहाँ हर तालियों का मतलब तारीफ़ नहीं होता, और हर मुस्कान के पीछे कोई न कोई 'प्रेस रिलीज़' का टुकड़ा छुपा होता है।

मुझे अब समझ आने लगा है कि व्यंग्य का मूल्य वहाँ कम होता है जहाँ तुकबंदी की कीमत अधिक हो। मंच पर "प्यारे श्रोताओं..." कहते ही अगर आप छंद में बहने न लगें, तो आपको वही देखा जाएगा जैसे कॉर्पोरेट मीटिंग में धोती पहनकर पहुँच गए हों — संस्कृति के प्रतीक, मगर माहौल के बाहर। व्यंग्य को अब भी मनोरंजन समझा जाता है, संवेदना नहीं। जैसे यह कोई भाषा का 'कॉमेडी टाइम' हो और लेखक कोई 'जोकर' जिसे समय पर तालियाँ मिलनी चाहिए।

मैं जब मंच पर खड़ा होता हूँ और ईमानदारी से कुछ कहना चाहता हूँ — सच कहना चाहता हूँ, तो सबसे पहले मेरी आवाज़ को जांचा जाता है, फिर मेरी शक्ल, फिर मेरे पहनावे को, और अंत में — मेरी रचना को। अगर आपकी रचना थोड़ी गंभीर हो, थोड़ी तीखी हो, और चेहरे पर बत्तीसी न चमकाए — तो भाई, आप 'डिसकनेक्ट' माने जाते हैं। आप व्यंग्यकार नहीं, शायद ग़लती से मंच पर आ गए किसी 'सच बोलने वाले' मान लिए जाते हैं।

व्यंग्य अब मंचों पर हल्का होना चाहिए — वजनदार हो तो "ओवर डोज़" कहलाता है। कटाक्ष तीखा हो तो "बद्तमीज़ी", और सामाजिक चिंतन लाएँ तो "उपदेश" कहा जाता है। मुझे एक मंच संचालक ने एक बार पीठ पर हाथ मारते हुए कहा — "भाई, अच्छा लिखा है, लेकिन थोड़ा 'लाइट' करो लोग सुनने नहीं, हँसने आए हैं।"

मैं सोच में पड़ गया — अगर मैं भी 'लाइट' हो गया, तो जो असल 'लाइट' (रोशनी) है, वह कौन जलाएगा?

इन मुस्कराते श्रोताओं में से कई चेहरे मुझे हर मंच पर मिलते हैं — ये वे हैं जो सबसे आगे बैठते हैं, मुस्कराते हैं, सिर हिलाते हैं, और आयोजकों से 'सेल्फ़ी विद शायर' माँगते हैं। इनका काम है हर प्रस्तुति को "लाजवाब" बताना और हर प्रस्तुति के बाद "स्वाद आया" कहना। इन्हें विषय से फर्क नहीं पड़ता, बस मंच पर मूड बना रहना चाहिए।

व्यंग्य जब किसी संस्था की सालगिरह पर बुलाया जाता है, तो वह हास्य का पर्याय मान लिया जाता है। आयोजक पहले से कह देते हैं — "भाई, माहौल बनाइएगा हल्का-फुल्का कुछ हो जाए।" और अगर आप समाज के आईने की धूल झाड़ दें, तो वही आयोजक कहेगा — "थोड़ा भारी हो गया ख़ैर, अगली बार..."

व्यंग्यकार के लिए सबसे कठिन होता है — सबको हँसाकर भी अपने मन की पीड़ा कहना। क्योंकि उसकी हँसी, भीतर से आँसू लेकर आती है।

एक बार मैंने मंच से 'बेरोज़गारी' पर एक तीखा व्यंग्य पढ़ा — सामने बैठे एक माननीय अधिकारी महोदय हँसते-हँसते बोले — "क्या खूब लिखा है! वैसे, सरकार बहुत कुछ कर रही है। पर हँसी बहुत आई।"

मैं उस समय चुप था, क्योंकि मेरे शब्दों से ज़्यादा असर उनके 'कुटिल मुस्कान' में था।

यही है असली व्यंग्य — जब जिसकी बात हो रही हो, वही सबसे ज़्यादा ताली बजा रहा हो।

अब तो व्यंग्य भी दो भागों में बँट गया है — मंचीय व्यंग्य और वास्तविक व्यंग्य। मंचीय व्यंग्य वो है जो आयोजकों को 'फिट' लगे, जिसमें हर पाँच पंक्तियों में तालियाँ आएँ। और वास्तविक व्यंग्य वो है जो किसी पत्रिका में छपकर किसी पाठक के दिल में 'चुभ' जाए। दुर्भाग्यवश, मंच पर दूसरा वाला नहीं चलता।

ऐसे में मुझे लगता है कि मैं 'मंचीय तालियों' से ज़्यादा किसी अजनबी पाठक की चुपचाप पढ़ी गई प्रतिक्रिया में जीता हूँ। क्योंकि मंच की तालियाँ तो कई बार उधार ली हुई लगती हैं — जैसे आयोजक ने कहा हो, "अब ताली बजाइए।"

अब एक सीधी बात —
अगर व्यंग्यकारों को तालियों के लिए लिखना है, तो वे लिखते रहें — मैं उन मुस्कानों के पीछे के सवालों के लिए लिखना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि मेरा व्यंग्य हँसी के बाद किसी को बेचैन करे, किसी को चुपचाप सोचने पर मजबूर कर दे, किसी को अपनी चुप्पी पर शर्म दिला दे। मैं जानता हूँ, कुटिल मुस्कानें मुझे अब भी घेरेंगी। लोग कहेंगे, "भाई, बड़ा सीरियस हो गया तू।

लेकिन मुझे फर्क नहीं पड़ता — क्योंकि अगर व्यंग्य हँसा कर न बदले, तो वो बस मज़ाक बनकर रह जाता है।

निष्कर्ष:
मंचों पर सजावट, तुकबंदी और तालियों की लय में फँसे इस दौर में, कोई अगर एक सीधी बात करने की हिम्मत करता है — तो वह व्यंग्य नहीं, एक बदलाव का बीज बो रहा होता है।

और मैं चाहता हूँ कि यही बीज कभी किसी मन की मिट्टी में अंकुरित हो जाए।

अंकित सोनी "निशांत", मनावर, धार (मप्र)

हज़रत मौलाना मोहम्मद सईदी के निधन पर मज़ाहिर उलूम (वक़्फ़) में शोक सभा आयोजित

मुख्य संवाददाता

उत्तर प्रदेश। मदरसा मज़ाहिर उलूम (वक़्फ़) सहारनपुर के दफ़्तर-ए-एहतमाम में मदरसे के उस्तादों, कर्मचारियों और हमदर्दों की बड़ी संख्या ने शोक सभा में भाग लिया।

इस मौक़े पर शेखुल हदीस मौलाना मोहम्मद इस्लामुल हक असअदी, कार्यवाहक नाज़िम मदरसा ने कहा कि हज़रत मौलाना मोहम्मद सईदी आखिरी समय तक हंसते-खेलते और मुस्कराते रहे। इंतेक़ाल वाले दिन दो-तीन घंटे पहले मेरी उनसे फोन पर बात हुई थी, उस समय भी कतई अंदाज़ा नहीं था कि मौलाना हमसे जुदा होने वाले हैं। वे बड़े दूरदर्शी, सूझ-बूझ वाले और तहज़ीबदार इंसान थे। हमारे बुज़ुर्गों ने हमेशा अपने बड़ों की पैरवी की है और इसी में हमारी भलाई है। मैं हज़रत के उत्तराधिकारी मुफ्ती मोहम्मद बदरान सईदी साहब से ख़ास तौर पर यह ताकीद करूंगा कि वे अपने वालिद-ए-मोहतरम और अन्य बुज़ुर्गों के नक्श-ए-कदम पर खुद भी चलें और मदरसे को भी चलाएं।

मदरसे के उस्ताद-ए-हदीस मौलाना

मोहम्मद अतीक मुरादाबादी ने कहा कि हज़रत नाज़िम साहब बड़े ही हलीम, करीम और ख़लीक थे। मैंने ज़्यादा अरसा उनकी सोहबत नहीं पाई लेकिन जितनी पाई उससे यह सीखा कि हज़रत नाज़िम साहब बहुत ही सूझ-बूझ वाले, दरियादिल और हर शख़्स के मरतबे का खयाल रखने वाले थे। इस मौके पर नासिरुद्दीन मजाहरी ने शोक प्रस्ताव पढ़कर सुनाया, जिसमें नाज़िम साहब की निज़ामत का एक संक्षिप्त ख़ाका और भविष्य में नवनियुक्त नायब नाज़िम मुफ्ती मोहम्मद बदरान सईदी का हर संभव सहयोग देने और मदरसे की सौपी गई जिम्मेदारियों को पूरी लगन से निभाने का संकल्प शामिल था।

कार्यक्रम के दौरान पश्चिमी यूपी के प्रसिद्ध बुजुर्ग मौलाना सैयद बिलाल हुसैन बागपती भी शोक सभा में शरीक हुए और कुछ नसीहत भरे अल्फ़ाज़ के साथ हज़रत मौलाना मोहम्मद सईदी के साहबजादगान मुफ्ती मोहम्मद सआदान सईदी और मुफ्ती मोहम्मद बदरान सईदी को ख़िलाफ़त की दस्तार से नवाज़ा। उल्लेखनीय है कि मुफ्ती मोहम्मद बदरान सईदी को हज़रत मौलाना मोहम्मद सईदी ने भी बैअत व ख़िलाफ़त की इजाज़त से नवाज़ा है।

इस शोक सभा में शेखुल हदीस मौलाना मोहम्मद इस्लामुल हक असअदी, मौलाना अतीक मुरादाबादी, मौलाना अहमद मजाहरी, मुफ्ती मोहम्मद राशिद, मौलाना नईम अहमद, मौलाना मुज़फ़्फ़रुल इस्लाम थानवी, मौलाना ग़य्यूर अहमद, बाबू मुजीब ख़ान, मुंशी मोहम्मद आरिफ, हाफ़िज़ सलीमुल्लाह, मुफ्ती मोहम्मद तस्ख़ीर, मौलाना मोहम्मद आरिफ मजाहरी और बड़ी तादाद में उस्तादों व कर्मचारियों के अलावा मौलाना अब्दुल मालिक मुग़ीसी, कारी मरग़ूबुर्रहमान, अब्दुर्रहमान सिद्दीकी, मौलाना मोहम्मद आरिफ रशीदी, प्रो. शेर शाह अज़म, हाजी सैयद फिरोज़, हाजी सलाहुद्दीन कुरैशी (दिल्ली), डॉ. मरग़ूब सलीम, सैयद नय्यर अली, रशीद अहमद सिद्दीकी, हैदर रऊफ़ सिद्दीकी, डॉ. अब्दुल क़ुद्दूस, मौलाना अनवार मजाहरी (मेरठ), हाफ़िज़ सईद अहमद, कारी इनायतुर्रहमान क़ासिमी, मोहम्मद राशिद सिद्दीकी आदि ने शिरकत की।

कारी अब्दुल वहाब की तिलावत, मौलाना नासिरुद्दीन की निज़ामत और मौलाना मोहम्मद अतीक की दुआ पर यह सभा समाप्त हुई।

भविष्य बताने वाले, वर्तमान से बेख़बर क्यों

(देश में इतने बड़े-बड़े भविष्य वक्ता... फिर भी किसी बड़े हादसे की ख़बर तक नहीं मिलती?)

जब आपदा आई और बाबा ऑफलाइन थे

जो लोग दावा करते हैं कि उनका ₹ऊपर वाले से सीधा संपर्क₹ है, वे हर बड़ी आपदा, दुर्घटना या संकट के समय चुप क्यों हो जाते हैं? क्या उनका दिव्य नेटवर्क केवल चढ़ावे और चमत्कार तक सीमित है? यह लेख उन कथित भविष्यवक्ताओं की खोखली घोषणाओं, अंधभक्ति पर टिकी दुकानदारी और समाज में वैज्ञानिक सोच की कमी पर तीखा व्यंग्य है। समय आ गया है कि हम धर्म और अंधविश्वास के बीच का फर्क समझें, और सवाल पूछना सीखें—वरना बाबा तो ऑनलाइन रहेंगे, लेकिन जनता ऑफलाइन ही मरती रहेगी।

प्रियंका सौरभ

वो जो कहते हैं, ₹ऊपर वाले से सीधा संपर्क है₹, उनका नेटवर्क अचानक उस समय क्यों डाउन हो जाता है जब कोई भयंकर आपदा, ट्रेन हादसा, प्लेन क्रैश, या भूकंप आता है? क्या उनकी ज्योतिषीय सेटिंग में कोई सर्वर एरर आ जाता है? या फिर 'अदृश्य शक्ति' भी Caution बोर्ड लगाकर छुट्टी पर चली जाती है? यह प्रश्न अब मजाक नहीं, बल्कि गंभीर सामाजिक विमर्श का विषय बन चुका है।

आज जब कोई गंभीर संकट आता है, तो सबसे पहले न्यूज़ चैनल, वैज्ञानिक एजेंसियाँ, या रेस्क्यू टीमें सक्रिय होती हैं—ना कि वो बाबा जिनका दावा है कि वे भविष्य देख सकते हैं, या ईश्वर से सीधी बातचीत करते हैं। ये वही लोग हैं जो टीवी पर, मंचों पर, और यूट्यूब लाइव में हजारों लोगों के सामने आँखें मूँदकर बड़े भावुक अंदाज़ में कहते हैं—₹बेटा, तेरा समय बदलने वाला है₹, ₹तू अगले जन्म में साधु बनेगा₹, या ₹तेरे कुल में बहुत बड़ा संत हुआ था₹। लेकिन जब देश के किसी कोने में कोई बच्चा बोरवेल में गिरता है, जब प्लेन क्रैश होता है, जब कोई महामारी फैलती है—तो ये संत, साधु, भविष्यवक्ता नदारद होते हैं।

अब सवाल यह उठता है कि यदि इनके पास सचमुच कोई 'दिव्य दृष्टि' है, तो वो सार्वजनिक हित में क्यों नहीं लगाई जाती? क्या इनकी चेतनाएँ सिर्फ 'प्रेम विवाह के उपाय', 'दुश्मन को वश में करने की विधि' या 'विदेश यात्रा कब होगी' जैसे प्रश्नों तक ही सीमित हैं? क्या ईश्वर से सीधा संपर्क रखने वाले लोगों की जिम्मेदारी नहीं बनती कि वे देश, समाज और मानवता के हित में समय रहते चेतावनी दें?

हाल ही में एक वायरल टिप्पणी ने सोशल मीडिया पर खूब सुर्खियाँ बटोरीः ₹इतने बड़े-बड़े भविष्य वक्ता, ऊपर वाले से सीधा संपर्क... फिर भी किसी बड़े हादसे की ख़बर तक नहीं मिलती!₹ यह वाक्य जितना सरल है, उतना ही तीव्र और तर्कपूर्ण भी है। क्योंकि यह धार्मिक चमत्कारों की उस 'औद्योगिक प्रणाली' पर सवाल खड़ा करता है जो लोगों की भावनाओं को भुनाकर अरबों का कारोबार करती है।

आजकल हर गली-मोहल्ले में एक बाबा ब्रांड है—किसी का टैगलाइन है ₹भाग्य बदलिए₹, तो कोई कहता है ₹समस्या का समाधान सिर्फ 7 दिन में₹। कुछ तो ऐसे हैं जो स्वयं को 'ईश्वर का अवतार' घोषित कर चुके हैं। लेकिन जब देश में कोई आपदा आती है, तो ये सब 'अवतार' अंडरग्राउंड हो जाते हैं। इनके आश्रमों में सन्नाटा छा जाता है और प्रवचन मंचों पर 'प्रेस नोट' चस्पा कर दिया जाता है—₹बाबा जी ध्यान साधना में हैं, कृपया किसी अन्य समय संपर्क करें।₹

विचार कीजिए, यदि ये लोग सचमुच संकट पूर्वानुमानित कर सकते हैं, तो क्यों नहीं NDRF या प्रधानमंत्री कार्यालय को पहले से सूचित कर देते? क्यों नहीं आपदा प्रबंधन में इनका कोई उल्लेख होता है? कारण स्पष्ट है—इनकी 'भविष्यवाणी' एक मार्केटिंग उत्पाद है, एक प्रकार की 'भावनात्मक ज्योतिषीय फैंटेसी', जिसे धार्मिक आस्था की चादर में लपेटकर बेचा जा रहा है।

दुख की बात यह है कि ये बाबा और गुरु, आमजन की पीड़ा और अज्ञान का लाभ उठाकर एक ऐसा मायाजाल बुनते हैं जिसमें न तर्क है, न पारदर्शिता। इनकी भविष्यवाणी 'जेनरिक' होती है—₹अगले 6 महीने बहुत चुनौतीपूर्ण होंगे₹, ₹देश में बड़ी घटना होने वाली है₹, ₹भूकंप या महामारी की संभावना है₹—अब ज़रा सोचिए, ये तो किसी भी समय पर लागू किया जा सकता है। यह 'वाटरप्रूफ' भविष्यवाणी होती है—गलत हुई तो कहा जाएगा 'तुम्हारी श्रद्धा कम थी', सही हुई तो 'देखा, बाबा ने पहले ही बताया था'!

बाजार ने भी इन बाबाओं की दुकानदारी को बढ़ावा दिया है। टीवी चैनलों से लेकर सोशल मीडिया तक, हर जगह इनका बोलबाला है। इनके प्रवचन में भक्ति कम, ब्रांडिंग ज़्यादा होती है। कोई बाबा यूट्यूब पर लाइव भविष्यवाणी करता है, कोई इंस्टाग्राम पर ध्यान सत्र लेता है। इनके पास HD कैमरे, माइक सेटअप, वीडियो एडिटर तो हैं—but जब देश को 'दिव्य चेतावनी' चाहिए होती है, तब इनका नेटवर्क फेल हो जाता है।

यह विडंबना नहीं, त्रासदी है कि भारत जैसे देश में जहाँ विज्ञान, तकनीक और आपदा प्रबंधन की व्यापक ज़रूरत है, वहाँ संकट की घड़ी में लोग अब भी किसी बाबा की 'फेसबुक लाइव' पर आश्वासन खोजते हैं। यह एक गहरी सामाजिक असुरक्षा और वैज्ञानिक सोच की कमी का परिचायक है।

यहीं पर जिम्मेदारी बनती है सरकारों, शिक्षकों और सामाजिक संस्थानों की। धर्म आस्था का विषय है, लेकिन जब वह वैज्ञानिक विवेक, सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवता से दूर जाकर एक 'कॉरपोरेट माया' बन जाए, तो उसके खिलाफ खड़ा होना जरूरी है। यह कोई धर्म-विरोध नहीं, बल्कि अंधविश्वास-विरोध है।

भविष्यवाणी की आड़ में जो व्यावसायिक ढांचा खड़ा हुआ है, वह न केवल जन-संवेदनाओं से खिलवाड़ करता है, बल्कि आपदा के समय नागरिकों को दिग्भ्रमित भी करता है। जब किसी नदी में बाढ़ आती है, तो NDMA और मौसम विभाग तो चेतावनी जारी करते हैं, लेकिन 'भगवा पोशाकधारी' बाबा लोग चुप रहते हैं। जब ट्रेन दुर्घटनाग्रस्त होती है, तब न तो किसी ज्योतिषी का वीडियो वायरल होता है, न ही कोई 'भविष्यवक्ता' ग्रीन रूम से बाहर आता है।

सवाल यह भी है कि इनका 'सीधा संपर्क' किससे है? क्या वह संपर्क केवल उन्हीं दिनों काम करता है जब 'दस लाख का यज्ञ', 'एक करोड़ का चढ़ावा', या 'विशेष पूजा' आयोजित की जाती है? क्या ईश्वर को संपर्क में लाने के लिए भी 'डेटा पैक' रिचार्ज कराना पड़ता है? यह कटाक्ष नहीं, कटु सत्य है कि धार्मिक विश्वास अब एक टेलीकॉम योजना जैसा हो गया है—'पैसा दो, नेटवर्क भरोसेमंद होगा'।

एक आम नागरिक के नज़रिए से देखें, तो यह धोखा है। क्योंकि जब जनता किसी संकट में होती है, तब उसे सही, सटीक, और वैज्ञानिक जानकारी चाहिए होती है—न कि दाढ़ी वाले किसी स्वयंभू ईश्वर के प्रवचन।

इस पूरे परिदृश्य में कुछ संतुलित, विद्वान और सच्चे अध्यात्मविद अपवाद हो सकते हैं, जो वास्तव में समाज सेवा और आत्मकल्याण की बात करते हैं। लेकिन बहुसंख्यक मंचों पर जो चल रहा है, वह एक भविष्य बेचने का उद्योग है—जिसमें भविष्य के नाम पर वर्तमान की चेतना को शिथिल किया जा रहा है।

अब समय है कि हम इस 'पाखंडी भविष्यवाणी तंत्र' की पड़ताल करें। सरकारों को ऐसे फर्जी दावों पर निगरानी रखनी चाहिए। शिक्षा व्यवस्था में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तर्कशीलता को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। मीडिया को भी यह समझना चाहिए कि TRP के चक्कर में वे किस तरह जनता को एक अंधकारमय राह पर ले जा रहे हैं।

और अंत में, यह भी जरूरी है कि हम, आप, आम लोग—अब सवाल करना सीखें। अगली बार जब कोई बाबा मंच से यह कहे कि ₹अगले महीने बड़ी घटना घटेगी₹, तो उनसे पूछें—₹क्या, कब, कहाँ, कैसे?₹ यदि उनके पास उत्तर नहीं है, तो उनका भविष्य नहीं, आपकी जागरूकता उनका अंत तय करेगी।

वरना यह सिलसिला यूँ ही चलता रहेगा—आपदा आती रहेगी, जनता मरती रहेगी, और बाबा लोग 'ध्यान' में चले जाएँगे। और हम सिर्फ यही कहते रह जाएँगेः

इतने बड़े-बड़े भविष्य वक्ता, ऊपर वाले से सीधा संपर्क... फिर भी किसी बड़े हादसे की ख़बर तक नहीं मिलती!

डॉ. लॉजिस्टिक्स: बेहतर लॉजिस्टिक्स से सशक्त भारत की ओर

एक विशेष विचार विमर्श — डॉ. अंकुर शरण के साथ

भारत एक युवा राष्ट्र है, और जब युवा सही दिशा में अपनी ऊर्जा लगाते हैं, तो कोई भी ताकत उसे विश्वगुरु बनने से नहीं रोक सकती। आज जिस तेजी से भारत की अर्थव्यवस्था आगे बढ़ रही है, उसमें लॉजिस्टिक्स (रसद) की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण हो गई है। डॉ. अंकुर शरण, एक अनुभवी लॉजिस्टिक विशेषज्ञ और ₹डॉ. लॉजिस्टिक्स₹ पहल के प्रमुख, का मानना है कि यदि लॉजिस्टिक्स मजबूत हो, तो न केवल उद्योगों की गति तेज होती है, बल्कि राष्ट्र निर्माण में भी योगदान कई गुना बढ़ जाता है।

भारत की आर्थिक तरक्की और लॉजिस्टिक्स की भूमिका

आज भारत में मैन्युफैक्चरिंग, ई-कॉमर्स, कृषि, स्वास्थ्य सेवा, ऑटोमोबाइल और रिटेल जैसे अनेक क्षेत्र लॉजिस्टिक्स पर निर्भर हैं। समय पर कच्चा माल पहुंचाना, तैयार उत्पादों को बाजार तक पहुंचाना, इमरजेंसी सेवाओं में दवाइयों और उपकरणों की डिलीवरी — ये सब लॉजिस्टिक्स के बिना असंभव है।

डॉ. शरण कहते हैं, ₹एक समय था जब भारत में लॉजिस्टिक्स की समझ सीमित थी। लेकिन आज, यह एक स्वतंत्र और शक्तिशाली इंडस्ट्री बन चुकी है जो जीडीपी में 14% तक योगदान देती है। भारत सरकार भी Gati Shakti योजना जैसे मेगाप्रोजेक्ट्स के माध्यम से लॉजिस्टिक्स को प्राथमिकता दे रही है।₹

युवाओं के लिए सुनहरा अवसर

डॉ. शरण का मानना है कि यह क्षेत्र युवाओं के लिए अवसरों का भंडार है। ₹आज Supply Chain Analyst, Warehouse Manager, Port Operations Expert, Logistics Tech Specialist जैसे प्रोफेशनल्स की भारी मांग है,₹ वे बताते हैं।

क्यों करें लॉजिस्टिक्स में करियर?

हर सेक्टर से जुड़ाव – लॉजिस्टिक्स हर इंडस्ट्री की रीढ़ है। चाहे वह कृषि हो या ई-कॉमर्स।

तेजी से बढ़ता सेक्टर – डिजिटल इंडिया और वैश्विक व्यापार के विस्तार के साथ लॉजिस्टिक्स की मांग निरंतर बढ़ रही है।

नवाचार और तकनीकी अवसर – AI, IoT, Big Data जैसे तकनीकों का लॉजिस्टिक्स में प्रयोग युवाओं को इनोवेशन के लिए प्रोत्साहित करता है।

रोजगार की विविधता – ऑपरेशन्स, प्लानिंग, वेयरहाउसिंग, इंपोर्ट-एक्सपोर्ट, रोड-रेलगाड़ी-एयर कार्गो जैसे कई क्षेत्र युवाओं के लिए खुले हैं।

डॉ. लॉजिस्टिक्स की पहल

डॉ. अंकुर शरण और उनकी टीम Dr. Logistics के माध्यम से देश भर में युवाओं को इस क्षेत्र में मार्गदर्शन, प्रशिक्षण और प्रेरणा देने का काम कर रही है। वे कहते हैं, ₹हमारा उद्देश्य है कि भारत के टियर-2 और टियर-3 शहरों से भी योग्य लॉजिस्टिक प्रोफेशनल्स निकलें और भारत को सप्लाई चेन का विश्वगुरु बनाएं।

यदि आप एक ऐसा करियर चाहते हैं जिसमें स्थायित्व, विकास और देश सेवा तीनों हों, तो लॉजिस्टिक्स आपके लिए एक आदर्श क्षेत्र है। डॉ. अंकुर शरण की यह विशेष सलाह है कि युवा समय की नब्ज को पहचानें और लॉजिस्टिक्स की दुनिया में कदम रखें।

जब लॉजिस्टिक्स सही होता है, तो हर चक्र सही चलता है – उद्योग, व्यापार, किसान और ग्राहक। लॉजिस्टिक्स नहीं, तो प्रगति नहीं।₹ – डॉ. अंकुर शरण

यदि आप लॉजिस्टिक्स में अपना भविष्य देखना चाहते हैं या इस क्षेत्र में प्रशिक्षण व करियर मार्गदर्शन की आवश्यकता है, तो Dr. Logistics से जुड़ें – भारत को सशक्त बनाने की दिशा में एक मजबूत कदम।

drlogistics.ankur@gmail.com

हरियाणा सरकार की अनुशंसा पर दलित अधिकार कार्यकर्ता रजत कल्सन का फ़ेसबुक व एकाउंट फ्रीज, व्हाट्सएप व साधारण फ़ोन कॉल इंटरसेप्शन पर : रजत कल्सन

किसी का फेसबुक अकाउंट बंद करना तथा व्हाट्सएप व साधारण कॉल को इंटरसेप्ट करना गैरकानूनी व असंवैधानिक : रजत कल्सन

अगर कोई अनहोनी हुई तो हरियाणा सरकार व हरियाणा पुलिस जिम्मेदार : रजत कल्सन

हिसार/ 17 जून

दलित अधिकार कार्यकर्ता व अधिवक्ता रजत कल्सन ने हरियाणा सरकार व पुलिस पर उनका फेसबुक अकाउंट बंद करने तथा गैर कानूनी तथा असंवैधानिक तरीके से व्हाट्सएप तथा साधारण कॉल्स को सर्विलांस पर लेने के गंभीर आरोप लगाए हैं। कल्सन ने आरोप लगाया कि उन्हें फेसबुक के माध्यम से नोटिफिकेशन प्राप्त हुई है कि हरियाणा सरकार के लीगल एनफोर्समेंट डिपार्टमेंट की तरफ से फेसबुक के लीगल डिपार्टमेंट को अनुरोध भेजा गया है तथा हरियाणा सरकार के इस अनुरोध पर पहले तो फेसबुक ने भाटला प्रकरण से संबंधित पोस्ट को फेसबुक को दिखाना बंद कर दिया तथा उसके बाद पूरी फेसबुक प्रोफाइल को ही सोशल मीडिया से ब्लॉक कर दिया है। कल्सन ने आरोप लगाया की उनकी साधारण फोन के नंबरों को भी सरकार ने इंटरसेप्शन पर डाल दिया है तथा सरकार उनकी सभी निजी बातचीत को गैर कानूनी तरीके से सुन रही है।

कल्सन ने कहा कि उनके फेसबुक प्रोफाइल के माध्यम से वे हरियाणा में दलित अत्याचारों के मामलों को उठाने का काम कर रहे हैं तथा सरकार को यह बिल्कुल भी पसंद नहीं है। उन्होंने कहा कि खास तौर पर भाटला

सोशल बॉयकॉट प्रकरण के मामले को हुए पिछले कुछ दिनों से वह सोशल मीडिया पर प्रखरता से उठा रहे थे तथा इसमें हरियाणा सरकार तथा हांसी पुलिस की जानबूझकर की गई दलित विरोधी कार्रवाई को उजागर कर रहे थे। कल्सन ने कहा कि आज के समय में सोशल मीडिया हर नागरिक को अपनी अभिव्यक्ति तथा विचारों को सोशल मीडिया पर रखने का अवसर प्रदान करता है तथा यह अवसर संविधान के अनुच्छेद 19 के तहत एक मूल अधिकार है तथा सरकार ने इस मामले में अधिवक्ता रजत कल्सन की अपनी अभिव्यक्ति की आजादी के मूल अधिकार को छीनने का काम किया है जो कि बिल्कुल ही गैरकानूनी है।

कल्सन ने कहा कि हाल में ही उच्चतम न्यायालय द्वारा गठित जांच टीम के दौरे के आखिरी दिन भी होने भाटला सामाजिक बहिष्कार प्रकरण के आरोपियों द्वारा हांसी विश्राम गृह में उन्हें जिंदा जलाने की धमकी दी गई थी, इस बारे पुलिस में शिकायत भी दी गई थी, परंतु आज तक पुलिस ने इस मामले में कोई भी कार्रवाई नहीं की हैं।

उन्होंने कहा कि उन्हें लगातार जान से मारने की धमकियां प्राप्त हो रही है तथा उन्होंने कहा की सेंट्रल जेल से भी कई बार इनपुट प्राप्त हुए हैं कि वहां पर दलित अत्याचार के गंभीर मामलों में बंद कैदी व अंडर ट्रायल अपराधी उन्हें जान से मारने का प्लान बना रहे हैं लेकिन इसके बावजूद भी राज्य सरकार ने आज तक उनको सुरक्षा उपलब्ध भी नहीं कराई है अगर उनके साथ आने वाले समय में उन पर कोई जानलेवा हमला होता है या कोई अनहोनी होती है तो उसके लिए हरियाणा सरकार व हरियाणा पुलिस जिम्मेदार होंगे, क्योंकि यह भी उन्हें मरवाना चाहते हैं।

अधिवक्ता कल्सन ने कहा कि वह इस बारे में उच्चतम न्यायालय में एक याचिका दायर कर अपने इस मूल अधिकार को बहाल करने की मांग करेंगे तथा इस असंवैधानिक कार्रवाई करने वाले अधिकारियों के खिलाफ भी कार्यवाही की मांग करेंगे।

रजत कल्सन, दलित अधिकार कार्यकर्ता व अधिवक्ता

गोपालपुर बीच पर सामूहिक बलात्कार का मामला; 10 आरोपियों में 4 नाबालिग गिरफ्तार

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : गोपालपुर बीच पर एक युवती के साथ सामूहिक बलात्कार किया गया। सभी 10 आरोपी गिरफ्तार। सोमवार शाम को पुलिस ने पूछताछ के लिए 7 युवकों को हिरासत में लिया। गोपालपुर पुलिस ने 3 अन्य को उस समय गिरफ्तार किया जब वे राज्य से भागने की कोशिश कर रहे थे। आरोपियों का इलाज पूरा होने के बाद उन सभी पर कोर्ट में मुकदमा चलाया जाएगा।घटना रविवार शाम की है। युवती अपने पुरुष मित्र के साथ घूमने आई थी। वहां 10 युवकों ने उन्हें घेर लिया। पुरुष मित्र ने युवती के साथ मारपीट की और दुष्कर्म किया। युवती ने गोपालपुर थाने में शिकायत दर्ज कराई। पीड़िता की शिकायत के बाद पुलिस ने तत्काल जांच शुरू कर दी। कल 7 लोगों को गिरफ्तार किया गया था और आज गोपालपुर पुलिस ने भागने की कोशिश कर रहे 3 आरोपियों को गिरफ्तार किया। आरोपियों में प्रमोद नायक (23 वर्ष), बौराम दलाई (19 वर्ष), लक्ष्मण प्रधान (24 वर्ष), ओम प्रधान (19 वर्ष), दीपक तराई (19 वर्ष) और कुणाल प्रधान (24 वर्ष) शामिल हैं। चार अन्य नाबालिग अभी भी फरार हैं। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार युवती जिले के बाहर की

रहने वाली है। वह बरहामपुर के एक कॉलेज की अंतिम वर्ष की छात्रा है। वह और उसका पुरुष मित्र राज संक्रांति के दौरान गोपालपुर बीच घूमने आए थे। रात करीब 8 बजे वे बातचीत करते हुए पंथनिवास के पीछे बीच पर पहुंचे। उनका पीछा प्रमोद नायक और उसके 9 साथी कर रहे थे। उन्होंने वीडियो बनाकर उसके परिजनों को भेजकर उसके पुरुष मित्र और महिला मित्र को ब्लैकमेल किया और फोन-पे के माध्यम से कुछ पैसे भी ऐंठ लिए। इस पर युवकों से हाथापाई हुई। उन्होंने पुरुष मित्र की पिटाई कर दी। बाद में कुछ युवकों ने पुरुष मित्र को पकड़ लिया। तीनों युवक महिला मित्र को अंधेरे स्थान पर ले गए और उसके साथ दुष्कर्म किया। बाद में आरोपियों ने उसके साथ मारपीट की। रात 10 बजे पीड़िता और उसके पुरुष मित्र गोपालपुर थाने पहुंचे और घटना की सूचना दी। पुलिस ने मामला दर्ज कर पुरुष मित्र को अपने साथ ले लिया और आरोपियों की तलाश शुरू कर दी। पुरुष मित्र ने गोपालपुर जंक्शन ओवरब्रिज के नीचे दो बाइक पर सवार चारों युवकों को पहचान लिया। पुलिस की गाड़ी को देखकर उनमें से दो ने मारपीट की। अन्य दो को पुलिस ने हिरासत में ले लिया। उक्त दोनों युवकों को पूछताछ के लिए थाने ले जाने पर अन्य पांचों के हिंजिलीकिटू इलाके के होने की बात सामने आई। पुलिस हिंजिलीकिटू गई और पांचों युवकों को थाने ले गई। पीड़िता ने आरोपियों की पहचान कर ली है। तीनों ने पुलिस के समक्ष दुष्कर्म की बात कबूल कर ली है। गोपालपुर पुलिस ने इस घटना में शामिल तीन आरोपियों को उस समय गिरफ्तार कर लिया है, जब वे राज्य से भागने की कोशिश कर रहे थे। गैंगरेप मामले में शामिल सभी 10 आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया है। पोस्टमार्टम के बाद पीड़िता और उसके पुरुष मित्र दोनों के बयान दर्ज कर लिए गए हैं। आरोपियों को आज कोर्ट में पेश किया जाएगा।

एक अक्षम मुख्यमंत्री और विफल सरकार से विकास की उम्मीद करना व्यर्थ है : वरिष्ठ कांग्रेस नेता तारा प्रसाद बहिनीपति

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : राज्य में शासन व्यवस्था बिगड़ती जा रही है, वहीं मोहन सरकार झूठे विकास का ढोल पीट रही है। हर तरफ गड़गड़ाहट की आवाज सुनाई दे रही है, मानो यह सिर्फ झूठ का ढोल है। जिस तरह कांग्रेस ने देश को आजादी दिलाने के लिए लड़ाई लड़ी, उसी तरह कांग्रेस संविधान की रक्षा के लिए अपना संघर्ष जारी रखेगी। ओडिशा में कानून व्यवस्था की स्थिति भयावह है, स्वास्थ्य की स्थिति चिंताजनक है। कांग्रेस भवन में आयोजित एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में वरिष्ठ कांग्रेस नेता तारा प्रसाद बहिनीपति ने कहा कि महिलाओं के खिलाफ हिंसा जहां हद पार कर गई है, वहीं राज्य में अक्षम मुख्यमंत्री और भाजपा शासित विफल सरकार से विकास की उम्मीद करना बेकार है। कांग्रेस भवन में संविधान बचेगा तो देश बचेगा। जिला स्तरीय कार्यशालाएं आयोजित की गई हैं। श्री बहिनीपति ने कहा कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी और एआईसीसी अध्यक्ष श्री मल्लिकार्जुन खड़गे द्वारा संविधान की रक्षा के लिए दिए गए आह्वान को कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने राज्य के हर

जिले में संघर्ष बनाने का फैसला किया है। राज्य के छात्र सरकार के शासन की नंगीपन को साबित कर रहे हैं। राज्य में सत्ता में आने के बाद से भाजपा ने अपने किसी भी वादे को पूरा नहीं किया है। किसान हताशा में जी रहे हैं, क्योंकि वे अपना धान बाजार में नहीं बेच पा रहे हैं। कटाई और छंटाई के नाम पर किसानों का बाजार में शोषण किया जा रहा है। जाजपुर समेत तटीय जिलों में हैजा ने जहां भयावह स्थिति पैदा कर दी है, वहीं स्वास्थ्य विभाग लोगों को चिकित्सा सेवाएं मुहैया कराने में विफल रहा है। भुवनेश्वर में हैजा की आहट सुनाई देने लगी है। स्वास्थ्य विभाग द्वारा ठोस कदम नहीं उठाए जाने के कारण हैजा के कई मरीज अपनी जान गंवा चुके हैं। केंद्र की मोदी सरकार संविधान संशोधन के नाम पर इसे खत्म करने की कोशिश कर रही है। ओडिशा विधानसभा से कांग्रेस विधायकों का निलंबन संविधान का पूरी तरह उल्लंघन है। पार्टी नेता ने आरोप लगाया कि मोहन और मोदी सरकार को संविधान और संवैधानिक व्यवस्था में कोई दिलचस्पी नहीं है, जैसा कि उनकी कार्यशैली से पता चलता है। कांग्रेस ने संविधान, सम्मान और स्वाभिमान को बचाने और लोगों को संवैधानिक अन्याय के बीच आसान और सुंदर जीवन जीने का अवसर देने के लिए जो आंदोलन का आह्वान किया है, वह दिल्ली से गांवों तक फैलेगा। 11 वर्षों से एक के बाद एक जनांदोलन और संविधान विरोधी गतिविधियों को अंजाम देने वाली नरेंद्र मोदी सरकार ने सहनशीलता की सारी हदें पार कर दी हैं। पहलगाम में मारे गए चार आतंकवादियों को गिरफ्तार करने में सरकार विफल रही है। मोदी ने अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप के कहने पर युद्ध रोककर भारत के स्वाभिमान को मिट्टी में मिला दिया है। सभी विपक्षी दलों को उम्मीद थी कि वे सरकार का सहयोग करेंगे और पहलगाम हत्याकांड का मुंहतोड़ जवाब देंगे। लेकिन चूंकि उन्होंने बिना किसी को विश्वास में लिए ट्रंप की बातों पर युद्ध रोक दिया, इसलिए कांग्रेस को विश्वास है कि देश की जनता इस पर ठीक से विचार करने के बाद अपना मुंह खोलेगी।

ऑडिशा मे डायरिया से हैजा फैला है

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : जाजपुर में हैजा फैलने के बाद जिला प्रशासन और राज्य सरकार की चिंताएं बढ़ गई हैं। केंद्र और राज्य की टीमें जमीनी स्तर पर स्थिति पर नजर रख रही हैं। हालांकि, जमीनी स्तर पर स्थिति पर नजर रखने के बाद 14 सदस्यीय केंद्रीय टीम ने खुलासा किया है। प्रभावित क्षेत्रों का दौरा करने के बाद 14 सदस्यीय केंद्रीय टीम ने राज्य के स्वास्थ्य विभाग के साथ चर्चा की।पेयजल, खाद्य सुरक्षा और व्यक्तिगत स्वच्छता पर सलाह दी गई है। अब केंद्रीय टीम फिर से मैदान में जाएगी। यह स्पष्ट किया गया है कि जाजपुर में विब्रियो हैजा के कारण जाजपुर में पांच लोगों की मौत हो गई है, लेकिन अन्य जगहों से मौत की रिपोर्ट का इंतजार है। राज्य के 9 जिलों में डायरिया फैल चुका है। जाजपुर और उसके पड़ोसी जिले सबसे ज्यादा प्रभावित हुए हैं। अब लोगों को साफ पानी पीने और खुले में शौच न करने के लिए जागरूक किया जाएगा। फिलहाल जाजपुर में हैजा फैल रहा है।

डायरिया भी धीरे-धीरे अन्य जगहों पर फैल रहा है। और अगर अभी से रोकथाम के उपाय नहीं किए गए तो इसके आगे आने की संभावना है।

जाजपुर जिले से लेकर भद्रक, ढेंकानाल, केंद्रपाड़ा, भूबनेश्वर, क्योंझर और कटक समेत अन्य जिलों में डायरिया और हैजा फैल चुका है, जिससे 16 से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है। सैकड़ों लोग इसकी चपेट में हैं। डायरिया के इतने मरीज आ रहे हैं कि अस्पताल में बेड की कमी हो गई है। इस बीच, स्वास्थ्य विभाग ने पानी के नमूनों में हैजा के बैक्टीरिया की भी जांच की है।

भुवनेश्वर के कलिंगनगर समेत भुवनेश्वर शहर और उपनगरों में कुछ जगहों पर डायरिया देखा गया है। इसलिए एहतियात के तौर पर सख्त निरीक्षण किया गया है। बीएमसी के स्वास्थ्य अधिकारी डॉ दीपक कुमार बिशोई ने कहा, हम डायरिया पर कड़ी नजर रख रहे हैं। नियमित अंतराल पर होटल और रेस्तरां से खाद्य नमूनों की जांच की जा रही है। सफाई और अन्य पहलुओं पर भी गौर किया जा रहा है। बीएमसी के खाद्य सुरक्षा अधिकारी सत्यजीत पटेल ने कहा, कल 9 जगहों से पानी के नमूने एकत्र किए गए थे। आज 19 जगहों से पानी के नमूने एकत्र किए गए। कुल 28 जगहों से पानी के 28 नमूने एकत्र किए गए हैं और परीक्षण के लिए राज्य प्रयोगशाला में भेजे गए हैं। अस्वास्थ्यकर और बासी भोजन बेचने वाले पांच होटल और रेस्तरां पर जुर्माना लगाया गया है। 12,500 रुपये जुर्माने के रूप में वसूले गए हैं। श्री पटेल ने कहा कि यह निरीक्षण प्रक्रिया नियमित रूप से जारी रहेगी।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023